॥ विमल ज्ञान प्रकाश ॥

॥ श्री मद्वीतरागायनमः ॥

अथ चौबीसी पद

॥ दोहा ॥

कर्म कलंक निवारिने, थया सिद्ध महाराज ।
मन बचन काये करी, बदु तेने आज ।

१—श्रीआदिनाथजी का स्तवन

॥ ढाल ॥ उमादे भटियाणी ॥ ए देशी ॥

श्री आदीश्वर स्वामी हो । प्रणमू सिरनामी तुम भणी ॥ प्रभू अंतर जामी आप । मोपर म्हैर

करीजै हो मेटीजै चिन्ता मनतणी । म्हारा काटो पुरङ्कृत पाप ।। श्री आदीश्वर स्वामी हो।।टेर।।१।। आदि धरमकी कीधी हो । भर्तक्षेत्र सर्पणी काल मैं । प्रभु जुगला धरम निवार । पहिला नरवर १ मुनिवर हो २ । तिर्थङ्कर ३ जिनहूवा ४ केवली५। प्रभु तीरथ थाप्या चार ।। श्री० २ ।। मामरु दिव्या थारी हो । गज हौदे मुक्ति पधारिया । तुम जनम्या हो परमाण । पिता नाभ म्हाराजा हो । भव देव तणो कर नर थया । प्रभू पाम्या पद निरवाण ।। श्री० ३ ।। भरतादिक सो नंदन हो । वे पुत्री ब्राह्मी सुंदरी ।। प्रभू ए थारा अंग जात । सगला केवल पाया हो । समायो अविचल जोग में । केइ त्रिभुवन में विख्यात ।। श्री० ४ ।। इत्यादिक वहू तारचा हो । जिन कुल में प्रभू तुम ऊपना । केइ आगम में अधिकार । और असंख्या तारया हो । ऊधारय्या सेवक आपरा। प्रभू सरणा हो आधार ।।श्री०।।५।।अशरण शरण कहीजे हो ।

प्रभू विरद बिचारो सायबा। केइ अहो गरीब निवाज। शरण तुम्हारी आयो हो। हूँ चाकर निज चरना तणो। म्हारी सुणिये अरज अवाज ।। श्री० ६ ।। तू करुणा कर ठाकुर हो। प्रभु धरम दिवाकर जग गुरू। केइ भव दुषदुकृत टाल। विनयचंदने आपो हो। प्रभु निजगुण संपतसास्वती प्रभू दीनानाथदयाल ।। श्री० ७।। इति ।।

—✠✠—

२-श्रीअजितनाथजीका स्तवन

।। ढाल कुविसन मारग माथे रे धिग ।। ए दशी ।।

श्री जिन अजित नमौ जयकारी। तुम देवनको देवजी। जय शत्रु राजाने विजाया राणी कौ। आतम जात तुमेवजी। श्री जिन अजित नमौ जयकारी ।। टेर ।। १ ।। दूजा देव अनेरा जगमें, ते मुझ दाय न आवेजी ।। तह मन तह चित्त हमनै एक, तुहीज अधिक सुहावैजी ।। श्री० २ ।। सेव्या देव घणा भव २ में। तो पिण गरज न

सारी जी ।। अवकै श्री जिनराज मिल्यौ तूं । पूरण पर उपकारी जी ।। श्री० ३ ।। त्रिभुवनमें जस उज्वल तेरौ, फैल रह्यो जग जाने जी ।। वंदनीक पूजनीक सकल लोकको । आगम एम बखानें जी ।। श्री० ४ ।। तू जग जीवन अंतर-जामी । प्राण आधार पियारो जी ।। सब विधिला-यक संत सहायक । भगत वछल वृध थारो जी ।। श्री० ।। ५ ।। अष्ट सिद्धि नव निद्धिको दाता । तो सम अवर न कोई जी ।। बधै तेज सेवकको दिन दिन जेथ तेथ जिम होई जी ।। श्री० ६ ।। अनत न्यान दर्शण संपति ले ईश भयो अविकारी जी ।। अविचल भक्ति विनयचंद कूं देवो । तौ जाणू रिझवारीजी ।। श्री० ।। ७ ।। इति ।।

—⟡⟡—

३—श्रीसम्भवनाथजीका स्तवन

।। राग ।। आज म्हारा पारसजी नै चालो वदन जइए ।। ए देशी ।।

आज म्हारा संभव जिनके । हित चितसूं

गुणगास्यां । मधुर २ स्वर राग अलापी । गहरे शब्द गुंजास्यां राज ।। आज म्हारा संभव जिनके हित चितसूं गुण गास्यां ।। आ० १ ।। नृप जितारथ सेन्या राणी । तासुत सेवकथास्यां ।।नवधा भक्त भावसौ करने । प्रेम मगन हुई जास्यां राज ।। आ० २ ।। मन बच कायलाय प्रभू सेती । निसदिन स्वास उसास्यां ।। संभव जिनकी मोहनी मूरति । हिये निरन्तर ध्यास्यां राज ।। आ० ३ ।। दीन दयालदीन बंधव कै । खाना जाद कहास्यां ।। तनधन प्रान समरपो प्रभूको । इन पर वेग रिझास्यां राज ।। आ० ४।। अष्ट कर्म दल अति जोरावर ते जीतया सुख पास्यां ।। जालम मोहमार कै जगसे । साहस करी भगास्यां राज ।। आ० ५ ।। ऊवट पंथ तजी दुरगतिको । शुभगति पंथ समास्यां ।। आगम अरथ तणो अनुसारे । अनुभव दशा अभ्यास्यां राज ।। आ० ६ ।। काम क्रोध मद लोभ कपट तजि । निज गुणसूं लवलास्यां ।। विनैचंद

संभव जिन तूठौ । आवा गवन मिटास्यां राज ।। आ० ७ ।। इति ।।

४-श्रीअभिनन्दन स्वामीजी का स्तवन

।। ढाल ।। आदर जोव क्षिम्या गुण आदर ।। ए देशी ।।

श्री अभिनंदन, दुख निकन्दन, बन्दन पूजन योगजी ।। श्री० १ ।। संबर राय सिधारथ राणी जेहनों आतम जात जी । प्रान पियारो साहिब सांचौ । तुही जौ माताने तातजी ।। श्री० २ ।। कैइयक सेव करै शङ्करकी । कैइयक भजै मुरारी जी ।। गणपति सूर्य उमा कैई सुमरै । हूँ सुमरू अविकारजी ।। श्री० ३।। दैव कृपा सूं पामें लक्ष्मी। सौ इन भवको सुक्ख जी ।। तो तूठां इन भव पर भवमे । कदी न व्यापै दु.ख जी ।। श्री० ४ ।। जदपी इन्द्र नरिन्द्र निवाजें । तदपी करत निहाल जी । तूं पुजनीक नरिन्द्र इन्द्रको । दीन दयाल कृपाल जी ।। श्री० ५ ।। जब लग आवागमन न

छूटूं । तब लग करूं अरदासजी ।। सम्पति सहित ज्ञान समकित गुण । पाऊं दृढ़ विसवासजी ।। श्री० ६ ।। अधम-उधारन वृद्ध तिहारो । जोवो इण संसारजी लाज विनयचन्दकी अब तोनें, भव निधि पार उतारजी ।। श्री० ७ ।। इति ।।

५-श्रीसुमतिनाथजीका स्तवन

।। ढाल ।। श्रीसीतल जिन साहिबाजी ।। ए देशी ।।

सुमति जिणेसर साहिबाजी । मेगरथ नृप सौ नंद ।। सुमंगला माता तणो जी । तनय सदा सुखकंद । प्रभू त्रिभुवन तिलोजी ।। १ ।। सुमति सुमति दातार ।। महा महि मानिलोजी ।। प्रणमूं वार हजार ।। प्रभू त्रिभुवन तिलो जी ।। २ ।। मधुकर जौ मन मोहियोजी ।। मालती कुसुम सुवास ।। त्यूं मुजमन मोह्यो सही ।। जिन महिमा कहि न जाय ।। प्रभु० ३ ।। ज्यूं पङ्कज सूरज मुखी जी । विकसै सूर्य्य प्रकाश । त्यूं मुज मनड़ो गह

गहै ।। कवि जिन चरित हुलास ।। प्रभु० ४ । पपइयोपीउ पीउ करेजी ।। जान वर्षाऋतु जेह । त्यूं मोमन निस दिन रहै ।। जिन सुमरन सूं नेह ।। प्रभु० ५ ।। काम भोगनी लालसा जी ।। थिरता न धरे मन्न ।। पिण तुम भजन प्रतापथी ।। दाझे दुरमति बन्न ।। प्रभु०६ ।। भवनिधि पार उतारिये जी ।। भगत बच्छल भगवान ।। बिनैचंदकी वीनती मानो कृपानिधान ।। प्रभु० ७ ।। इति ।।

९-श्रीपद्मप्रभु स्वामीजीका स्तवन

।। ढाल ।। स्याम कैसे गजका फन्द छूडायो ।। ए देशी ।।

पदम प्रभु पावन नाम तिहारो । प्रभू पतित उद्धारन हारो ।। टेर ।। जदपि धीमर भील कसाई। अति पापिष्ठ जमारो । तदपि जीव हिंसा तज प्रभू भज ।। पावै भवदधि पारो ।। पदम० १ ।' गौ ब्राह्मण प्रमदा बालककी ।। मोटी हित्याच्यारो ।। तेह नो करण हार प्रभू भजन ।। होत हित्यासूं

न्यारी ।। पदम० २ ।। वेश्या चुगल चंडाल जुवारी।। चोर महा भटसारो । जो इत्यादि भजै प्रभू तोने।। तो निवृतें संसारो ।। पदम० ३ ।। पाप परालको पुञ्ज बन्यौ अति ।। मानो मेरू अकारो ।। ते तुम नाम हुताशन सेती ।' सहज्या प्रजलत सारो ।। पदम० ४ ।। परम धर्मको मरम महारस ।। सो तुम नाम उचारो या सम मंत्र नहीं कोई दूजो । त्रिभुवन मोहनगारो ।। पदम० ।।५।। तो सुमरण विन इण कलयुगमें । अवरन को आधारो।। में बलि जाऊँ तो सुमरन पर।। दिन२ प्रीत बधारो ।। पदम० ६ ।। कुसमा राणीको अंग जात नूं ।। श्रीधर राय कुमारो ।। बिनैचन्द कहे नाथ निरञ्जन । जीवन प्रान हमारो । पदम०।।७।। इति ।।

७-श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु का स्तवन

॥ ढाल ॥ प्रभुजी दीनदयाल सेवक सरण आयो ॥ ए देशी ॥

श्री जिनराज सुपास । पुरो आस हमारी॥टेर॥
प्रातष्ट सेन नरेश्वर को सुत । पृथवी तुम महतारी
सगुण सनेही साहिब सांचौ। सेवकने सुखकारी
॥श्रीजिन० । १॥ धर्म काज धन मुक्त इत्यादिक ।
मन वाँछित सुखपूरो ॥ बार बार मुझ बिनती
येही ॥ भव २ चिन्ता चूरो ॥श्रीजिन०॥२॥ जगत्
शिरोमणि भगति तिहारी कलप वृक्ष सम जाणू ॥
पूरण ब्रह्म प्रभू परमेश्वर । भव भव तुम्हें पिछाणू।
श्रीजिन० । ३॥ हूँ सेवक तूं साहिब मेरो ॥ पावन
पुरुष विज्ञानी ॥ जनम २ जित तिथ जाऊँ तो ।
पाली प्रीति पुरानी ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ तारण
तरण अरु असरण सरणको । बिरद इसो तुम
सोहे ॥ तो सम दीनदयाल जगतमें ॥ इन्द्र
नरिन्द्र नको है ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ सम्भू रमण
बड़ो समुद्रोमें ॥ सेल सुमेर विराजै ॥ तू ठाकुर

त्रिभुवन में मोटो ॥ भगत किया दुख भाजे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ अगम अगोचर तू अविनाशी अलप अखंड अरूपी ॥ चाहत दरस बिनैचन्द तेरौ । सत चित आनन्द स्वरूपी ॥श्रीजिन०॥७॥

॥ इति ॥

—❂❂—

८-श्रीचन्द्र प्रभुजीका स्तवन

॥ ढाल चौकनी देशी ॥

मुझ म्हेर करो ॥ चन्द प्रभूजग जीवन अन्तरजामी ॥ भव दुःख हरो ॥ सुणिये अरज हमारी त्रिभुवन स्वामी ॥ टेर ॥ जय जय जगत् शिरोमणी । हूँ सेवकने तूं धणी ॥ अब तौसूं गाढ़ी बणी ॥ प्रभू आशा पूरो हमतणी ॥ मुझ० ॥ १ ॥ चन्द्रपुरी नगरी हती ॥ महासैन नामा नरपति ॥ तसु राणी श्रीलषमा सती ॥ तसु नन्दन तूं चढ़ती रती ॥ मुझ०॥२॥ तूं सरवज्ञ महाज्ञाता ॥ आतम अनुभवको दाता ॥ तो तूठां लहिये सुखसाता ॥

धन २ जे जगमें तुम ध्याता ॥ मुझ० ॥ ३ ॥ सिव सुख प्रार्थना करसूं । उज्वल ध्यान हिये धर सूं ॥ रसना तुम महिमा करसूं ॥ प्रभू इम भवसागरसे तिरसूं ॥ मुझ० ॥ ४ ॥ चन्द चकोरनके मनमें ॥ गाज अवाज होवे घनमें ॥ पिय अभिलाषा ज्यों त्रियतनमें ॥ त्यों बसियो ते मो चित मनमें ॥ मुझ० ॥ ५ ॥ जो सू नजर साहिब तेरी ॥ तो मानो विनती मेरी काटो भरम करम बेरी ॥ प्रभु पुनरपि नहिं परूं भव फेरो ॥ मुझ० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान दसा जागी ॥ प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी । अन्य देव भ्रमना भागी ॥ बिनैचन्द तिहारो अनुरागी ॥ मुझ ७ ॥ इति ॥

—✕✕—

९-श्रीसुविधनाथजीका स्तवन

॥ राग ॥ बुढापो वेरी आवियो हो ॥ एदेशी ॥

श्रीसुविध जिणेसर वंदिये हो ॥ टेर ॥ काकंदो नगरी भली हो । श्री सुग्रीव नृपाल । रामा तसु

पट रागनी हो॥ तस सुत परम कृपाल॥श्रीसु०॥१॥ त्यागी प्रभुता राजनो हो। लीधो संजम भार। निज आतम अनुभाव थी हो॥ पाम्या प्रभु पद अविकारी॥ श्री०॥२॥ अष्ट कर्म नोराजवी हो। मोह प्रथम क्षय कीना॥ सुध समकित चारित्रनो हो। परम क्षायक गुणलीन॥श्री०॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी दर्शणावरणी हो अन्तरायके अन्त॥ ज्ञान दरशण बल ये त्रिहूँ हो प्रगटय्या अनन्ता अनन्त॥ श्री०॥ ४॥ अवा वाह सुख पामिया हो। वेदनी करम क्षपाय। अवगाहण अटल लही हो। आयु क्षै करसैं श्री जिनराय॥ श्री०॥ ५॥ नाम करम नौ क्षै करो हो। अमूर्तिक कहाय। अगुरु लघुपण अनुभव्यौ हो। गोत्र करम मुकाय॥श्री०॥ ६॥ आठ गुणा कर ओलख्या हो। जात रूप भगवंत। विनैचन्दके उरबसौ हो। अह निस प्रभु पुष्पदंत॥ ‍ ०७॥ इति॥

—※※—

१०-श्रीशीतलनाथजीको स्तुति

॥ ढाल ॥ जिह्वारी देशी ॥

जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥ टेर ॥

श्री दृढ़रथ नृपतो पिता । नंदा थारी माय ॥ रोम रोम प्रभू मो भणी सीतल नाम सुहाय ॥ जय ॥ १ ॥ करुणा निध करतार ॥ सेव्वां सुर तरु जेहवो ॥ बांछित सुख दातार ॥ जय० ॥ २ ॥ प्राण पिंयारो तू प्रभू पति बरता पति जैम ॥ लगन निरंतर लग रही ॥ दिन दिन अधिको प्रेम ॥ जय० ३ ॥ सीतल चन्दननी परें जपता निस दिन जाप ॥ विषै कषाय ना ऊपनै मेटौ भव दुख ताप ॥ जय० ४ ॥ आरत रुद्र प्रणाम थी उपजै चिन्ता अनेक । ते दुख काटो मानसो । आपौ अचल विवेक ॥ जय० ॥५॥ रोगादिक क्षुधा त्रिषा । सब शस्त्र अस्त्र प्रहार मकल सरीरी दुख हरौ ॥ दिल सूं विरुद विचार ॥जय०॥६॥ सुप्रसन होय शीतल प्रभु तू आभा विसराम ॥ विनै चन्द कहै मो भणी दीजे मुक्ति मुकाम ॥ जय ७ ॥ इति ॥

११-श्री श्रांसप्रभुकी स्तुति

॥ ढाल ॥ राग काफी देशी होरीकी ॥

श्रीश्रंस जिनन्द सुमररे ॥ टेर ॥

चेतन जाण कल्याण करनेको । आन मिल्यौ अवसररे ॥ शास्त्र प्रमान पिछान प्रभू गुन ॥ मन चंचल थिर कररे॥ श्री० ॥१॥ सास उसास बिलास भजनको ॥ दृढ़ विस्वास पकररे ॥ अजपा भ्यास प्रकाश हिये बिच ॥सो सुमरन जिनवररे॥श्री०॥२॥ कद्रप क्रोध लोभ मद माया ॥ यह सबही पर हररे ॥ सम्यक दृष्टि सहज सुख प्रगटै ॥ ज्ञान दशा अनुसररे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ झूंठ प्रपंच जीवन तन धन अरु ॥ सजन सनेही घररे ॥ छिनमें छोड़ चले पर भवकूं ॥ बंध सुभासुभ थिररे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मानस जनम पदारथ जिनकी ॥ आसा करत अमररे ॥ तें पूरव शुकृत कर पायो ॥ धरम मरम दिल भररे ॥ श्री० ॥५॥ विश्नसैन नृप विस्नाराणीको ॥ नंदन तून निसररे ॥ सहज

मिटै अज्ञान अविद्या । मुक्त पंथ पग धररे ॥श्री६॥ तू अविकार विचार आतम गुन ॥ जंजालमें न पररे ॥ पुद्गल चाय मिटाय बिनैचन्द ॥ तू जिनते न अवररे ॥ श्री० ॥७॥ इति ॥

१२-श्री बासुपूज्यजी की स्तुति

॥ ढाल ॥ फूलसी देह पलकमे पलटे ॥ एदेशी ॥

प्रणमू बास पूज्य जिन नायक ॥ सदा सहा-यक तू मेरो ॥ विषमी वाट घाट भय थानक ॥ परमासय सरना तेरा ॥प्रणमू० ॥ १ ॥ खल दल प्रबल दुष्ट अति दारुण । चौतरफ दिये घेरो ॥ तौ पिण कृपा तुम्हारी प्रभुजी ॥ अरियन भी प्रगटै चैरौ ॥ प्रणमू० २ ॥ विकट पहार उजार विचालै । चोर कुपात्र करै हेरौ ॥ तिण विरियां करिये तो सुमरण । कोई न छीन सकै डेरौ ॥ ॥ प्रणमू० ३ ॥ राजा बादशाह कोइ कोपै अति । तकरार करै छेरौ ॥ तदपी तू अनुकूल हूवै तो ॥ छिनमें छूट जाय केरौ ॥ प्रणमू ४ ॥ राक्षस भूत

पिसाच डांकिनी ।। संकनी भय न आवै नेरौ ।। दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागै ।। प्रभू तुम नाम भज्यां गहरौ।। प्रणमू० ५ ।। बिष्फोटक कुष्टादिक सङ्कट। रोग असाध्य मिटै देहरौ ।। विष प्यालो अमृत होय प्रगमें ।। जो.बिस्वास जिनन्द केरौ ।। प्रणमू ।। ६ ।। मात जया वसु नृपके नदन ।। तत्व जथा-रथ बुध प्रेरौ बे कर जोरि बिनेचन्द बिनवे ।। बेग मिटे मुझ भव फेरौ ।। प्रणमू० ७ ।। इति

१३-श्रीविमलनाथ स्वामीका स्तवन

।। ढाल ।। फूलसी देह पलकमे पलटे ।। एदेशी ।।

बिमल जिनेस्वर सेवियै ।। थारी बुध निर्मल हो जायरे ।। जीवा ।। विषय विकार बिसार नै ।। तूं मोहनी करम खपायरे ।। जीवा विमल जिनेश्वर सेवियै ।। १ ।। सूक्ष्म साधारण पणे । परतेक बनसपती मांयरे ।। जीवा ।। छेदन भेदन तेसही ।। मर मर ऊपज्यो तिण कायरे ।। जीवा ।। वि० ।। २ ।। काल अनन्त तिहागम्यो ।। तेहना दुख

आगम थी संभालरे ।। जीवा ।। पृथ्वी अप्प तेउ वायुमें ।। रह्यो असंख्या २ तो कालरे ।। जीवा ।। वि० ।।३।। एकेन्द्री सूं बेद्रीथयो ।। पुन्याई अनंती वृधरे ।। जीवा । सन्नीपचेंद्री लगें पुनबंध्या ।। अनन्ता २ प्रसिद्ध रे ।। जीवा ।। बि० ।। ४।। देव नरक तिरयंच में ।। अथवा माणस भवनीचरे ।। जीवा ।। दीन पणें दुख भोगव्या। इणपर चारों गति बीचरे ।। जीवा ।। बि० ।। ५ ।। अबके उत्तम कुल मिल्यो ।। भेट्या उत्तम गुरू साधुरे ।। जीवा ।। सुण जिन बचन सनेहसे ।। समकित व्रत शुद्ध आराधरे ।। जीवा ।। वि० ।। ६ ।। पृथ्वी पति कीरति भानु को ।। सामाराणी को कुमाररे ।। जीवा ।। विनैचन्द कहै ते प्रभु ।। सिर सेहरो हिवडारो हाररे ।। जीवा ।।बि०।।७।। इति।।१३।।

१४-श्रीअनतनाथजीका स्तवन

।। ढाल ।। वेगा पधारोरे म्हैल श्री ।। ए देशी ।।

अनंत जिनेश्वर नित नमो ।। अद्‌भुत जोत

अलेष ॥ ना कहिये ना देखिये ॥ जाके रूप न रेख ॥ अनंत ॥ १ ॥ सुक्षमथो सुक्षम प्रभू ॥ चिदानन्द चिद्रूप । पवन शब्द आकाशथी ॥ सुक्ष्यम ज्ञान सरूप ॥ अनन्त । २ ॥ सकल पदारथ चितवूं ॥ जेजे सुक्षम जोय । तिणथी तू सुक्षम महा ॥ तो सम अवर न कोय ॥ अनन्त ॥ ३ ॥ कवि पण्डित कह कह थके ॥ आगम अर्थ विचार । तौ पिण तुम अनुभव तिको ॥ न सके रसना उचार ॥ अनन्त ॥ ४ ॥ प्रभूने श्रीमुख सरस्वती । देवी आपौ आप ॥ कहि न सकै प्रभू तुम अस्तुती ॥ अलख अजपा जाप ॥ अनन्त ॥५॥ मन वुध वाणी तो विषै ॥ पहुँचे नहीं लगार । साक्षी लोकालोकनो ॥ निरविकल्प निराकार ॥ अनन्त ॥ ६ ॥ मातु जसा सिहरथ पिता ॥ तसु सुत अनन्त जिनन्द ॥ विनैचन्द अब ओलख्यो । साहिव सहजा नन्द ॥ अनन्त ॥ ७ ॥ इति ॥१४॥

१५-श्रीधमनाथजी का स्तवन

। ढाल ।। ग्राज नहै जोरे दीसै नाहलो ।। एदेशी ।।

धरम जिनेश्वर मुज हिवडै बसो। प्यारो प्राण समान ।। कबहूँ न बिसरूं हो चितारूं सही। सदा अखंडित ध्यान ।। धरम० ।। १ ।। ज्यूं पनिहारो कुम्भ न बीसरै ।। नट वो चरित्र निदान ।। पलक न विसरै हो पदमनि पियु भणी । चकवी न विसरेरे भान ।। धरम० ।। २ ।। ज्यूं लोभी मन धनको लालसा ।। भोगीके मन भोग ।। रोगी के मन माने औषधी ।। जोगीके मन जोग ।। धरम ।। ३ ।। इणपर लागी हो पूरण प्रीतडो ।। जाव जीव परियंत ।। भव भव चाहूँ हो न पड़े आंतरो भय भंजन भगवन्त ।। धरम० ।। ४ ।। काम क्रोध मद मच्छर लोभ थी ।। कपटी कुटिल कठोर ।। इत्यादिक अवगुण कर हूँ भर्यो ।। उदै कर्म केरे जोर ।। धरम० ।। ५ ।। तेज प्रताप तुमारो प्रगटै । मुज हिवड़ा मेरे आय ।। तौ हूँ आतम निज गुण

संभालनै अनन्त बली कहिवाय ।। धरम० ।। ६ ।। भानू नृप सुब्रत्ता जननी तणो ।। अंग जात अभि-राम । बिनैचंद नैरे बल्लभ तू प्रभू ।। सुध चेतन गुण धाम ।। धरम० ।। ७ ।। इति ।। १५ ।।

१६-श्री शांतिनाथ स्वामी का स्तवन

।। ढाल ।। प्रभूजी पधारो हो नगरी हमतणी ।। एदेशी ।।

शाँति जिनेश्वर साहिब सोलमों शान्तिदायक तुम नाम हो ।। सोभागी ।। तन मन बचन सुध कर ध्यावता । पूरै सघली आस हो ।। सोभागी ।। १ ।। बिश्व सेन नृप अचला पटरानी ।। तसु सुत कुल सिणगार हो ।। सोभागी ।। जन मति शांति करी निज देसमें ।। मरी मार निवार हो ।। सोभागी ।। २ ।। विघन न व्यापे तुम सुमरन कियां । नासै दारिद्र दुःख हो ।। सोभागी ।। अष्ट सिद्धि नव निद्धि मिलै । प्रगटै सवला सुख हो ।। सोभागी ।। ३ ।। जेहने सहायक शान्ति जिनंद तूं ।। तेहनै कमीय न काय हो

सोभागी ॥ जे जे कारज मनमें बढ़ै ॥ ते ते सफला थाय हो ॥ सोभागी ॥ ४ ॥ दूर दिशावर देश प्रदेश में ॥ भटके भोला लोक हो ॥ सोभागी ॥ सानिधकारी सुमरन आपरों सहजे मिटै सहू सोक हो ॥ सोभागी ॥ ५ ॥ आगम साख सुणी छै एवही ॥ जो जिण सेवक होय हो ॥ सोभागी ॥ तेहनी आसा पूरै देवता ॥ चौंसठ इन्द्रादिक सोय हो । सोभागी ॥ ६ ॥ भव भव अन्तरयामी तुम प्रभू ॥ हमने छै आधार हो ॥ सोभागी ॥ बेकर जोड़ बिनैचन्द बिनवै । आपौ सुख श्रीकार हो । सोभागी ॥ शान्ति ॥ ७ ॥ इति ॥ १६ ॥

१७-श्री कुंथुनाथ स्वामी का स्तवन

॥ ढाल ॥ रेखता ॥

कुंथ जिणराज तूं ऐसो ॥ नहीं कोई देवतूं जैसो ॥ त्रिलोकी नाथ तूं कहिये ॥ हमारी बांह दृढ गहिये ॥ कुंथ०॥१॥ भवोदधि डूबतो तारो॥ कृपानिधि आसरो थारो ॥ भरोसा आपका भारी

बिचारो बिरध उपकारी ॥ कुंथ० ॥ २ ॥ उमाहूँ मिलनको तोसे ॥ न राखो आतरो मोसे ॥ जैसी सिद्ध अवस्था तेरो ॥ तैसी चेतन्यता मेरी ॥ कुंथ० ॥ ३ । करस भ्रम जालको दपट्यो । विषै सुख ममत में लपट्यो ॥ भ्रम्यौ हूँ चिहूँ गति माहीं ॥ उदैकर्म भ्रमकी छांहीं ॥ कुंथ० ॥ ४ ॥ उदैको जोर है जौनूं न छूटै विषै सुख तौनूं ॥ कृपा गुरुदेवकी पाई ॥ निजातम भावना आई ॥ कुंथ० ॥ ५ ॥ अजब अनुभूति उरजागी ॥ सुरति निज सूर्यमें लागो ॥ तुम्हें हम एक तो जाणू । द्वितिय भ्रम कल्पना मानूं ॥ कुंथ० ॥ ६ ॥ श्री देवी सूर-नृप नन्दा ॥ अहो सरवज्ञ सुख कन्दा ॥ बिनैचंद लीन तुम गुनमें । न व्यापै अविद्या उनमैं ॥ कुंथ० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

१८-श्रीअरहन्नाथ स्वामीजीका स्तवन

॥ ढाल अलगी गिरानी ॥ एदेशी ॥

अरह नाथ अविनासी शिव सुख लीधौ ॥

बिमल विज्ञान बिलासी ।। साहिब सीधौ० ।। १ ।। तू चेतन भज अरह नाथने ते प्रभु त्रिभुवन राय ।। तात श्रीधर सुदर्शण देवी माता ।। तेहनों पुत्र कहाय ।। साहिब सीधौ० ।। २ ।। क्रोड़ जतः करता नहीं पामें ।। एहवो मोटी माम ।। तैं जिन भक्ति करो नै लहिये ।। मुक्ति अमोलक ठाम ।। साहिब० ।। ३ । समकित सहित किया जिन भगती ।। ज्ञान दरसन चारित्र ।। तप वीरज उपयोग तिहारा प्रगटे परम पवित्र । साहिब० ।।४।। सो उपयोगी सरूप चिदानन्द जिनवरने तू एक । द्वैत अविद्या विभ्रम मेटौ । बाध शुद्ध विवेक ।। साहिव० ।५।। अलख अरूप अखण्डित अविचल अगम अगोचर आपे ।। निर बिकलप निकलंक निरंजन ।। अदभुद जोति अमायै ।। साहिव ।। ६ ।। ओलख अनुभव अमृत याकौ ।। प्रेम सहित नित पीजै । हूँ तू छोड़ विनैचन्द अ तस ।। आतम राम रमीजै ।। साहिब सीधौ ।। ७।। इति ।। १८ ।।

१९-श्रीमल्लिनाथ स्वामीजीको स्तवन

॥ ढाल लावणी ॥

मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी ॥ कुम्भ पिता पर भावती मइया तिनको कूंवारी ॥ टेर ॥ मानो कूंख कंदरा मांही उपना अवतारी । मालती कुसुम मालनी वांछा जननी उरधारी ॥म०॥ १॥ तिणथी नाम मल्लि जिन थाप्यो ॥ त्रिभुवन प्रिय कारी ॥ अद्भुत चरित तुम्हारा प्रभुजी वेद धर्यो नारी ॥ म० ॥ २ ॥ परणन काज जान सज आए। भूपति छः भारी । मिहिला पुरी घेरि चौतरफा सेना विस्तारी ॥ म० ॥ ३ ॥राजा कुम्भ प्रकाशी तुम पें । वीतक विधिसारी छहुं नृप जान सजी तो परनन आया अहंकारी ॥ म० ॥ ४ ॥ श्री मुख धीरप दीधि पिताने । राख्यौ हुशियारी ॥ पुतली एक रची निज आकृत । थोथी ढकवारी ॥ म० ॥ ॥ ५ ॥ भोजन सरस भरी सा पुतली ॥ श्रीजिण सिणगारी ॥ भूपति छहूं बुलाया मन्दिर ॥ बिच

बहु दिना पारो ॥ म० ॥ ६ ॥ पुतली देख छहूँ नृप मोह्या। अवसर बिचारो ॥ ढाक उघार लीनो पुतलो को ॥ भबक्यो अतिभारो ॥ म० ॥ ७ ॥ दुसह दुर्गन्ध सही न जावे, ऊट्या नृपहारो ॥ तब उप-देश दियो श्रीमुख सूं, मोह दसा टारी ॥ म० ॥ ८ ॥ महा असार उदारक देहो। पुतली इब प्यारो ॥ संग किया पटकै भव दुःखमें, नारि नरक वारी ॥ म० ॥९॥ नृप छहूँ प्रति बोधे मुनि होय॥ सिद्धगति सभारी ॥ बिनैचन्द चाहत भव भवमें ॥ भक्ति प्रभू थारी ॥ म० ॥ १० ॥ इति ॥ १९ ॥

२०-श्रीमुनिसुब्रतस्वामीका स्तवन

॥ ढाल ॥ चेतरे चेतरे मानवी ॥ एदेशी ॥

श्रीमुनिसुव्रत साहिबा। दीन दयाल देवां तणा देव कै॥ तारण तरण प्रभू तो भणी। उज्वल चित्त सुमरूं नितमेव कै॥ श्री मुनि सूव्रत साहिबा ॥ १ ॥ हूँ अपराधी अनादिको॥ जनम जनम गुना किया भरपूर कै॥ लूटिया प्राण छः

कायना ॥ सेविया पाप अठार करूंरकै । श्रीमुनि० ॥ २ ॥ पूरब अशुभ करतब्यता ॥ ते हमना प्रभू तुम न बिचारकै॥ अधम उधारण बिरुद छे ॥ शरण आयो अब कीजिये सारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ३ ॥ किंचित पुन्य परभावथी ॥ इण भव ओलिख्यो श्रीजिन धर्मकै ॥ निवृतूं नरक निगोद थी ॥ एहवी अनुग्रह करो परब्रह्मकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ४ ॥ साधुपणो नहिं संग्रह्यो ॥ श्रावक व्रत न कीया अ गीकारकै। आदरया तो न अराधिया। तेहथी रुलियो अनन्त संसारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ५ ॥ अब समकित व्रत आदरय्यो॥ तदपि अराधक उतरूं भव पारकै॥ जनम जीतब सफलो हुवै। इणपर बिनवूं वार हजारकै ॥ श्रीमुनि० ॥ ६ ॥ सुमति नराधिप तुम पिता ॥ धन धन श्री पदमावती मायकै ॥ तसु सुत त्रिभुवन तिलक तूं । वदत बिनैचन्द सीस नवाय कै ॥ श्रीमुनि० ॥ ७ ॥

—※※—

२१-श्रीनेमनाथजीका स्तवन

।। ढाल ।। सुणियोरे बाबा कुटिल मझारी तोता ले गई ।।

सुज्ञानी जीवा भजले जिन इक बीसमों ।।टेर।।
बिजय सैन नृप बिप्राराणी । नेमी नाथ जिन जायो । चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्सव । सुर नर आनंद पायोरे ।। सुज्ञानी० १ ।। भजन किया भव भवना दुष्कृत । दुक्ख दुभाग मिट जावे ।। काम क्रोध मद मच्छर त्रिसना । दुश्मन निकट न आवैरे ।। सु० ।। २ ।। जीबादिक नव तत्व हिये धर । ज्ञेय हेय समझीजै ।। तीजी उपादेय ओलखने । समकित निरमल कीजैरे ।। सुज्ञा० ।। ३ ।। जीव अजीव बंध एतीनूं । ज्ञेय जथारथ जानो ।। पुन्य पाप आश्रव पर हरिये । हेय पदारथ मानोरे ।। सुज्ञानी० ।। ४ ।। संवर मोक्ष निर्जरा निज गुण । उपादेय आदरिये ।। कारण कारज समझ भलो विधि । भिन भिन निरणो करियेरे ।। सुज्ञानी० ।। ५ ।। कारण ज्ञान सरूपी

जियको । कारज क्रिया पसारो ।। दोनूं की साखी सुध अनुभव ।। आपो खोज निहारो रे ।। सुज्ञानी० ।। ६ ।। तू सो प्रभू प्रभू सो तू है । द्वैत कल्पना मेटो ।। शुध चेतन आनंद बिनैचन्द । परमातम पद भेटोरे सुज्ञानी० ।। ७ ।।

२२-श्रीअरिष्टनेम प्रभुका स्तवन

।। ढाल ।। नगरी खूब बणी छै जो ।। एदेशी ।।

श्री जिनमोहन गारो छै । जीवन प्राण हमारा छै ।। टेर ।। समुद्र बिजै सुत श्री नेमीश्वर । जादव कुलको टीको ।। रतन कुक्ष धारनी सेवा देवी ।। जेहनो नंदन नीको ।। श्री० ।। १ ।। सुन पुकार पशुकी करुणा कर ।। जानिजगत सुख फीको ।। नव भव नेह तज्यो जोबन में ।। उग्रसैन नृप धीको ।। श्री० ।। २ ।। सहस्र पुरुष सो संजम लीधो । प्रभुजी पर उपकारी ।। धन धन नेम राजुलकी जोड़ी महा बालब्रह्मचारी ।। श्री० ।। ३ ।। बोधानंद सरुपानंद में ।। चित एकाग्र लगायो ।।

आतम अनुभव दशा अभ्यासी । शुक्ल ध्यान निज ध्यायो ।। श्री० ।। ४ ।। पूर्णानंद केवली प्रगटे । परमानंद पद पायो ।। अष्टकर्म छेदी अलवेसर । परमानंद समायो ।। श्री० ।। ५ ।। नित्यानंद निराश्रय निश्चल । निर्विकार निर्वाणी ।। निरांतक निरलेप निरामय । निराकार वरणानी ।। श्री० ।। ६ ।। एहवोज्ञान समाधि संयुक्तो । श्री नेमीश्वर स्वामी ।। पूरण कृपा बिनैचंद प्रभूकी । अबते ओलखपामी ।। श्री० ।। ७ ।। इति ।।

२३-श्रीपार्श्वनाथजीका स्तवन

।। ढाल ।। जीवरे सील तणो कर सग ।। ए देशी ।।

जीवरे तू पार्श्व जिनेश्वर बन्द ।। टेर ।। अस्व सैन नृप कुल तिलोरे ।। वामा दे नौनंद ।। चिंतामणि चित्तमें वसै तो दूर टले दुख द्वन्द ।। जीवरे० ।। १ ।। जड़ चेतन मिश्रित पणेरे ।। करम शुभाशुभथाय ।। ते विभ्रम जग कलपनारे ।। आतम अनुभव न्याय ।। जीवरे० ।। २ ।। वैहमी भय माने

जथारे । सूने घर बैताल ।। त्यों मूरख आतम विषैरे । माड्यो जग भ्रम जाल ।। जीवरे० ।। ३ ।। सरप अंधारे रासडीरे । रूपो सीप मझार । मृग तृषना अम्बुज मृषारे । त्यों आतम संसार ।। जी० ।। ४ ।। अग्नि विषै ज्यों मणि नहीं रे । सींग शशै सिर नांहि । कुसुम न लागै व्योम मेरे । ज्यूं जग आतम मांहि ।। जी० ।। ५ ।। अमर अजौनी आतमारे । है निश्चै तिहुं काल ।। बिनैचंद अनुभव जागोरे । तू निज रूप सम्हाल ।। जीवरे० ।। ६ ।। इति ।। २३ ।।

२४-श्रीमहावीर प्रभुका स्तवन

।। ढाल ।। श्र नवकार जपो मन रगे ।। एदेशी ।।

धन २ जनक सिद्धारथ राजा । धन त्रसलादे मातरे प्राणी । ज्यां सुत जायो गोद खिलायो । वर्धमान विख्यातरे प्राणी । श्री महावीर नमो वरनाणी । शासन जेहनो जाणरे ।। प्रा० १ ।। प्रवचन सार विचार हियामें । कीजै अरथ प्रमा–

आतम अनुभव दशा अभ्यासी । शुक्ल ध्यान निज ध्यायो ।। श्री० ।। ४ ।। पूर्णानंद केवली प्रगटे । परमानंद पद पायो ।। अष्टकर्म छेदी अलवेसर । परमानंद समायो ।। श्री० ।। ५ ।। नित्यानंद निराश्रय निश्चल । निर्विकार निर्वाणी ।। निरांतक निरलेप निरामय । निराकार वरणानी ।। श्री० ।। ६ ।। एहवोज्ञान समाधि संयुक्तो । श्री नेमीश्वर स्वामी ।। पूरण कृपा बिनैचंद प्रभूकी । अबते ओलखपामी ।। श्री० ।। ७ ।। इति ।।

२३-श्रीपार्श्वनाथजीका स्तवन

।। ढाल ।। जीवरे सील तणो कर सग ।। ए देशी ।।

जीवरे तू पार्श्व जिनेश्वर वन्द ।। टेर ।। अस्व सैन नृप कुल तिलोरे ।। वामा दे नौनंद ।। चिंतामणि चित्तमें वसै तो दूर टले दुख द्वन्द ।। जीवरे० ।। १ ।। जड़ चेतन मिश्रित पणेरे ।। करम शुभाशुभथाय ।। ते विभ्रम जग कलपनारे ।। आतम अनुभव न्याय ।। जीवरे० ।। २ ।। वेहमी भय माने

जथारे । सूने घर बैताल ।। त्यों मूरख आतम विषैरे । माड़्यो जग भ्रम जाल ।। जीवरे० ।। ३ ।। सरप अंधारं रासडीरे । रूपो सीप मझार । मृग तृषना अम्बुज मृषारे । त्यों आतम संसार ।। जी० ।। ४ ।। अग्नि विषै ज्यों मणि नहीं रे । सींग शशै सिर नाहि । कुसुम न लागै व्योम मेरे । ज्यूं जग आतम मांहि ।। जी० ।। ५ ।। अमर अजौनी आतमारे । है निश्चै तिहुं काल ।। बिनैचंद अनुभव जागोरे । तू निज रूप सम्हाल ।। जीवरे० ।। ६ ।। इति ।। २३ ।।

२४-श्रीमहावीर प्रभुका स्तवन

।। ढाल ।। श्र नवकार जपो मन रगे ।। एदेशी ।।

धन २ जनक सिद्धारथ राजा । धन त्रसलादे मातरे प्राणी । ज्यां सुत जायो गोद खिलायो । बर्धमान विख्यातरे प्राणी । श्री महावीर नमो वरनाणी । शासन जेहनो जाणरे ।। प्रा० १ ।। प्रवचन सार विचार हियामें । कीजै अरथ प्रमा-

णरै ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र बिनय आचार तपस्या । चार प्रकार समाधिरे ॥ प्रा०॥ ते करिये भव सागर तरिये । आतम भाव अराधिरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्यों कञ्चन तिहुँ काल कहीजै । भूषण नाम अनेकरे ॥ प्रा० ॥ त्यों जगजीव चराचर जोनी । है चेतन गुन एकरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ॥ ४ ॥ अपणो आप विषै थिर आतम सोहं हंस कहायरे ॥ प्रा० ॥ केवल ब्रह्म पदारथ परिचय ॥ पुद्गल भरम मिटायरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ शब्द रूप रस गंध न जामें, ना सपरस तप छाहीरे ॥ प्रा० ॥ तिमर उद्योत प्रभा कछु नाहीं । आतम अनुभव माहिरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुख दुख जीवन मरन अवस्था ॥ ऐ दस प्राण संघातरे ॥ प्रा० ॥ इनथी भिन्न विनैचन्द रहिये ॥ ज्यों जलमें जलजातरे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ कलश ॥

चौबीस तीरथ नाम कीरति,
गावतांमन गह गहे ।
कुमट गोकुलचन्द नन्दन,
विनैचन्द इणपर कहैं ॥
उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
तत्व निज उरमें धरी ।
उगणीस सौ छै के छमच्छर,
चतुर्विशति स्तुति इम करी ॥

अथ स्तवन

धम्मो मंगल महिमा निलो, धर्म समो नहिं कोय । धर्म थकी नमें देवता, धर्मे शिव सुख होय ॥ ध० ॥ १ ॥ जीव दया नित पालिये, संयम सतरे प्रकार । बारा भेदे तप तपे, धर्म तणो ये सार ॥ ध० ॥ जिम तरुवरने फूलड़े, भ्रमरो रस

ले जाय । तिम सन्तोषे आतमा, फूलने पीड़ा न थाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ इण विध विचरे गोचरी, बहोरे सूजतो अहार । ऊंच नीच मध्यम कुलें, धन्य ते अणगार ॥ ध० ॥४॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, नहिं तृष्णा नहिं लोभ । लाधो भाडो दिये देहने, अण लाधा संतोष ॥ ध० ॥ ५ ॥ अध्ययन पहले दुम्म पुप्फिए, सखरा अर्थ विचार । पुण्य कलश शिष्य जेतसी, धर्मे जय जयकार ॥ ध०॥६॥

—✡✡—

अथ सोले जिन स्तवन लिख्यते

श्रीनवकार मन्त्रीजीरो ध्यानधरो ॥ एहीज देसो ॥ श्रीरिषव अजीत सम्भव स्वामी, वन्दु अभिनन्दन अन्तरजामी । रागद्वेषदोयखय करणा, वन्दु सोलेइ जिन सोवन वरणा ॥ वंदु०॥१॥सुमत नाथजीने सू पासो, प्रभु मुगत गया मेट्या गरभा-वासो । मेट दिया जनम ने मरणा ॥ वन्दु० ॥२॥ सीतल श्रीश्रंशजिन दोई, प्रभु चौदे राज राज

जोई । विमल मत निरमल करणा ।।वन्दु० ।। ३ ।। अनन्तनाथ अनन्त ज्ञानी, जासु मनडारी वात नहिं छानो ।। धर्म नाथजीको ध्यान हृदय धरणा ।। बन्दु० ।। ४ ।। सन्तनाथ साताकारो, कुंथुनाथ स्वामोरी जाउं बलिहारी । अरियनाथ आतम उद्धरणा ।।ब०।। ५ ।। महिमा घणी हो नमीनाथ तणी, महावीरजो हुवा सासणारा धणी ।। मे धरिया प्रभु-थारां चरणा ।। बन्दु० ।।६।। तीन लोकमें रूप प्रभु पाये, एसो मायडी पुत्र बीजो नहिं जाय।।। चौसठ इन्द्र भेटे चरणा ।। बन्दु० ।। ७ ।। शरीर संप्रदा सुन्दर सोहै, निरखंतारा नयन तुरन्त मोहे । चतुरारातो चित्त हरणा ।। बन्दु० ।। ८ ।। जगमग दीप रही देही, ज्यांने सुरनर निरख रह्या केई ।। ज्यारी आखां जाणे अमी ठरणा ।। बन्दु० ।। ९ ।। पग नख सूं मस्तक तांई, ज्यांरो शरीर बखाण्यो सूतर माही ।। च्यारुई संघ लेवे सरणा ।।बन्दु०।। १० ।। समचेई अरज सुणो सोले, रिष रायचन्द

जी अरणपरे बोले । म्हारो आवागमन दुख दुरे हरणा ।। बन्दु० ।। ११ ।। संमत अठारे छत्तीसे वरसे, कियो नागोर चौमासो भाव सरसे ।। भजन किया भव सागर तरणा ।। बन्दु० ।। १२ ।।

।। इति ।।

—✿✿—

अथ श्रीनवकार मन्त्र स्तवन

प्रथम श्रीअरिहन्त देवा ज्यांरी चौसठ इन्द्र करे सेवा ।। मारग ज्यांरे सुध खरो, श्रीनवकार मन्त्र जीरो ध्यान धरो ।श्री० ।१।। चौतीस अतिसे पैंतीस वाणी. प्रभु सगलारा मनरी जाणी । कर जोड़ी ज्यांसु विनती करो । श्री० ।। २ ।। भवजीवाने भगवन्त तारे, पछे आप मुगत माहे पाउधारे । सकल तीर्थ करनो एकसिरो ।। श्री० ।। ६ ।। पनरे भेदेसिद्ध सिधा, ज्यां अष्टकर्मोने खय कीधा ।। शिव रमणीने वेग वरो ।। श्री० ।। ४ ।। चौदेई

राज्ञरे ऊपर सह्रो, जठे जनम जरा कोई मरण नहीं ॥ ज्यांरी भजन कियां भवसागर तोरो॥श्री०॥ ॥ ५ तीजे पद आचारज जाणी, जिणरी वल्लभ लागे अमृत वाणी ॥ तन मन सु ज्यांरी सेव करो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संघ माहे सोभे स्वामी, जिके मोक्ष तणा हुए रह्या कांमी॥ ज्याने पुज्या म्हारो पाप झरो ॥ श्री० ॥ ७ ॥ उपाध्याजीरी बुद्धि भारी, ज्यां प्रति बुज्या बहु नर नारी । सूत्र अरथ जे करे सखरो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ गुण पंच बीसे कर दिपे, ज्यांसु पाखंडी कोई नहीं जीपे ॥ दूर कियो ज्यां पाप परो ॥ श्री० ॥ ९ ॥ पंचमें पद साधुजीने पुजो, यां सरीखो नजर न आवे दूजो ॥ मिटाय देवे ते जनम जरो ॥ श्री० ॥ १० ॥ जो आतमारा सुख चावो, तो थे पांच पदांजीरा गुण गावो । क्रोड़ भवारा करम हरो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ पूज्य जेमल जीरे प्रसादे जोड़ी, सुणतां तुटे करमारी कोडी। जीव छकायारा जतन करो॥ श्री० ॥१२॥

शहरे बीकानेर चौमासो, रिषरायचन्द्रजी इम भासो । मुक्ति चाहो तो धरम करो ।। श्री० ।। १३

—◇◇—

अथ भरत बाहुबलनी सज्झाय लिख्यते

राज तणारे अति लोभिया, भरत बाहू बल झुंजेरे।। मूठ उपाडी मारवा, बाहुवल प्रति बुझेरे।। वीरा म्हारा गज थकी उतरोरे, गज चढ्यां केवल न होसीरे । बंधव गज थकी उतरोरे ।।बी० ।।१।। ब्राह्मी सुन्दरी इम भाखेरे । रिखब जिणेश्वर मोकले, बाहुबल तुम पासेरे ।। बी० ।। २ ।। लोच करी संजम लियो, आयो वलि अभिमानोरे ।। लघु वन्धव बान्दु नहीं, काउ सग्ग रह्या, सुभ ध्यानोरे ।। बी० ।। ३ ।। वरस दिवस काउ सग्ग रह्या, वेलड़ियां विटाणा रे ।। पक्षीमाला मांडिया, सीत ताप सुकरणा रे ।। बी० ।। ४ ।। साधवी वचन सुणीकरी, चमक्या चित्त मझारो रे । हय गय रथ पायक तज्या, पिण चढियो अहंकारो रे ।।

बी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मुक्यो निज अभिमानो रे । चरण उठायो बांदवा । पाम्या केवल ज्ञानो रे ॥ बी० ॥ ६ ॥ पहुता केवली परखदा, बाहूबल रिषरायो रे । अजर अमर पदवी लही, समय सुन्दर बंदे पायो रे ॥ बी० । ७ ॥

छ सवरण सज्झाय लिख्यते

श्रीवीर जिणेश्वर गोतमने कहे, संबर धरतारे सहुजन सुख लहे (त्रोटक छुन्द) सुख लहे संवर, कहें जिनवर, जीव हिंस्सा टालिये । सुक्षम वादर त्रस थावर सर्व प्राणी पालिए ॥ मन बचन काया धरो समता ममता कछु न आणिए ! सुन वछ गोयम बीर जपे, प्रथम संबर जाणिए ॥ १ ॥ बीजे संबर जिणवर इम कहे, साचो बोल्यारे सहु जन सुख लहे (त्रो० छ०) सुखलहे साचो सुजस सगले, सत्य वचन संभारिये ॥ जहां होय हिंसा जीव केरी, तेह भाषा टालिए ॥ असत्य

टालो सत्य आगममन्त्र नवकार भाषिए ॥ सुण बछ गोयम वीर जंपे, जीभ जनन कर राखिए ॥ २ ॥ तीजे संबर घर वाहेर सही, अदत्ता पराये लेतां गुण नहीं (ओ० छ०) गुण नहीं लेतां अदत जोतां दूर परायो परिहरो । निज राज दण्डे लोक भण्डे, इसो भंडण कांई करोजी । इसो जाण मन विवेक आणो, संच्योज लाधे आपणो । सुण बछ गोयम बीर जंपे, नहीं लीजे पर थापणो ॥ ३ ॥ चौथेसंबर चौथी ब्रत धरो, सियल सघलेर अंगे अलंकरो, (ओ० छ०) आलंकरो अंगे सियल सघले, रंग राचो एसहीं ॥ जुगमाहे जोतां एह जालम और उपमाको नहीं ॥ एसो जाण तुम नार पराई, रिखेज निरखो नेणसुं ॥ सुन बछ गोयम वीर जंपे, कछु न कहिए वेणसुं जी ॥ ४ ॥ पचमें संवर परिग्रह परिहरो, मूरख मायारे ममता मत करो (ओ० छ०) मत करो ममता दिन रेण रमतां, जोय तमासी एवडो ॥ मणी रत्न कंचन

क्रोड़ हुवे तो तृपत न थाए जोवडो। होय जहां तहां लाभ बहुलो, लोभ वादे अति बुरो ।। सुण वछ गोयम वीर जंपे, त्रसणा घेटा परिहरो ॥५॥ छट्ठे सबर छठ्ठो व्रत धरो, रात्रि भोजन भवियण परिहरो (त्रो० छ०) परिहरो भोजन रयणी केरो, प्रत्येक पातिक एहुनो। ससार रुलसी दुःख सहसो, सुख टलसी देहनो। इसो जाण संवेग श्रावक मूल गुण व्रत आदरो। सुण वछ गोयम वीर जंपै, शिव रमणी वेगो वरो ॥६॥

—✲✲—

अथ कामदेव श्रावकनो सज्झाय लिख्यते

श्रावक श्री बीरना चम्पानो बासीजो। ए आंकड़ा ।। एक दिन इन्द्र प्रशंसियोजी, भरिये सभारे माय ।। दढ़ताई कामदेवनीजो, कोई देव न सके चलाय ।। श्रावक० ।। १ ।। सरद्यो नहीं एक देवताजी, रूप पिशाच बनाय ।। कामदेव श्रावककनेजी, आयो पोषदसालरे माय ।। श्रा०

२ ॥ रूप पिशाचनो देखनेजी, डर्‌यो नहीं रे लिगार ॥ जाण्यो मिथ्याती देवताजी, लियो शुद्ध मन ध्यान लगाय ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ अंभोरे काम-देवजी, तोने कल्पे नहीं छे कोय ॥ थारो धर्मना छोड़णोजी, पिणहं छुड़ास्युं तोय ॥ श्रा० ४ ॥ हस्तीनो रूद बेकरे कियोजी, पिशाच पणो कियो दूर ॥ पोषद शालामें आयनेजी, बोले बचन करूर ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ मन माहें नहिं कंपियोजी हस्ती सुण्डमें झाल ॥ पौषद शाला वारे लेईजी, दियो अकाशे उछाल ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ दन्त सुलमे झेलने जी, कांवलनीपरे रोल ॥ उजल वेदना उपनी जी, नहिं चलियो ध्यान अडोल ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ गजपणो तज सर्प भयोजी, कालो महा विकराल ॥ डंक दियो कामदेवने जी, क्रोधी महा चण्डाल ॥ ॥ श्रा० ॥ ८ ॥ अतुल वेदना उपनोजी, चलियो रहीं तिल मात ॥ सूर तहाँ प्रगट थयो जी, देवता रूप साक्षात ॥ श्रा० ॥ ९ ॥ कर जोड़ीने इम

कहेजी, थांरा सुरपति किया है वखाण ॥ म्हें नहिं सरध्यो मूढ़ मतीजी, थांने उपसर्ग दीनी आण ॥ आ० ॥ १० ॥ तन मन कर चलिया नहींजी, थे धर्म पायो परमाण ॥ खमजो अपराध ते माहरोजी इम कहि गयो निज ठाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ वीर जिणन्द समोसर्‌या जी, कामदेव वन्दण जाय ॥ वीर कहे उपसर्ग दियोजी, तोने देव मिथ्याती आय ॥ आ० ॥ १२ ॥ हन्ता सामी सांच छे जी, तद समण समणी बुलाय ॥ घर बेठ्यां उपसर्ग सह्योजी, इस परशंसे जिनराज ॥ आ० ॥ १३ ॥ बीस बरस लग पालियोजी, श्रावकना व्रत वार ॥ पहिले सरगे उपनाजी, चवजासी भवपार ॥ आ० ॥ १४ ॥ आ दृढ़ताई देखनेजी, पालो श्रावक धर्म ॥ कामदेव श्रावकनी परेजी, थे पामो शिव सुख धर्म । आ० ॥ १५ ॥ मुरधर देश सु आएनेजी, जैपुर कियो है चौमास ॥ अष्टादश छियासीयेजी रिष षुसालचन्दजी कियो प्रकाश ॥ आ० ॥ १६ ॥

अथ पत्र तीर्थनो स्तवन

तुम तरण तारण, भव निवारण भविकमन आनन्दनं ॥ श्रीनाभिनन्दन, जगतवन्दन, श्रीआदि नाथ निरंजन ॥ १ ॥ श्रीआदिनाथ अनाद सेऊं, भाव पद पूजा करूं ॥ कैलाश गिरि पर रिषव जिनवर, चरण कमल हिवडै धरूं ॥ २ ॥ ध्यान धुपे मन पुष्पे, अष्ट करम-विनाशनं ॥ क्षमा जाप सन्तोष सेवा, पूजूं देव निरंजनं ॥ ३ ॥ तुम अजित नाथ अजीत जीते, अष्ट कर्म महा बली ॥ प्रभु विरद सुण कर शरण आया, कृपा कीजै नाथ जा ॥ ४ ॥ तुम चन्द्र पूरणचन्द्र लंछन, चन्द्रपुरी परमेश्वरं ॥ महासेन नन्दन जगत वन्दन, चन्द्रनाथ जिणेश्वरं ॥ ५ ॥ तुम बाल ब्रह्म विवेकसागर भविक मन आनन्दनं ॥ श्री नेमिनाथ पवित्र जिनवर, तिमिर पाप विनाशनं ॥ ६ ॥ जिन तजी राजुल राज कन्या, काम सेना वश करी ॥ चारित्र रथपर चढ़ें दूलह, शाम शिम सुन्दर वरी ॥ ७ ॥ कंदर्प दर्प

सुसर्प लंछन, कमठ संठ निरगल कियो ॥ श्री पार्श्वनाथ सपूज्य जिनवर, सकल शीघ्र मंगल कियो ॥ ८ ॥ तुम कर्म घाता मोक्ष दाता, दीन जान दया करो ॥ सिद्धार्थ नंदन जगत-वन्दन महावीर मया करो ॥ ९ ॥

—✡✡—

अथ चार सर्णाको स्तवन

हिरद धारीजे, हो भवियण, मंगलीक सरणा च्यार ॥ ए टेक ॥ पो हो उठी नित समरीजे, हो भवियण ; मंगलीक शरणा चार, आपदा टले सम्पदा मिले, हो भवियण दौलतना दातार ॥ १॥ अरिहन्त सिद्ध साधु तणा ॥ हो भवि० ॥ केवली भाषित धरम, ए चांरु जपतां थकां ॥ हो भ० ॥ तुटे आठई करम ॥ हिरदै० ॥ २ ॥ ए शरणा सुख कारीया ॥ हो भ ॥ ए शर्णा मंगलीक ॥ ए शर्णा उत्तम कह्या ॥ हो भ० ॥ ए शरण तह— तीक ॥ हिरदै० ॥ ३ ॥ सुखसाता बरते ॥

हो भ० ॥ जे ध्यावे नर नार । पर भव जातां जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो आधार ॥ हिरदै० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतणी ॥ हो भ० ॥ सिंह चीताने सूर । बैरी दुश्मन चोरटा ॥ हो भ० ॥ रहे सदाई दूर ॥ हिरदै० ॥ ५ ॥ निशि दिन याने ध्यावतां ॥ हो भ० ॥ पामें परम आनन्द, कमी नहीं कीणी वातरी ॥ हो भ० ॥ सेव करै सुर इन्द्र ॥ हि० ॥ ६ ॥ गेले घाटे चालंता ॥ हो भ० ॥ रात दिवस मझार ॥ गावां नगरां विचरतां ॥ हो भ० ॥ विघन निवारण हार ॥ हि० ॥ ७ ॥ इन सरिसा सरणा नहीं ॥ हो भ० ॥ इण सरिसी नहि नाव ॥ इण सरिसो मन्त्र नहीं । हो भ० जपतां वाधे आव ॥ हि० ॥ ८ ॥ राखों शरणारी आसता ॥ हो भ० ॥ नेड़ो न आवे रोग ॥ वरते आणन्द जीवने ॥ हो भ० ॥ एह तणो संयोग ॥ हि० ॥ ९ ॥ मन चिन्त्या मनोरथ फले ॥ हो भ० ॥ निश्चय फल निरवाण ॥ कुमी नहि देवलोक में ॥

हो भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत अठारे बावन्ने ॥ हो० ॥ पाली सेखे काल ॥ रिष चौथमल जी इम कहे ॥ हो भ० ॥ सुणजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति ॥

—✡✡—

चित्त संभूतीकी सज्झाय

चित्त कहै ब्रह्मराय ने, कछु दिल माहि आणो हो । पूरब भवरी प्रीतड़ी, तुमे मूल न जाणो हो ॥ बंधव बोल मानो हो ॥ १ ॥ कतवारीरा सूत ध्यों, सांधो दे आणो हो ॥ जाती समरण ज्ञान थो, पूर्व भवजाणो हो ॥ बं० ॥ २ ॥ देश देशायण राजा घरे, पहले भव दासे हो ॥ बीज भव कालिंजरे, थया मृग वन वासे हो ॥ सं० ॥३॥ तीजे भव गगा तटे, आपे हंसला हुता हो ॥ चौथे भव चण्डालरे, घर जन्म्यापूता हो ॥ बन्धव०॥४॥ चित्त संभूत दोनों जिणा गुण बहुला पाया हो ॥ शरणे आयो आपणो, तिण पंडित पढ़ाया हो ॥

बन्ध० ।। ५ ।। राजा नगरी थी काढ़ियां, आपे मरणा मंडिया हो ।। वन माहें गुरू उपदेश थी, आपां घर छाड़िया हो ।। व० ।। ६ । संयमले तपस्या करो, लब्धधारी हूता हो । गावां नगरा विचरता, हस्तीनापुर पहूँता हो ।। व० ।। ७ ।। निमुचि ब्राह्मण ओलख्या नगरी थी कंढाव्यां हो ।। कोप चढ्या बेहूँ जिणा, सथारा ठाया हो ।। बंधव ।।८।। धुवोंथें कीधो लब्ध थी, नगरी भय पाया हो।। चक्रवर्त्त निज परिवार सुं आवि तुरत खमाव्या हो ।। बं० ।। ९ ।। रत्ना राणी रायनो, आवो शीश नमायो हो पग पुज्यां के सांथको थांरे मन भाया हो ।। व० ।। १० ।। निहाणो तुमे किया, तपनी फल हारय्यो हो । म्हें थांने वन्धव वरजियो, तुमे नाही विचारय्यो हो ।। वं० ।। ११ ।। ललनी गुलनी वीमाणमें भव पांचमें यथा हो । तिहां थी चवी करी कपिलापुर काया हो ।। वं० ।। १२ ।। हम तिहां थी चवी करी, गाथापती हो । संयम भार

लेई करी ॥ तासु मिलणने आया हो ।।वं०॥१३॥ चक्रवर्त्त पदवी थे लीवो, रिद्ध सगली पाई हो ॥ किधो सोई पामियो, हिवे कमीयन काई हो ॥वं० ॥१४॥ समरथ पदवी पामिया, हिवे जनम सुधारो हो ॥ संसारना सुख कारमा, विखियां रतवारो हो ॥वं०॥१५॥ राय कहे सुण साधुजी, म्हनु ओर बताओ हो ॥ आरिद्ध तो छुटे नहीं, पछे थें पीसतारो हो ॥ वं० ॥ १६ ॥ थें आवो म्हारा राजमें, नर भव सुख माणो हो ॥ साध पणा मांही छे कीसो, नीत मांगने खाणो हो ॥ वं० ॥ १७। चित्त कहै सुणो रायजी, इसडि किम जाणो हो ॥ म्हे रिद्ध तो छोड़ी घणी, गिणती कुण आणे हो ॥ वं० ॥ १८ ॥ हूँ आया थांने केणने, आरिद्ध तुमे त्यागो हो ॥ बैरागे मन वालने, धर्म मार्ग लागो हो ॥ वं० ॥१६॥ भिन्न भिन्न भाव कह्या घणा, नहि आयो बैरागे हो ॥ भारी करमा जीवड़ा, ते किण विध जागे हो ॥ वं० ॥ २० ॥ निहाणो तुमे

कियो: खट खंडज केरो हो । इण करणी सो जाण जो, थारा नरके डेरा हो ॥ बं० ॥ २१ ॥ पांचु भव भेला किया, आपे दोनो भाई हो ॥ हिवे मिलणो छे दोहिलो, जिम पर्वत राई हो ॥ बं० ॥ २२ ॥ ब्रह्मदत पहुंतो नरक सप्तमी, चित्त मुक्त मझारी हो ॥ कर जोड़ कवियण कहे, आव गमण निवारी हो ॥ बं० ॥२३॥

—✕✕—

अथ जीवापात्री सारी सज्झाय लिख्यते

जीवा तुं तो भोलोरे प्राणी, इम रुलियोरे संसार ॥ मोहो मिथ्यातकी नींदमें, जीवा सूतो काल अनन्त ॥ भव भग माहे तु भटकियो, जीवा तो साम्भल विरतंत ॥ जो० ॥१॥ ऐसा केई अनन्त जिन हुआ, जीवा उतकृष्टो ज्ञान अगाध ॥ इण भव थी लेखो लियो, जीवा कुण बतावे थांरी यांद ॥ जी० ॥ २ ॥ पृथ्वी पाणी अग्निमें, जीवा चोथी-वाऊ काय ॥ एक एक काया मध्यें, जीवा काल

असंख्याता जाय ।। जो० ।। ३ ।। पंचमी काय वनस्पती, जीवा साधारण प्रत्येक ।। साधारणमें तुं वस्यो, जीवा ते सांभलो सुविवेक ।। जो० ।। ४ ।। सुई अग्र निगोदमें, जीवा श्रेण असंख्याती जाण असंख्याता प्रतर एक श्रेण में, जीवा ईम गोला असंख्यता प्रमाण ।। जो० ।। ५ ! एक एक गोला मध्ये, जीवा शरीर असंख्याता जाण । एक एक शरीरमें, जीवा जीव अनन्ता प्रमाण ।।जो०।।६।। ते माथी अनादी जीवड़ा, जीवा मोक्ष जावे धीग चाल ।। एक शरीर खाली न हुवे, जीवा न हुवे अनन्ते काल ।। जो० ।। ७ ।। एक २ अभवी संगे, जीवा भव अनंता होय । वली विसेखो जाणिये, जीवा जन्म मरण तू जोय ।। जो० ।। ८ ।। दोय घड़ी काची मध्ये, जीवा पैंसठ सहससो पांच । बत्तीस अधिका जाणज्यो, जीवा ए कर्मानी खांच ।। जीवा० ।। ६ ।। छेदन भेदन वेदन वेदना, जीवा नरके सही बहु वार । तीण सेती निगोदमें, जीव

अणन्त गुणी विचार जी० ।। १० ।। एकेन्द्री माह्यःथी निकल्यौ, जीवा इन्द्री पाम्यो दोय। तव पुन्याई ताहारी, जीवा तेथी अनन्ती होय ।। जी० ।। ११ ।। इम तेरन्द्री चोरन्द्री जीवमा जीवा बे बे लाख ए जात । दु ख दिठा संसारमें, जीवा सुणता अचरज बात ।। जी० ।। १२ ।। जलचर थलचर खेचरु, जीवा उरपुर भुजपुर जात । शीत ताप तृषा सहि, जीवा दुःख सह्या दिनरात ।। जी० ।। १३ ।। इम भमन्ती जीवड़ो, जीवा पाम्यो नर भव सार ।गरभावासमें दुख सह्यां, जीवा ते जाणे करतार ।। जी० ।। १४ ।। मस्तक तो हेठो हुवे, जीवा उपर रहे बाहु पाय ।। आंख्यां आडी मुष्टी वेहुं, जीवा इम रह्या भिष्टा घर माय ।। जी० ।। १५ ।। बाप वीरज माता रुद्र, जीवा इसडो लियो थे आहार । भूल गयो जन्म्या पछे जीवा सेवी करे अविचार ।। जी० ।। १६ ।। ऊंट कोड सूई लाल करे, जीवा चापे रुं रुं माय । अष्ट

गुणी हूवे वेदना, जीवा गरभा वासारे माय ॥
॥ जी० ॥ १७ ॥ जन्मतां हुवे क्रोड़ गुणी; जीवा
मरता क्रोड़ा क्रोड़ ॥ जनम मरणरा जीवडा जीवा
जाण जो मोटी खोड ॥ जी० ॥ १८ ॥ देश
अनारज ऊपनो, जीवा जीवा इन्द्री हीनो होय ॥
आऊषो ओछो हुवे, जीवा धर्म किसी विध होय ॥
जी० ॥ १६ ॥ कदाचित नर भव पामियो, जीवा
उत्तम कुल अवतार ॥ देही निरोगी पायने,
जीवा यु खोईयो जमवार ॥ जी० ॥ २० ॥ ठग
फांसीगर चोरटा जीवा धीवर कसाईरो न्यात ।
उपजीने मुईजीसी, जीवा एसो न रही काई जात ॥
जी० ॥ २१ ॥ चौदेई राजलोकमें, जीवा जनम
मरणरी जोड़ । खाली बालाग्र मात्राए, जीवा
ऐसी न रही कोइ ठोड़ ॥ जी० ॥ एही जीव
राजा हुवो, जीवा हस्ती बांध्या बार । [illegible]
करमा वसे, जीवां न मिले अन्न उपाय ॥ जी०
॥ २३ ॥ इम संसार भमतो थकों, जीवा [illegible]

समगत सार । आदरीने छिटकाय दीवो, जीवा जाय जमारो हार ।।जी०।। २४ ।।खोटा देवज सर दिया, जीवा लागो कुगुरु केड । खोटा धमज आदरी, जीवा किधा चोउ गति फेर ।। जीवा० ।। ।। २५ ।। कब हिक नरके गयो, जीवा कबही हुँवो तूं देव ।। पुन्य पापना फल थकी, जीवा लागी मिथ्यातनी टेव ।। जीवा० ।। २६ ।। श्रोगाने वले मुमती, जीवा मेरु जेवड़ी लीध । एक ही समकित बिना,जीवा कारज नहिं हूवो सिद्ध ।।जी०।।२७।। चार ज्ञान तना धणी, जीवा नरक सातमी जाय । चौदे पुरब नो भोग्यो, जीवा पडे निगोदनी माय ।। जी० ।। २८ ।। भगवन्तनो धर्म पाल्या पछे, जीवा करणी न जावे फोक । कदाचित पड़-वाई हूवे, जीवाअर्ध पुदगल माहि मोक्ष ।। जी० ।। २९ ।। सूक्ष्मने वादर पणे, जीवा मेली, वर्गणा मात । एक पुदगलने प्रावर्तनो, जीवा भीणी घणी छे वात ।। जी० ।। ३० ।। अनन्त जीव मुक्त

गया, जीवा टालो आतम दोष । नहीं गया नहिं जावसी, जीवा एक निगोदना मोक्ष ॥ जी० ॥ २१ ॥ पाप आलोई आपणा, जीवा अवत नाला रोक । तेथी देवलोक जावसो, जीवा पनरे भव माही मोक्ष ॥ जी० ॥ २२ । एहवा भाव सुणी पर्नी जीवा सर्धा आणी नाह । जिम आयो तिम ही ज गयो, जीवा लख चौरासी मांह ॥ जी० २३ ॥ कोई उत्तम नर चिंतवे, जीवा जाणी अथीर संसार । साचो मारग सर्धीने, जीवा जाए मुक्त मझार ॥ जी० ॥ २४ ॥ दान सियल तप भावना, जीवा इणसों राखो प्रेम। क्रोड़ कल्याण छे तेहने, जीवा रिष जेमलजी कहे एम ॥ जीवा० ॥ २५ ॥

—✲✲—

अथ म्रघापुत्रकी सज्झाय [illegible]

सुगरीव नगर सुहावणो जी, [illegible] नाम ॥ तस वरराणी म्रघावती जी, [illegible] गुणधाम ॥ ए माता खीण [illegible] जी ।

एक दिन बैठा गोखड़े जी, राण्या रे परिवार। सीसदाजेने रवि तपे जी, दीठा तव अणगार। ए माता० ॥ २ ॥ मुनि देखी भव साभाल्योजी, मन वसियोरे बैराग। हरख धरीने उठिया जी, लागा म.ताँजीरे पाय ॥ ए जननी अनुमति दे मोरी माय ॥ ए माता० ॥ ३ ॥ तूं सुख मान सुहामणो जी, भोगो संसार ना भोग जोवन वय पाछी पड़े जब, आदरजो तुम जोग। रे जाया तुझ विन घडीरे छ मांस ॥ ४ ॥ पाव पलकरी खबर नहीं ऐ मांय करे कालकोजी साज ॥ काल अजाण्यो झड़ पड़े जी, ज्यों तीतर पर बाज ॥ ए माता खिण ला-खिणी रे जाय ॥ ५ ॥ रत्न जड़ित घर आँगणाजी तू सुन्दर अवतार। मोटा कुलरी ऊपनीजी, कांई छोड़ो निरधार॥ रे जाया तू० ॥ ६ ॥ बांदो घर-वादी रचिये एमाय, खिणमें खेरु थाय, ज्युं संसारनी सम्प्रदाजी, देखता या विल जाय ॥ ए माता० ॥ ७ ॥ पिलंग पथरणे पोढणोजी, तूं

भोगीरे रसाल ॥ कनक कचोले जीमणोजी, पाल्य-
लडोमें आहार ॥ रे जाया ॥ तू ८ ॥ सांपत नम
पिया घणाये माय, चुग्या मातारा थान । तृप्त न
हुवो जीवडोजी, इधक अरोग्या धान ॥ ए माता०
॥ ९ ॥ चारित्र छे जाया दोहिलो जां, चारित्र
खांडानी धार । विन हथियारा झुंजणोजी, औषध
नईहै लिगार ॥ रे जाया ॥ तु० १० । चारित्र
छे माता सोहयलोजी, चारित्र सुखनोजी खान ॥
चवदेइ राज लोकनाजी, फेरा टालणहार ॥ एमाता
॥ ११ ॥ सियाले सो लागसो जी, उनाले लुरे
बाय ॥ चौमासे मेलां कापड़ाजी ए दुख सह्यो
न जाय रे जाया० ॥ १२ ॥ वनमाछे एक मृग-
लोजी, कुंण करे उणरिज सार ॥ मृगानी परे
विचरसुं जी, एकलड़ो अणगार ॥ ए मांता०
॥ १३ ॥ मात बचन ले निसरय्याजी, ऋधा पुत्र
कुमार । पंच महाव्रत आदरय्या जी, लीधो सयम
भार ॥ ए माता० ॥ १४ ॥ एक मासनी सलेख-

नाजी, उपनो केवलज्ञान । कर्मखपाय मुक्ते गयाजो, ज्यांरालोजे नित प्रति नाम ।। ए मांता० ।। १५ ।।

सोला सुपनचन्द्रगुप्त राजा दीठा लिख्यते

दोहा- पाडलिपुर नामे नगर, चन्द्रगुप्ति तिहां राय सोले सुपना देखिया, पेखिया पोसा माय ।। १ ।। तिण कालेने तिण समे, पाँच सहे मुनि परिवार । भद्रबाहु स्वामी समोसरय्या, पाडलि बाग मझार ।। २ ।। चन्द्रगुप्त बांदण गयो, बैठी पर्षदा माय ।। मुनिवर दीधो देसना, सगलाने हित लाय ।। ३ ।। चन्द्रगुप्तराजा कहे, सांभल जो मुनिराय ।। मैं सोले सुपना लह्या, ज्यांरो अर्थ दीजो समलाय ।। ४ ।। वलता मुनिवर इम कहै सांभल तू राजान । सोला सुपना नो अरथ, इक चित राखो ध्यान ।। ५ ।।

ढाल—रे जीव विषय न राचिये ।। ए देशी ।। दीठो सुपनो पेलड़ो, भांग कल्पवृक्ष डालोरे ।। राजा दीक्षा लेसी नहिं, इण दुषण पञ्चम का-

लरे ।। चन्द्रगुप्त राजा सुणो । १ ।। कहै भद्रबाहु स्वांमी रे, चवदे पूर्वना धणी, चार ज्ञान अभि-रामोरे ।। चन्द्र० ।। २ ।। सूर्य अकाले आथम्यो, दुजे ए फल जोयोरे ।। जाया पांचवे कालमें, ज्याने केवल ज्ञान न होयोरे ।। चं० ।। ३ ।। त्रीजे चन्द्रज चालणी, तिणरो ए फल जोयोरे ।। समाचारी जुइ जुइ, वारोट्या धर्म होसी रे ।। चं० ।। ४ ।। भूत भूतनी दीठा नाचता, चौथेसुपनेराय जोसोरे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनी, घणी मानता होसीरे ।। चं० ।। ५ ।। नाग दीठो वारै फणौ, पांचमें सुपने भाली रे ।। केतलाक बरसा पछे, पड़सी वार दुकाली रे ।। चं० ।। ६ ।। देव विमाण वल्यो छठे तिणरो सुणराय भेदोरे ।। विध्याजगा चारणी, जासी लबद विछेदोरे ।। चं० ।। ७ ।। उगो उकरडी मजे, सातमे काल विमासीरे ।। चारू ही वर्णा मजे, वाण्या जैन धर्म थासीरे ।। चां० । ८ ।। हेत कथाने चोपई, स्तवना सिजायने जोडोरे । इणमे

घणा प्रतिबोधिसी, सूत्रनो रवि थोडोरे ॥ चं० ॥ ६ ॥ एको न हासी सहु वाणिया जुदो २ मत जालोरे ॥ खांच करसी आप आपणो, विरला धर्म रसालोरे । चं० ॥ १० ॥ दीठो सुपने आठमें, आगि आनु चमतकारोरे ॥ अल्प उदोत जिन धर्मनु, वहु मिथ्यात अंधकारोरे ॥ च० ॥ ११ ॥ तपस्या धर्म वखाणनी, राग करय्या होसी भेलारे ॥ ईम कर्त्ता अजांणनो, छता अछती होसे हेलारे ॥ च० ॥ १२ ॥ समुद्र सुको तिनु दिसे, दषण दिसे डोहलु पाणी रे ॥ तीन दिस धर्म विछेदहुसी, दिषण दोहलो धर्म जांणी रे ॥ चं० ॥ १३ ॥ जिहार पांच कल्याण थया, तिहा धर्मरी हाणोरे । अर्थ नवमां सुपना तणो होसी एसा अहिनाणोरे ॥ चं० ॥ १४ ॥ सोनारो थाली मजे स्वान खातो दीठो रे । दसमा सुपनानु अर्थ, सुणराय तुरो धारोरे ॥ चं० ॥ १५ ॥ ऊंच तणी लक्षमितिका, नीच तणे घर जासीरें वधसीरे ते चुगल चोरटा,

साहुकार सीदासीरे ॥ चं० ॥ १६ । हाथी ऊपर वानरो, सुपन अगियारमें दीठोरे ॥ मलेच्छराज ऊंचो होसी, असल हिंदू रहसी हेठोरे ॥ चं० ॥१७॥ दीठो सुपने बारमें । समुद्र लोपी कारोरे॥ कोई छोर गुरु व.पना. हो जासी विकरालोरे ॥ च० ॥ १८ ॥ क्षत्री लांच ग्रहाहुसी, वचन कहीं नट जासीरे दंगादंगी होसी घणा, विसासघात थासीरे ॥ च० ॥१९॥ कितला एक साध साधवी, अवेले सी भेषोरे ॥ आज्ञा थोड़ी मानसी, सिष दियां करसी द्वेषोरे ॥ चं० ॥ २० ॥ अकल विहुणा बांछसी, गुरुआदिकनी घातोरे ॥ सिख अवनीत होसो घणा, थोड़ा उत्तम सुपात्रोरे ॥ चं० ॥ २१ ॥ महारथ जुता बाछड़ा, नाने थी धर्म थासोरे ॥ कदाचित बूढ़ा करे तो, प्रमाद मांहि पड़जासीरे ॥ चं० ॥ २२ ॥ बालक वय घर छोड़सी, आण वैराग भावोरे ॥ लज्जा संयम पालसी, बूढ़ा धेठ स्वभावोरे ॥ चं० ॥ २३ ॥ सह

सर्ल नहिं बालका धेठा नहिं छे बूढ़ा रे ॥ समचौ ईम ए भाव छै, अर्थ विचारो उडार ॥ चां० ॥२४॥ रतनज जाणादिठा चउदमें ते सुपनानो ए जोड़ो रे ॥ भरत खेत्रना साध साधवी, हेत मिलाप होसी थोड़ो रे ॥ चां० २५ ॥ कलहकारी डंब्रर कारिया, असमादकारी विशेषो रे ॥ उदगकरा अवनीत ए, रहसी धेषा धेषोरे । चां० ॥ २६ ॥ वैराग्य भाव थोड़ो होसो, ध्रव लंगना धारो रे ॥ भली सीष देतां थका, करसी क्रोध अपारो रे ॥ चां० ॥ २७ ॥ प्रशंसा करसी आप आपणी, कपट वचन बहु गेरी रे ॥ आचार अशुद्धो साधातणो, उलटा होसी वैरी रे ॥ चां० ॥ २८ ॥ सुद्धोमार्ग परुपता, तिणसु मच्छर भावो रे ॥ निन्दकवहु साधातणा, होसी धेठा सभावो रे ॥ चां० ॥ २९ ॥ राय कुमार चढ़ियो पोठीये, सुपन पनरमें देखो रे ॥ गज जिम जिन धर्म छंडने, तेज विजोइ धर्म विसेषोरे ॥ च० ॥ ३० ॥ न्याय मार्ग थोड़ा होसी,

नोची गमसी वातो रे ।। कुबुद्धि घणा मानी जसी, लालच ग्राही वरतो रे ।। चं० ।। ३१ ।। वगर मावत हाथो लड़े सुपन सोलमें एहो रे ।। काल पड़सी छोड आन्तरा, मांग्या मेहन होसी रे ।। चं० ।।३२।। अकाले वृक्षा होसी, कालवर ससि थोड़ो रे ।। वाट घणी जी वड़सी, तिण अननाहुसो तोलोरे ।। चं० ।। ३३ ।। बेटा गुरु मावित्रना, करसी भगती थोड़ी रे ।। मा वित्रवात करतां थका, विच्च माहि लेसी तोड़ीरे ।। चं० ।। ३४ ।। भाई भाई माहोमाहमें, थोड़ो होसी हेतोरे ।। घणी लड़ाइने ईर्षा, वधसी एण भर्त क्षेत्रोरे ।। चं० ।। ३५ ।। कोण कायदो थोड़ो होसी. उच्छो होसी तोलो रे ।। घणा राड झगड़ा करे ऊपर आणसी बोलोरे ।। चं० ।। ३६ ।। अर्थ सोल सपना तणा, कह्यो भद्रबाहु स्यामो रे ।। जिन भाख्यो न हुवे अन्यथा. सूराजा तज कामो रे ।। चं० ।। ३७ ।। एवा सोल सुपना सुणने, सिंह जिम पराक्रम करसीरे ।। जिन वचन आराधसी, ते

शिव रमणी बरसीरे ।। च० ।। ३८ ।। एवा बचन सुणीराही, राय जोड़ा बेहु हाथोरे ।। वैराग भाव आणी कहै मैं तो सध्यां कृपानाथो रे ।। चं० ।। ३९ ।। राज थापी निज पुत्रने, हूँ लेसु संयम भारोरे ।। बलता गुरु इमड़ो कहै, मत करो ढोल लगारोरे ।। चं० ।। ४० ।। पुत्रने राज वेसाडने, चन्द्रगुप्त लीधो सयम भारोरे छता भोग छुटकायने, दीधो छकाय नेटारोरे ।। चं० ।। ४१ ।। धन करणी साधां-तणी, वाणी अमिय समाणीरे ।। जेनु दरसन देखने घणा प्राणी आतरसीरे ।। चं० ।। ४२ ।। चोखो चारित्र पालिने, सुर पदवी लहि सारोरे ।। जिन मारग आराधने, करसी खेवो पारोरे । चन्द्र ।। ४३ ।। अथिर मारा संसारनी, आप कह्यो जिन रायोरे ।। दयाधर्म सुध पालने, अमरपुर मांहा जायोरे । चं० ४४ । धन ववहार सूत्र नीचुन कामजे, भद्रबाहु कियो चोढोरे । तेणा अनुमारे माफिके रिष जेमलजी कीधो जोडोरे ।। चं० ।। ४५ ।। इति ।।
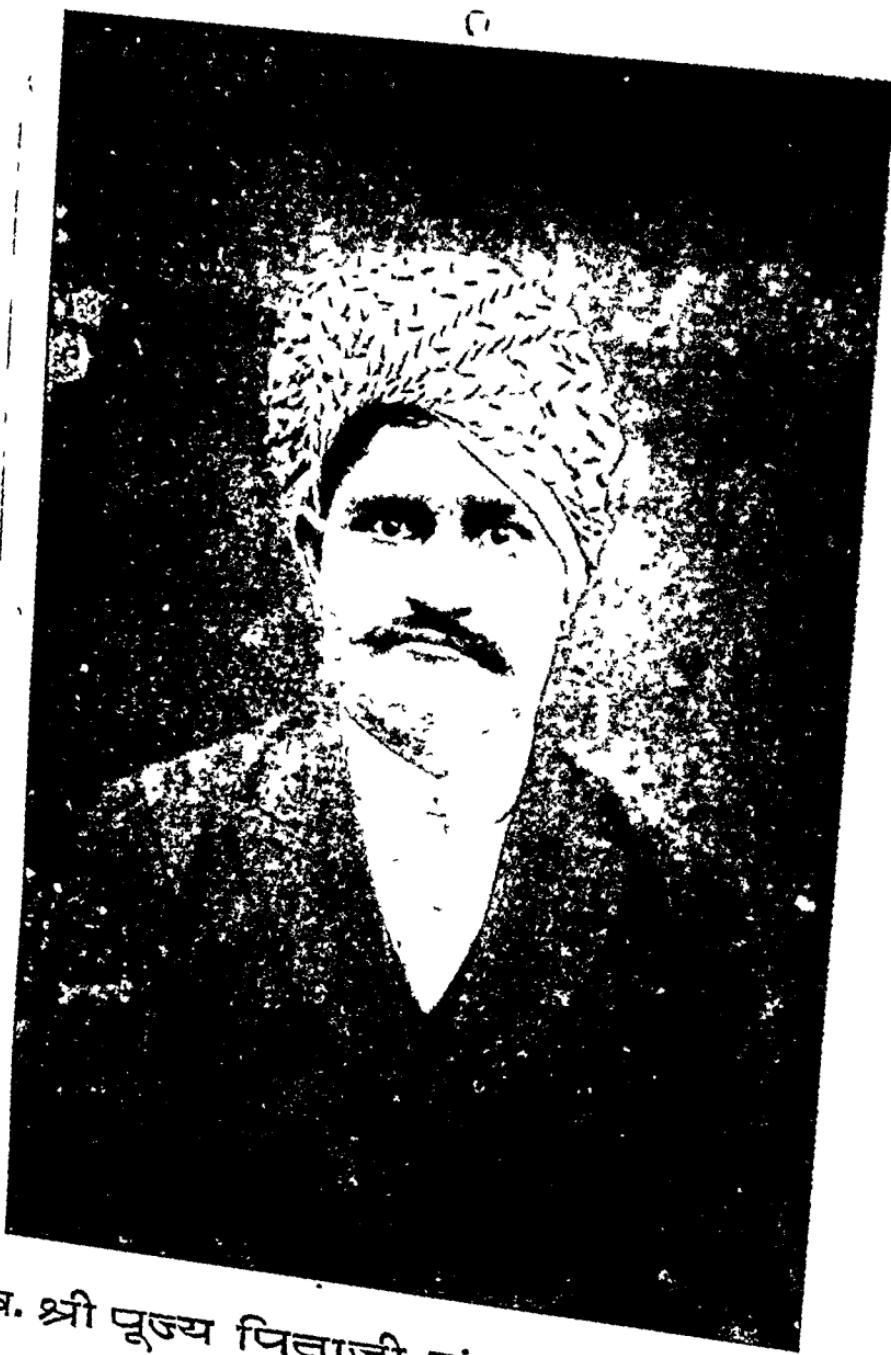
स्व. श्री पूज्य पिताजी मंगलचन्दजी स हू
जन्म चैत सुदी १ स० १९५६ वि०
निर्वाण मि० पोह बदी ८ सं० २०१९ वि०

ॐ

अथ श्रीपुण्यप्रभाविक श्रावक लालाजी साहेब
रणजीत सिंहजी कृत—

श्रीबृहदालोयणा प्रारंभः

दोहा

सिद्ध श्री परमातमा । अरिगंजन अरिहंत ॥
इष्टदेव वंदू सदा भय भंजन भगवंत ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध समरु सदा । आचारज उवझाय ॥
साधु सकलके चरणकूं । वंदू शीश नमाय ॥ २ ॥
शासन नायक समरिये । भगवंत वीर जिणंद ॥
अलिय विघन दूरे हरे । आपे परमानंद ॥ ३ ॥
अंगूठे अमृत बसे । लब्धि तणा भंडार ॥
श्री गुरु गौतम समरिये । वंछित फल दातार ॥४॥
श्री गुरु देव प्रसादसें । होत मनोरथ सिद्ध ॥

ज्युं घन वरसत वेलि तरु। फूल फलनकी वृद्ध ॥५॥
पञ्च परमेष्टि देवको । भजनपूर पंचान ।
कर्म अरिभाजे सवि । होवे परम कल्याण ॥ ६ ॥
श्री जिन युगपदकमलमें । मुझ मन भमर वसाय ॥
कब ऊगो वो दिनकरु । श्रीमुख दरशन पाय ॥७॥
प्रणमी पदपंकज भणी । अरिगंजन अरिहंत ॥
मन करूं ह्वै जीवनुं । किंचित मुझ विरतत ॥८॥
प्रारभ विषय कषाय वश। भमियो काल अनंत ॥
लख चोराशी योनिमें अब तारो भगवंत ॥ ६ ॥
देव गुरु धर्म सूत्रमें। नवतत्वादिक जोय ॥
अधिका ओछा जे कह्या। मिच्छामि दुक्कडं मोय१०।
मोह अज्ञान मिथ्यात्वको । भरियो रोग अथाग ॥
वैद्यराज गुरु शरण थी। औदध ज्ञान वैराग। ११ ॥
जे मैं जीव विराधिया । सेव्यां पाप अठार ॥
प्रभू तुमारी साखसें। वारंवार धिक्कार ॥ १२ ॥
बुरा बुरा सबको कहे। बुरा न दीसे कोय ॥
जो घट सोधूं आपनो। तो मोसू बुरा न कोय ॥ १३॥

कहेवामें आवे नहीं । अवगुण भरय्रो अनंत ॥
लिखवामें क्यों कर लिखूं । जाणे श्री भगवंत ॥१४॥
करुणा निधि कृपा करी । कठिण कर्म मोय छेद ॥
मोह अज्ञान मिथ्यात्वको । करजो गंठी भेद ॥१५॥
पतित उद्धारण नाथजी अपनो विरुद विचार ॥
भूल चूक सब म्हायरी ॥ खमिये वारंवार ॥१६॥
माफ करो सब म्हायरा । आज तलकना दोष ॥
दीनदयाल देवो मुझे । श्रद्धा शील सतोष ॥ १७॥
आतम निंदा शुद्ध भणी । गुणवंत बंदन भाव ॥
राग द्वेष पतला करो सबसें खिमत खिमाव॥१८॥
छूटूं पिछला पापसें । नवा न बंधूं कोय ॥
श्रीगुरु देव प्रसादसें । सफल मनोरथ होय ॥१९॥
परिग्रह ममता तजि करो । पंच महाव्रत धार ॥
अंत समय आलोयणा । करुं संथारो सार ॥२०॥
तीन मनोरथ ए कह्या । जो ध्यावे नित मन्न ॥
शक्ति सार वरते सही । पावे शिव सुख धन्न॥२१॥
अरिहंत देव निग्रंथ गुरु । संवर निर्ज्जरा धर्म

केवली भाषित शास्त्रए । एही जिनमत मर्म ॥२२॥
आरभ विषय कषाय तज । शुध समकित व्रत धार ॥
जिन आज्ञा परमाण कर । निश्चय खेवो पार ॥२३॥
क्षण निकमो रहेणो नही । करणो आतम काम ॥
भणनो गुणनो शीखणो। रमणो ज्ञान आराम ॥२४॥
अरहंत सिद्ध सर्व साधुजी । जिन आज्ञा धर्मसार ॥
मगलीक उत्तम सदा । निश्चय शरणां चार ॥२५॥
घड़ी घड़ी पल पल सदा । प्रभु समरणको चाव ॥
नरभव सफलो जो करे, दान सियल तप भाव ॥२६॥

* दोहा *

सिद्धां जेसो जीव है । जीव सोई सिद्ध होय ॥
कर्म मेलका अंतरा । बूझे विरला कोय ॥ १ ॥
कर्म पुद्गल रूप है । जीव रूप है ज्ञान ॥
दो मिलकर बहुरूप है । विछडयां पद निरवाण ॥२॥
जीव करम भिन्न भिन्न करो। मनुष्य जनमकूं पाय ॥
ज्ञानातम वैरागयसें । धीरज ध्यान जगाय ॥ ३ ॥
द्रव्यथकी जीव एक है । क्षेत्र असंख्य प्रमान ॥

कालथको सर्वदा रहे । भावे दर्शन ज्ञान ॥ ४ ॥
गर्भित पुग्दल पिंडमें । अलख अमूरति देव ॥
फिरे सहज भव चक्रमें । यह अनादिको टेव ॥५॥
फूल अत्तर घी दूधमें । तिलमें तैल छिपाय ॥
युं चेतन जड़ करम संग ।बंध्यो ममत दुःख पाय ॥६॥
जो जो पुद्गलकी दशा । ते निज माने हंस ॥
याही भरम विभाव तें । बढ़े करमको वंस ॥ ७॥
रतन बंध्यो गठड़ी विषे । सूर्य छिप्यो घनमांय ॥
सिंह पिंजरामें दियो । जोर चले कछु नाय ॥८॥
ज्युं बदर मदिरा पियां विच्छू डंकत गात ॥
भूत लग्यो कौतुक करे । त्युं कर्मो का उत्पात ॥९॥
कर्म संग जीव मूढ़ है । पावे नाना रूप ॥
कर्मरूप मलके टले । चेतन सिद्ध सरूप ॥ १० ॥
शुद्ध चेतन उज्वल दरव । रह्यो कर्म मल छाय ॥
तप संयमसें धोवतां । ज्ञान ज्योति बढ़ जाय ॥११॥
ज्ञान थकी जाणे सकल । दर्शन श्रद्धा रूप ॥
चारित्रथी आवत रुके । तपस्या क्षपन सरूप ॥१२॥

कर्मरूप मलके शुधे। चेतन चांदी रूप ॥
निर्मल ज्योति प्रगट भयां। केवलज्ञान अनूप ॥१३॥
मुसीपावक सोहेगी । फूक्यां तणो उपाय।
रामचरण चारूं मल्यां। मेल कनकको जाय ॥१४॥
कर्मरूप बादल मिटे। प्रगटे चेतन चन्द ॥
ज्ञान रूप गुण चांदणी। निर्मल ज्योति अमंद ॥१५॥
राग द्वेष दो बोजसें। कर्म बंधकी ब्याध ॥
ज्ञानातम वैराग्यसे। पावे मुक्ति समाध ॥ १६ ॥
अवसर वीत्यो जात है। अपने वश कछु होत ॥
पुन्य छतां पुन्य होत है। दीपक दीपक ज्योत ॥१७॥
कल्पवृक्ष चिन्तामणि । इन भवमें सुखकार ॥
ज्ञान शुद्धि इनसें अधिक। भवदुःखभंजनहार ॥१८॥
राइ मात्र घट वध नहीं। देख्यां केवल ज्ञान ॥
यह निश्चय कर जानके। तजिए परथम ध्यान ॥१९॥
दूजाकूं भी न चिंतिये। कर्मबंध बहु दोष ॥
त्रीजा चौथा ध्यायके। करिये मन सन्तोष ॥२०॥
गई वस्तु सोचे नहीं। आगम वंछा नांह ॥

वर्तमान वर्ते सदा । सो ज्ञानी जगमांह् ।२१।
अहो समदृष्टी जीवडा । करे कुटुम्ब प्रतिपाल ॥
अंतर्गत न्यारा रहे । ज्युं धाइ खिलावे बाल ॥२२॥
सुख दुख दोनूं बसत है । ज्ञानीके घट माय ॥
गिरि रस दीखे मुकुरमैं । भार भीजवो नाय ॥२३॥
जो जो पुद्गल फरसना । निश्चे फरसे सोय ॥
ममता समता भावसे । करमबंध खै होय ॥२४॥
बांध्या सोही भोगवे । कर्म शुभाशुभ भाव ॥
फल निर्जरा होत है । यह समाधि चित चाव ॥२५।
बांध्या बिन भुगते नही । बिन भुगता न छोड़ाय ॥
आपहि करता भोगता । आपहि दूर कराय ॥२६॥
पथ कुपथ घट बध करी । रोग हानि वृद्धि थाय ॥
युं पुण्य पाप किरिया करी सुखदुःख जगमेंपाय ॥२७॥
सुख दीयां सुख होत है । दुःख दीयां दुःख होय ।
आप हणो नहीं अवरकुं । वो अपने हणो नकोय॥२८॥
ज्ञान गरीबी गुरु वचन । नरम वचन निर्दोष ॥
इनकुं कभी न छाडिए । श्रद्धाशील संतोष ॥२९ ।

संत मत छोड़ो हो नरा । लक्ष्मी चौगुणी होय ॥
सुख दुःख रेखा कर्मकी । टाली टले न कोय ॥३०॥
गोधन गज धन रतन धन । कंचन खान सुखान ॥
जब आवै संतोष धन । सब धन धूल समान ॥३१॥
शील रतन मोटो रतन । सब रतनांकी खाण ॥
तीन लोककी सम्पदा । रही शीलमें आण ॥३२॥
शीले सर्पन आभडे । शीले शीतल आग ॥
शीले अरि करि केशरी। भय जावे सब भाग ॥३३॥
शील रतनके पारखु । मीठा बोले वेण ॥
सब जगसे ऊंचा रहे । जो नीचा राखे नेण ॥३४॥
तनकर मन कर वचन कर । देत न काहू दुख ॥
कर्म रोग पातक झरे । देखत वांका मूख ॥३५॥
पान झरंतो इम कहे । सुनु तरुवर वन राय ॥
अवके विछुरे ना मिलें । दूर पड़ेगे जाय ॥ १ ॥
तव तरुवर उत्तर दियो । सुनो पत्र एक वात ॥
इस घर एही रोत है । एक आवत एक जात ॥२॥
वरस दिनाकी गांठको । उच्छव गाय वजाय ॥

मूरख नर समझे नहीं । वरस गांठको जाय ॥३॥

❀ सोरठो ❀

पवन तणो विश्वास । किण कारण तें दृढ़ कियो ॥
इनकी एही रीत । आवे के आवे नहीं ॥ ४ ॥

❀ दोहा ❀

करज बिरानां काढ़के । खरच किया बहु नाम ॥
जब मुद्दत पूरी हुवे । देना पड़से दाम ॥ ५ ॥
विनु दीयां छूटे नहीं । यह निश्चय कर मान ॥
हँस हँसके क्युं खरचिये ॥ दाम बिराना जान ॥६॥
जीव हिंसा करतां थकां । लागे मिष्ट अज्ञान ॥
ज्ञानी इम जाणे सही । विष मिलियो पकवान ॥७॥
काम भोग प्यारां लगे । फल किंपाक समान ॥
मीठी खाज खुजावतां । पीछे दुःखको खान ॥८॥
तप जप संजम दोहिलो । औषध कड़वो जाण ॥
सुख कारण पीछे घणां । निश्चय पद निरवाण ।९।
डाभ अणी जल बिंदुओ । सुख विषयनको चाव ॥
भवसागर दुःख जल भरयो । यह संसार स्वभाव ।१०।

चढ़ उत्तंग जहँसे पतन। शिखर नहींवो कूप ॥
जिस सुख अन्दरदुःख वसे, सो सुख भी दुःखरूप ॥११॥
जब लग जिसके पुण्यका। पहुंचे नहीं करार।
तब लग उसको माफ है। अवगुण करे हजार ॥१२॥
पुण्य खीन जब होत है। उदय होत है पाप ॥
दाझे वनकी लाकड़ी। प्र० ले आपोआप ॥ १३ ॥
पाप छिपाया ना छिपे। छिपे तो मोटा भाग ॥
दाबी दूबी ना रहे। रूई लपेटी आग। १४ ॥
बहु बीती थोड़ी रही। अब तो सुरत संभार ॥
परभव निश्चय चालणो। वृथा जन्म मत हार ॥१५॥
चार कोस ग्रामातरे। खरची बांधे लार ॥
परभव निश्चे जावणो। करिये धर्म विचार ॥१६॥
रज्जव रज ऊंची गई। नरमाई के पान ॥
पत्थर ठोकर खात है। करड़ाईके तान ॥ १७ ॥
अवगुण उर धरिए नहीं। जो हुये विरप बबूल ॥
गुण लीजे कालू कहे। नहि छायामें सूल ॥ १८ ॥
जैसो जापें वस्तु है। वैसो दे दिखलाय ॥

वाका बुरा न मानिये । वो लेन कहांसे जाय ॥१९॥
गुरु कारीगर सारिखा । टांको वचन विचार ॥
पत्थरसे प्रतिमा करे । पूजा लहे अपार ॥ २० ॥
संतनको सेवा कियां । प्रभु रीझत है आप ॥
जाका वाल खिलाइये । ताका रीझत बाप ॥२१॥
भवसागर संसारमें । दिया श्री जिनराज ॥
उद्यम करि पहुँवे तिरे । बैठो धर्म जहाज ॥ २२ ॥
निज आतमकूं दमन कर । पर आतमकूं चीन ।
परमातमको भजन कर । सोई मत परवीन ॥२३॥
समझू शंके पापसें । अण समझू हरषंत ॥
वै लुखां वे चीकणां । इण विध कर्म बधंत ॥ २४ ॥
समझू सार संसारमें । समझू टाले दोष ॥
समझ समझ करि जीवही । गया अनन्ता मोक्ष ॥२५॥
उपशम विषय कषायनो । संवर तीनूं योग ॥
किरिया जतन विवेकसें । मिटैं कुकर्म दुःख रोग ॥२६॥
रोग मिटे समता वधे । समकित व्रत आधार ॥
निर्वैरी सब जीवको । पावे मुक्ति समाध ॥ २७॥

इति भूल चूक । मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति श्रावक लालाजी रणजीतसिंहजी कृत

दोहा सम्पूर्णम्

श्री पंच परमेष्टी भगवद्भ्यो नमः

दोहा

सिद्ध श्री परमात्मा । निरंजन अरिहंत ॥
इष्टदेव वंदू सदा । भयभंजन भगवंत ॥ १ ॥
अनन्त चोबीशी जिन नमूं । सिद्ध अनन्ता कोड ॥
वर्त्तमान जिनवर सभी । केवली प्रत्यक्ष कोड ॥२॥
गणधरादि सब साधुजी । समकित व्रत गुण धार ॥
यथायोग्य बंदन करूं । जिन आज्ञा अनुसार ॥३॥

प्रथम एक नवकार गुणवो ।

दोहा

पंच परमेष्टी देवनो । भजनपूर पंचान ॥
कर्म अरी भाजे सवी । शिवसुख मंगल थान ॥४॥
अरिहंत सिद्ध समरूं सदा । आचारज उवझाय ॥
साधु सकल के चरणकुं । वंदू शीश नमाय ॥ ५ ॥

शासन नायक समरिये । वर्द्धमान जिनचन्द ॥
अलिय विघन दूर हरे । आपे परमानन्द ॥ ६ ॥
अंगूठे अमृत बसे । लब्धि तणा भंडार ॥
जे गुरु गौतम समरिये । मनबंछित फल दातार ॥७॥
श्री जिन युग पद कमल में, मुझमन अलिय वसाय ॥
कब ऊगे वो दिनकरु । श्रीमुख दरशन पाय ।८।
प्रणमी पद पंकज भणी । अरिगंजन अरहंत ॥
कथन करूं ह्वे जीवनु । किंचित मुझ विरतंत ।९।

❀ सोरठो ❀

हुं अपराधि अनादिको । जनम जनम गुना किया भरपूर के । लूटीया प्राण छकायना । सेवियां पाप अठार करूरके ॥श्री मु०॥ १० ॥१॥

आज ताइं इन भव में पहलां, संख्याता, असंख्याता, अनन्ता भवमें, कुगुरु, कुदेव, अरु कुधर्म कीसद्दहणा. प्ररूपणा, फरसना, सेवनादिक सम्बन्धी पाप दोष लाग्या, ते मिच्छामिदुक्कडं ॥ २ ॥ मैंने अज्ञानपणे मिथ्यात्वपणे. अव्रतपणे. कषायपणे,

अशुभयोगे करी, प्रमादे करी, अपछंदा, अविनीत-पणां करयां ॥ ३ ॥ श्री श्री अरहिन्त भगवन्त वीतराग केवल ज्ञानी महाराजजीकी, श्रीगणधरदेव जीकी, आचारज महाराजजीकी, धर्माचार्यजी महाराजकी, श्री उपाध्यायजीकी, अने साधुजीकी, आर्याजी महाराजकी श्रावक श्राविकाजीकी, समदृष्टि साधर्मि उत्तम पुरुषांकी, शास्त्र सूत्रपाठकी, अर्थ परमाथकी, धर्म सम्बन्धी सकल पदार्थोंकी, अवि-नय, अभक्ति, आशातनादिक करी, कराई अनु-मोदी मन वचन कयाए करी द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, सम्यक् प्रकारे, विनय भक्ति आराधना पालना फरसना, सेवनादिक यथायोग्य अनुक्रमे नहि करी, नहि करावी, नहि अनुमोदी, ते मुजे धिक्कार, धिक्कार वारम्वार मिच्छामिदुच्कडं। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो बक्षो, मन वचन कायाये करी मुजसे खमावो ॥

—✲—

❀ दोहा ❀

मैं अपराधी गुरु देवको । तीन भवनको चोर ॥
ठगुं विराणा मालमें । हा हा कर्म कठोर ॥ १ ॥
कामी कपटी लालची । अपछंदा अविनीत ॥
अविवेकी क्रोधी कठिण । महापापी रणजीत† ॥२॥
जे में जीव विराधिया । सेव्यां पाप अठार ॥
नाथ तुमारी साखसें । बारम्बार धिक्कार ॥३॥

मैने छक्कायपणे छये काथकी विराधना करी पृथ्वीकाय अप्काय. तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पंचेंद्रिय, सन्नी, असन्नी, गर्भज चौदे प्रकारे समूर्छिम प्रमुख, त्रस, थावर जीवांकी विराधना करी, करावी, अनुमोदी, मन वचन कायाये करी, उठतां, बेसतां, सुतां, हालतां, चालतां, शस्त्र· वस्त्र मकानादिक उपकरणे करी, उठावतां धरतां लेतां देतां, वर्त्ततां वर्त्तावतां, अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा सम्बंधि अप्रमार्जणा,

---

† पाठको इस वचनके बाद अपना नाम कहना चाहिये ।

दुःप्रमार्ज्जना सम्बन्धि, अधिको ओछी, विपरीत पुंजना, सम्बन्धी और अहार विहारादिक नाना प्रकारका पडिलेहणा घणा घणा कर्तव्योमां, संख्याता असंख्याता अने निगोद आश्रयी अनन्ता जीवका, जितना प्राण लुटय्या, ते सर्व जीवोंका, मै पापी अपराधी हूँ। निश्चेकरी बदलाका देणहार हूँ, सर्व जीव मुझ प्रते माफ करो, मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो, देवसी राइसी, पक्खी, चौमासी, अने सांवत्सरिक सम्बन्धि, बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं बारम्बार मैं खमाउं छुं; तुमे सर्व खमजो ॥

खामेमि सव्वे जीवा । सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ति मे सव्वे भूएसु, वैरं मज्झं न केणइ ॥ १ ॥

वो दिन धन होवेगा, जो दिनमें छये कायका वैर बदलासें निवर्तूंगा। सर्व चौराशी लाखजीवा योनिकु अभयदान देऊंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥

❀ दोहा ❀

सुख दीधा सुख होत है। दुःख दिया दुःख होय ॥
आप हणो नहीं अवरकूं। आप हणो नहिं कोय ॥१॥

इति दूजा पाप मृषावाद सो भूठ बोलया ।२॥
क्रोधवशे, मानवशे, मायावशे, लोभवशे, हास्ये करी, भयवशे, इत्यादिक मृषा वचन बोल्या ॥३॥
निंदा विकथा करी, कर्कश कठोर मर्मकी भाषा बोलो, इत्यादिक अनेक प्रकारे मन वचन कायाये करी मृषावाद भूठ बोल्या, बोलाया, बोलताने अनुमोद्या।

❀ दोहा ❀

थापण मोसा मैं किया। करि विश्वासज घात ॥
परनारी धन चोरियां। प्रगट कह्यो नहिं जात।१॥

ते मुझे धिक्कार धिक्कार। वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ॥ वो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे मृषावादका त्याग करूं, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा।

त्रीजा पाप अदत्तादान है सो अणदीठी वस्तु चोरी करीने लीधी, ते मां की चोरी, लौकिक विरुद्ध, अल्प चोरी घर सम्बन्धी नाना प्रकारका कर्त्तव्योंमें उपयोग रहित, तथा बिना उपयोग अदत्तादान चोरी करी कराइ, करताने अनुमोदी मन वचन कायाये करी, तथा धर्म सम्बन्धी ज्ञान, दर्शन, चारित्र अरु तपकी श्री भगवन्त गुरु देवोंकी अण-आज्ञापणाये करय्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कड । सो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे अदत्तादानका त्याग करूंगा, वो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ३ ॥ चौथा मैथुन सेवनने विषे मन वचन अरु कायाका योग प्रवर्त्ताया, नववाड सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाल्या, नववाडमें अशुद्धपणे प्रवृत्ति हुई, आप सेव्या, अनेरा पासे सेवराया, सेवतां प्रत्ये भला जाण्या सो मन वचन कायाये करी मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ॥

वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन मैं नववाड सहित ब्रह्मचर्य शील रत्न आराधूंगा, सर्वथा प्रकारे काम विकारसें निवर्तूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ४ ॥ पांचमां परिग्रह जो सचित परिग्रह सो. दास दासी दुपद चौपद तथा मणि, पत्थर प्रमुख अनेक प्रकारका है अरु अचित परिग्रह जो सोना. रूपा, वस्त्र, आभरण प्रमुख अनेक वस्तु है, तिनको ममत मुर्च्छा आपणात करी. क्षेत्र घर आदिक नव प्रकारका बाह्य परिग्रह, अरु चौदः प्रकारका अभ्यंतर परिग्रहको राख्यो, रखायो राखतांने अनुमोद्यो, तथा रात्रि-भोजन अभक्ष आहारादि संम्बन्धी पाप दोष सेव्या ते मुझे धिक्कार. धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन सर्व प्रकारे परिग्रहका त्याग करी संसारका प्रपंचसेंती निवर्तूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥ ५ ॥ छट्ठा क्रोध पाप स्थानक, सो क्रोध करीने अ

आत्माकुं, और परम त्माकुं तपाया ॥ ६ ॥ तथा
सातमा मान ते अहङ्कार भाव आण्या। तीन गारव,
आठ मदादिक करया ॥ ७ ॥ तथा आठमो माया
ते धर्म सम्बन्धी तथा संसार सम्बन्धी अनेक
कर्त्तव्योंमें कपटाई करी ॥ ८ ॥ तथा नवमें लोभ
ते मूर्छाभाव आण्यो। आशा तृष्णा वांछादिक
करी ॥ ९ ॥ तथा दशमां राग ते, मनगमती
वस्तुसों स्नेह कीधो ॥ १० ॥ तथा इग्यारमा
द्वेष ते, अणगमतो वस्तु देखीने द्वेष करयो॥ ११॥
तथा बारमों कलह ते अप्रशस्त वचन बोलीने क्लेश
उपजाव्यो ॥ १२ ॥ तथा तेरमां अभ्याख्यान ते
अछतां आल दीधां ॥ १३ ॥ चौदमां पैशुन्य ते
पराइ चाडी चुगली कीधी ॥ १४ ॥ पन्नरमां पर-
परिवाद ते पराया अवगुणवाद बोल्या, बोलाया,
अनुमोद्या ॥ १५ ॥ सोलमां रति अरति पांच
इन्द्रियोना तेवीश विषय २४० विकारो छे, तेमां
मनगमतीसों राग करयो, अणगमतीसों द्वेष

करय्यो, तथा संयम तप आदिकने विषे अरति करी, कराइ, अनुमोदी तथा आरम्भादिक असंयम प्रमादमें रति भाव कर्या, कराया, अनुमोद्या ॥१६॥ सतरमां मायामोसो पापस्थानक, सो कपट सहित झूठ बोल्या ॥ १७ ॥ अठारमां मिथ्यादर्शनशल्य सो श्री जिनेश्वर देव के मार्गमें शङ्का कंखादिक विपरीत प्ररूपणादिक करी, कराई, अनुमोदी॥१८॥ इत्यादिक इहां अठारः पापस्थानों की आलोयणा सो विशेष विस्तारे आपसें बने जिस मुजब कहेनी ॥ एवं अठारः पापस्थानक सो द्रव्यथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी, भावथकी, जाणतां अजा-णतां मन वचन अरु कायाये करी सेव्यां, सेव-राया, अनुमोद्यां, अर्थे, अनर्थे, धर्मअर्थे, कामवशे, मोहवशे, स्ववशे, परवशे, दोयावा, राओवा, एगोवा, परिसा. गओवा, सूत्ते वा, जागरमाणेवा, इनभवमें पहेलां संख्याता असंख्याता अनन्ता भवोंमें भवभ्रमण करतां आजदिन सुधी, राग,

द्वेष, विषय, कषाय, आलस प्रमादिक पौद्गलिक प्रपञ्च परगुण परजायको विकल्प भूल करी, ज्ञानकी विराधना करी, दर्शनकी विराधना करी, चारित्रकी विराधना करी, चारित्राचारित्रकी तपकी विराधना करी शुद्ध श्रद्धा, शील सन्तोष क्षमादिक निज स्वरूपकी विराधना करी, उपशम, विवेक, संवर, सामायिक, पोसह, पडिक्कमण, ध्यान, मौवादिक नियम, व्रत पच्चक्खाण, दान, शील तप प्रमुखकी बिराधना करी, परम कल्याण-कारी इन बोलोंकी आराधना पालनादिक, मन वचन अरु कायासें करी नहीं, करावी नहीं, अनुमोदी नहीं ।। छहो आवश्यक सम्यक् प्रकारे विधि उप-योग सहित आराध्या नहीं, पाल्या नहीं, फरस्या नहीं विधि उपयोग रहित निराधार पणे कर्या परन्तु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नहीं कर्या, ज्ञानका चौदः, समकितका पांच, बाराव्रतका साठ, कर्मादानका पन्द्रह संलेषणाका पांच एवं

नव्वाणु अतिचार मांहे तथा १२४ अतिचार मांहे तथा साधुजीका १२५ अतिचार मांहे तथा ५२ अनाचरणको श्रद्धानादिकमें विराधनादिक जो कोई अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचारादिक सेव्या, सेवराव्या अनुमोद्या, जाणतां, अजाणतां मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार, वारम्वार मिच्छामि-दुक्कडं ॥ मैंने जीवकूं अजीव सद्दर्या परूप्या, अजीवकूं जीव सद्दर्या परूप्या, धर्मकूं अधर्म अरु अधर्मकूं धर्म सद्दर्या परूप्या, तथा साधुजी को असाधु और असाधुका साधु सद्दर्या परूप्या, तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज, महासतीयांजी की सेवा भक्ति यथाविधि मानतादिक नहीं करी, नहीं करावी, नहीं अनुमोदी, तथा असाधुओंकी सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कर्या, मुक्तिका मार्गमें संसारका मार्ग, यावत् पच्चीश मिथ्यात्व मांहिला मिथ्यात्व सेव्या सेवाया, अनुमोद्या, मने करी वचने करी, कायाये करी, पच्चीश म,पा

सम्बन्धी, पच्चीश क्रिया सम्बन्धी तेत्रीश अशातना सम्बन्धो, ध्यानका उगणीश दोष, वन्दनाका बत्रीश दोष, सामायिकका बत्रीश दोष, अने पोसहका अठारह दोष सम्बन्धी मन वचन कायाये करी जे कांई पाप दोष लाग्या, लगाया, अनुमोद्याते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ महा मोहनीय कर्मबंधका, त्रीश स्थानकका, मन वचन अरु कायासें सेव्या, सेवाया, अनुमोद्या ॥ शीलकी नव वाड, आठ प्रवचन माताकी विराधनादिक, तथा श्रावकका एकवीश गुण, अरु बाराव्रत किया विरदावकी विराधनादि मन वचन अरु कायासें करी, करावी अनुमोदी ॥ तथा तीन अशुभ लेश्याका लक्षणांकी बोलांकी, सेवना करी, अरु तीन शुभ लेश्याका लक्षणांकी बोलांकी, विराधना करी ॥ चर्चा वार्त्ता उगैरामें श्री जिनेश्वर देवका मार्ग लोप्या गोप्या । नहीं मान्या, अछताकी थापना करी प्रव–

तया, छताकी थापना करी नहीं, अरु अछताकी निषेधना नहीं करी, छताकी थापना अरु अछताकी निषेधना करने का नियम नहीं कर्या, कलुषता करी तथा छ प्रकारे ज्ञानावरणीय बंधका बोल, ऐसेही छ प्रकारका दर्शनावरणीय बन्धका बोल, यावत् आठ कर्मकी अशुभ प्रकृतिबन्धका पच्चावन कारण करी, बेयासी प्रकृति पापांकी बांधो बधाई, अनु-मोदी मने करो वचने करी, कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं। एक एक बोलसे लगाके कोडा कोड़ी यावत् संख्याता, असंख्याता अनन्ता अनन्त बोलतांई, मै जो जाणवा योग्य बोलको, सम्यक् प्रकारे जाण्या नहीं, सद्दहर्या नहीं, प्ररूप्या नहीं तथा विपरीतपणे श्रद्धानादिक करी, कराइ, अनुमोदी मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ एक एक बोलसें यावत् अनन्ता अनन्त बोलमें छांडवा योग्य बोलको छांड्या नहीं,

उनको मन वचन कायाये करके सेव्यां, सेवाया, अनुमोद्या सो मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ एक एक बोलसें लगाकर यावत् अनंता अनंत बोलमें आदरवा योग्य बोल आदर्या नहीं, आराध्या पाल्या फरस्या नहीं, विराधना खंडनादिक करी, कराइ, अनुमोदी मन बचन कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञामें जो जो प्रमाद कर्या, सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कर्या, नहीं कराया नहि अनुमोद्या, मन वचन काया करके अथवा अनाज्ञा विषे उद्यम कर्या, कराया, अनुमोद्या एक अक्षरके अनंतमें भाग मात्र दूसरा कोई स्वप्न मात्रमें भी श्री भगवत महाराज आपकी आज्ञासुं अधिका ओछा विपरीतपणे प्रवर्त्यो हूँ, ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ।

—✲✲—

❋ दोहा ❋

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा । करी फरसना सोय ॥
जाण अजाण पक्षपातमे । मिच्छामिदुक्कडं मोय ।१।
सूत्र अर्थ जाणू नहीं । अल्पबुद्धि अनजाण ॥
जिन भाषित सब शास्त्रए । अर्थ पाठ परमाण ।२।
देव गुरू धर्म सूत्रकुं । नव तत्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छामिदुक्कडं मोय ॥३॥
हुँ मगसेलियो हो रह्यो । नही ज्ञान रस भोज ॥
गुरु सेवा ना करि शकूं । किम मुझ कारज सोझ ॥४॥
जाणे देखे जे सुणे । देवे सेवे मोय ॥
अपराधी उन सबनको । बदला देशूं सोय ॥ ५ ॥
गवन करूं बुगचा रतन । दरव भाव सब कोय ॥
लोकनमें प्रगट करूं । सूई पाई मोय ॥ ६ ॥
जैनधर्म शुद्ध पायके । वरतुं विषय कषाय ॥
एह अचभा हो रह्या । जलमे लागी लाय ॥ ७ ॥
जितनो वस्तु जगतमें । नीच नीचसें गोय ॥
सबसे मैं पापी बुरो । फसूं मोहके बोय ॥ ८

एक कनक अरु कामिनी । दो मोटी तरवार ॥
उठ्यां था जिन भजनकुं । बिचमें लीया मार ॥९॥

❋ सवैया ❋

मैं महापापी छाँडके ससार छार छारहीका बिहार करु, आगला कुछ धोय कीच फेर कीच बीच रहूँ; विषय सुख चाहूँ मन्न प्रभुता बधारी है ।। करत फकीरो ऐसी अमीरीको आस करु काहेकु धिक्कार शिर पागडी उतारी है ॥ १० ॥

दोहा

त्याग न कर संग्रह करूं । विषय वचन जेम आहार।
तुलसीए मुज पतितकुं । बारबार धिक्कार ॥११॥
राग द्वेष दो वीज है । कर्म बंध फल देत ॥
इनकी फांसी में बँध्यो । छूटूं नहीं अचेत ॥ १२ ॥
रतन बंध्यो गठडी विषे । भानु छिप्यो घनमांहि ॥
सिह पिंजरामें थियो । जोर चले कछु नांहि ॥१३॥
बुरो बुरो सबको कहे । बुरो न दीसे कोय ॥
जो घट शोधूं आपणो तो मोसूं बुरो न कोय।१४।

कामी कपटी लालची । कठिरण लोहको दाम ।।
तुम पारस परसंगथी सुवर्ण थाशुं स्वाम ।।१५।।

❋ श्लोक ❋

मैं जपहीन हूँ तपहीन हूँ प्रभु हीन संव्वर समगत ।। हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणांगत । प्रभु आयो तुम शरणांगत ।।१६।।

❋ दोहा ❋

नहिं विद्या नहिं वचन बल । नहि धीरज गुण ज्ञान ।।
तुलसीदास गरीबकी । पत राखो भगवान ।। १७।।
विषय कषाय अनादिको । भरिया रोग असाध ।।
बैद्यराज गुरु शरणथी । पाऊं चित्त समाध ।।१८।।
कहेवामें आवे नहीं । अवगुण भर्‌यो अनंत ।।
लिखवामैं क्युं कर लिखूं । जाणे श्रीभगवंत ।।१९।।
आठ कर्म प्रबल करो । भमियो जीव अनादि ।।
आठ कर्म छेदन करी । पामे मुक्ति समाधि ।।२०।।
पथ कुपथ कारण करी । रोग हीन वृद्धि थाय ।।
इम पुण्य पाप किरिया करी।सुखदुःख जगमें पाय।२१।

बांध्या विण भुक्ते नही । विण मुक्त्या न छुटाय ।
आपहि करता भोगता । आपहि दूर कराय ॥२२॥
सूसायासे अविवेक हू । आंख मीच अंधियार ।
मकड़ी जाल बिछायके। फसूं आप धिक्कार ॥२३॥
सब भखी जिम अग्नि हूँ । तपियो विषय कषाय ॥
अवछंदा अविनीतमें । धर्मी ठग दुःख दाय ॥२४॥
कहाभयो घर छांडके । तज्यो न माया संग ॥
नागत्यजी जिम कांचली विष नहि तजियो अंग २५।
आलस विषय कषाय वश ।आरंभ परिग्रह काज ॥
योनि चोराशी लख लम्यो। अब तारो महाराज।२६।
आतम निंदा शुद्ध भणी । गुणवंत वंदन भाव ॥
राग द्वेष उपशम करी । सबसें खमत खमाव ॥२७॥
पुत्र कुपात्रज मै हुओ । अवगुण भर्यो अनंत ॥
माहित वृद्ध विचारके । माफ करो भगवंत ॥२८॥
शासनपति वर्धमानजी । तुम लग मेरी दौड़ ॥
जैसे समुद्र जहाज विण । सूझत और नठौर ।२९।
भवभ्रमण संसार दुःख । ताका वार न पार ॥

निर्लोभी सत्गुरु बिना । कवरण उतारे पार ॥३०॥
भवसागर संसारमें । दिया श्री जिनराज ॥
उद्यम करि पहुंचे तिरे । बैठो धरम जहाज ॥३१।
पतित उधारन नाथजो । अपनो बिरुद विचार ॥
भूल चूक सब म्हायरी । खमिये वारंवार ॥ ३२ ॥
माफ करो सब म्हायरी । आज तलकना दोष ॥
दीनदयाल दियो मुझे । श्रद्धा शील संतोष ॥३३॥
देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ । संव्वर निज्जंरा धर्मं ॥
केवली भाषित शास्त्र ए । यही जैनमतमर्म ॥३४॥
इस अपार संसारमें । शरण नहीं अरु कोय ॥
यातैं तुम पद भगतही । भक्त सहाई होय ॥३५॥
छूटूं पिछला पापथी । नवा न बांधू कोय ॥
श्री गुरुदेव प्रसादसों । सफल मनोरथ होय ॥३६॥
आरंभ परिग्रह त्यजि करी । समकित व्रत आराध ।
अंत अवसर आलोयके,अणसण चित्त समाध ।३७।
तीन मनोरथ ए कह्या । जे ध्यावे नित्य मन्न ॥
शक्ति सार वरते सही। पामे शिव सुख धन्न ॥३८॥

श्री पंच परमेष्टी भगवंत गुरुदेव महाराजजी आपकी आज्ञा है, सम्यक् ज्ञान दर्शन, सम्यक् चारित्र, तप, संयम, संवर, निर्ज्जरा, मुक्ति मार्ग यथाशक्तिये शुद्ध उपयोग सहित आराधने, पालने, फरसने सेवनेकी आज्ञा है, बारंबार शुभ योग संबंधी सझाय ध्यानादिक अभिग्रह नियम व्रत पच्चक्खाणादि करणे, करावणेकी, समिति गुप्ति प्रमुख सर्व प्रकारे आज्ञा है ।।

✻ दोहा ✻

निश्चल चित्त शुद्ध मुख पढ़त । तीन योग थिर थाय ।
दुर्लभ दीसे कायरा । हलु कर्मी चित्त भाय ।। १ ।।
अक्षर पद हीणो अधिक । भूल चूक कही होय ।।
अरिहंत सिद्ध आतम साखसें मिच्छामिदुक्कडंमोय ।२।

।। भूल चूक मिच्छामिदुक्कड ।।

इति श्रावक श्रीलालाजी साहेवरणजीत सिंहजीकृत वृहदालोयणा सम्पूर्णम् ।।

—००—

अचारी, ओहंतरे धीरे अणंत चक्खु ।। अणत्तरे तप्पति सूरिएवा, वइरोयणि देवतमं पगासे ।६।। अणुत्तर धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने ।। इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्स णेता दिविणं विसिट्ठे ।।७।। से पन्नया अक्खय सागरेवा, महोदहीवावि अणंत पारे । अणाइलेया अकसाई मुक्के (भिक्खु) सक्केव देवाहिव ईज्जुईमं । ८ ।। से बीरियेणं पडिपुन्न वीरिये, सुदसणेवा णगसव्व सेट्ठे ।। सुरालएवासि मुदागरेसे, विरायए णेगगुणोववेए ।। ९ ।। सयं सहस्साणाउ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते । से जोयणे णवणवति सहस्से; उद्धस्सितोहेट्ठसहस्ससेगं ।। १० ।। ।। पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणु परिवट्टयति ।। से हेम वन्ने बहु नंदणेत्र, जंसीरतिं वेदयंतो महिन्दा ।। ११ ।। से पव्वए सद्द महप्पगासे, विरायती कंचण मट्ठ वन्ने ।। अणुत्तरे गिरिसुय पव्वदुग्गे, गिरोवरे से

जलिएव भोमे ॥ १२ ॥ महोइ मज्झंमि ठिते-
णगिदे, पन्नायते सुरिय सूद्धलेसे ॥ एवं सिरी-
एउस भूरिवन्ने, मणोरमे जावइ अच्चिमाली
॥ १३ ॥ सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई
महतो पव्वयस्स ॥ एतोवमे समणेनायपुत्ते,
जातीजसो दंसणनाणसीले ॥ १४ ॥ गिरिवरेवा
निसहोययाणं, रुयएव सेट्ठे बलयायताणं ॥ तउ-
वसेसे जगभूइ पन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहुपन्ने
॥ १५ ॥ अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुतरं, झा-
णवरं झियाइ ॥ सुसुक्कसुक्कं अपगंड सुक्कं
संखिंदु एगतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥ अणुत्तरग्गं
परमं महेसी, असेस कम्मं सविसोहइत्ता ॥
सिद्धिगते साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेणाय
दंसणेणा ॥ १७ ॥ रुक्खेसु णाते जह सामलीवा,
जंसिम रतिं वेययंती सुवन्ना ॥ वणेसु वाणंदण
माहु सेट्ठं, नाणेण सोलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥
थणियव सद्दाण अणुत्तारे उ, चन्दोव ताराण

महाणुभावे ।। गंधेसुवा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्न माहु ।। १९ जहा सयंभू उदहीणसेट्ठे, नागेसु वा धरणिंद माहु सेट्ठे ।। खोउद ए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ।। २० ।। हत्थीसु एरावण माहुणाए सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा। पक्खी सुवा गेरुले वेणु देवे, निव्वाणवादी णिहणाय पुत्ते ।। २१ ।। जोहेसु णांय जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंद माहु ।। खत्तीण सेट्ठे जह दंत वक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ।। २२ ।। दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चे सु वा अणवज्जं

भवोघं, अभयंकरे वीर अणन्त चक्खू ।। २५ ।।
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अ-
ज्झत्थ दोसा ।। ए आणिवंता अरहा महेसी,
ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ।। २६ ।। किरिया
किरियं वेण इयाण ुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च
ठाणं ।। से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए
संजम दोहरायं ।। २७ ।। से वारिया इत्थि
सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठमाए ।।
लागं विदित्ता आरं पारंच, सव्वं पभू वारिय
सव्व वारं ।। २८ ।। सोच्चाय धम्मं अरहंत भा-
सियं, समाहितं अट्ठपदापसुद्धं ।। तं सद्दहाणाय
जणा अणाऊ, इंदाव देवाहिव आगमिस्संति ।।
।। त्तिवेमि ।। २९ ।।

इति श्रीवीरत्थुतीनाम षष्टमध्ययन ।। सम्मत्तं ।।

—✡✡—

॥ कलश ॥

पंच महव्वय सुव्वय मूलं ।

समणा मणाइल साहु सुचिन्नं ॥

वेर वेरामण पजवसाण ।

सव्व समुद्द महोदधि तित्थं ॥१॥

तित्थंकरेहिं सुदेसिय मग्गं ।

नरग तिरिग्व विवज्जिय मग्गं ॥

सव्व पवित्रं सुनिम्मिय सारं ।

सिद्धि विमाण अवगुय दार ॥२॥

देव नरिंद नमसिय पूय ।

सव्व जुगुत्तम मंगल मग्गं ॥

दुधरी संगुण नायक मेगं ॥

मोक्ख पहस्स वडिंसग भूयं ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीवीर स्तुति समाप्तम् ॥

—✡✡—

व्याख्यानके प्रारम्भ

की

॥ जिनवाणी स्तुति ॥

(सवैया)

वीर-हिमाचलसे निकसी, गुरू गौतमके मुख-कुण्ड ढरी है।
मोह-महाचल भेद चली, जगकी जड़तातप दूर करी है॥
ज्ञान पयोनिधि माहि रली, बहु भङ्ग तरंगन ते उछरी है।
ताशुचि शारद-गंग नदी प्रति, मैं अंजली निज शीश धरी है।१।
ज्ञान-सुनीर भरी सरिता, सुरधेनु प्रमोद सुखीर निधानी।
कर्मज-व्याधि हरन्त सुधा, अघमैल हरन्त शिवाकर मानी॥
वीर-जिनागम ज्योति-बड़ी, सुर वृक्ष समान महासुख दानी।
लोक अलोक प्रकाश भयो, मुनिराज बखानत हैं जिनवानी।२।
शोभित देव विषै मघवा, उडुवृन्दविषै शशि मंगलकारी।
भूप-समूह विषै बलिचक्र, पती प्रगटे बल केशव भारी॥
नागनमे धरणेन्द्र बड़ो, अमरेन्द्र असुरनमे अधिकारी।
यों जिन शासन संघविषै मुनिराज दिपैं श्रुतज्ञान भँडारी।३॥

(छन्द)

कैसे करि केतकी कनेर एक कह्यो जात,

आक-दूध गाय-दूध अन्तर घनेर है ॥

रीरी होत पीरी पर होस करे कंचनकी,

कहां कागबानी कहां कोयलकी टेर है ।

कहां भानु तेज कहां आगियो बिचारो कहां,

पूनम उजारो कहां अमावस अंधेर है ।

पक्ष छोड़ि पारखी निहारौ नेक नीके करि,

जैन बैन और बैन अन्तर घनेर है ॥४॥

वीतराग बानी साची मुक्तिको निसानी जानी,

सुकृतकी खानी ज्ञानी मुखसे बखानी है ।

इनको आराधके तिरये हैं अनन्त जीव,

ताको ही जहाज जान सरधा मन आनी है ।

सरधा है सार धार सरधासे खेवो पार,

श्रद्धा विन जीव ख्वार निश्चै कर मानी है ।

वाणी तो घनेरी पर वीतराग तुल्य नाहीं,

इसके सिवाय और छोरां सी कहानी है ॥५॥

जो शास्त्र नित सुनो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ४।
च्यार देशना दिवी जिनवर, कियो पर उपकार।
पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार शिक्षा धार ॥५॥
पांच संवर जिनेश्वर भाख्या, दया धर्म प्रधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान
और कहां लग करूं वर्णन, तीन लोक प्रमाण।
सुणता पाप विणास जावे, पावे पद निर्बाण ।८॥
देव विमाणिक मांहे पदवी, कही पांच प्रधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण आण श्रद्ध मन ध्यान

इति षट द्रव्यकी सज्झाय समाप्तम्।

॥ नमोक्कार सहियं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागरेणं वोसिरामि।

॥ पोरिसियंका पच्चक्खाण ॥

पोरिसियं पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा

भोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्न कालेणं, दिसामो-
हेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं
वोसिरामि ।

॥ एगासणांका पच्चक्खाण ॥

एगासणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं
सागारियागारेणं आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भु-
ट्ठाणेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं,
वोसिरामि ।

॥ चउव्विहार उपवासका पच्चक्खाण ॥

सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा-
भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमा-
हिवत्तियागारेणं, वोसिरामि ।

॥ रात्रिचउव्विहारका पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं,

सहसागारेणं, महत्तरागारेण, सव्व समाहिव-त्तियागारेणँ वोसिरामि ।

॥ अथ मुक्ति मार्गकी ढाल ॥

मुगतिरो मारग दोहलो जोया चतुर सुजान ।
भजलोनी भगवान, तज दोनी अभिमान ॥मु०टेर॥
पृथवी काया नहीं छेदिये, जाणो निज मात समान ।
त्रस थावर वासो बसे, घणा जीवा हंदी खाण ॥१॥
पाणी बिना परजा डुले, आशा करे रे राजन ।
ऊंचो मुखकर जोवता किरपा करो भगवान ॥२॥
बेचेरे फरजन आपरा, तो पिण नहीं मिले धान ।
धसको खाय धरती पड़े, ऊभा तज दे प्राण॥मु० ३॥
तेऊ कायारो शसतर आकरो, वायू देवे रे वधाय ।
उड़ता पड़े रे पतंगिया, जीव घणा जल जाय ॥४॥
तेऊ वाऊरो नीसरय्यो, मानव भव नहीं पाय ।
निश्चेरे जावे तिर्यंचमें, घणो दुखियारो थाय ॥५॥
वनास्पति दोय जातरी, भाखी श्री भगवान ।
सूई अग्रनिगोदमें, जीव अनन्ता वखान॥ मु० ६ ॥

ये पांचो ही थावर जाणिये, मतिवाओ तरवार ।
जीव गरीब अनाथ छै, मति काटो निरधार ।।मु० ७।।
त्रसथावर हणिया बिना, पुद्गल पूजा न होय ।
बिन भुगत्यां छूटे नहीं, मरसी घणो रोय रोय ।।८।।
पुद्गलरी त्रपती करे, परतिख लूटै रे प्राण ।
अनुकम्पा घटमें नहीं, खुलि दुर्गति खाण ।।मु० ९।।
रम्मत देखणने गयो। ऊभो रह्यो सारी रात ।
लघुनीत संकाघणी बाहिरनि सरियो नहीं जात ।१०।
नाचै बैस्यारो तायफो निरखे रंग सुरंग ।
रमणीरे संगमें रच्चियो, पोढ़े लाल पिलंग ।।मु० ११।।
दुख करने सुख मानतो, रूलियो काल अनन्त ।
लख चौरासी जीवा योनीमें, भाख्यो श्रीभगवंत ।।
गल कट्टू मिलिया घणा, भरियो ठगांरो बजार ।
कोई पुत्र जणनी जण्यो, चाले सूत्ररे अनुसार ।।
आ भव सम्पदा कारमी, जाणो वालूडांरो ख्याल ।
निश्चै परभव जावणो, बांधो पाणो पहिला पाल ।।
सुसरारे घरे जीमतो, सखियां गाय रहीं गीत ।

थोड़ा दिनामें पड़सो आँतरो निश्चेजानो यहीरीत ।।१५

कायरने चढ़े धूजणी, सूरा सनमुख होय ।
नाठा जावे गीदड़ा, मानव भव दियो खोय ।।१६।।

ओ संग्राम कह्यो केवली; सूरा सनमुख थाय ।
झूझ रहा अपनी देहसुं गुमान गर्व गंमाय ।।१७।।

जीव दयारो सिर सेहरो; बांध्यो श्रीनेमजिनंद ।
गज सुकमाल बनड़ो बण्यो पाम्यां परमानन्द ।।१८।।

मेतारज मोटा मुनि, धर्मरुचि अणगार ।
हिंसाकुमतिसे डिगा नहीं खोल्या दयाना भंडार ।१६।

सेठ सुदर्शन जीतियो, जीव दयारे परसाद ।
इन्द्र देवें परदक्षणा, उभा करे धन्यवाद ।मु०।।२०।

गोत्र तिर्थंकर बाँधियो, श्रीकृष्ण मुरार ।
आज्ञा दिधो आणन्दसुं, लेवो संजम भार ।मु०।२१।

साढ़ी वारा वरसाँ लगे, झूझ्या श्रीवीर जिनन्द ।
जीव दयारो सिर सेहरो, बांध्यो त्रिसलारे नंद ।२२।

कालोरे मुख कियो चोरनो, फेरय्यो नगर मंझार ।
समुद्रपाल ते देखनें, लीनों संजम भार ।।मु०।।२३।।

हिंस्यामें चोरीरी नियमा कही, लूंटे जीवांतणां बृन्द
कुगुरुरो भरमांवियो. हो रह्या अन्धाधुन्ध ।मु०२४
करण मुनिसर इम भणे, पालो वरत अखंड ।
जीवदयारी धर्म आदरो, भाख्यो श्रीभगवन्त।।मु० २५।

॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथजी री (तान) छन्द लिख्यते ॥

श्रीशांति जिनेश्वर सोलामांजो, जगतारन जगदीश,
विनती म्हारी सांभलो, मैं तो अरज करूं धरि शोश
(आंकड़ी)

प्रभुजी म्हारो प्राण अधारोरे, सर्व जिवां हित कारोरे
साता वरताई सर्व देशमें, प्रभु पेटमें पोढ्या छो आप
जन्मे सेती सापवा थे. तो आया घणारी दाय ।
प्रभुजी मोरा प्राण अधारो रे
सर्व जीवांने हितकारोरे । चक्रवर्ति पदवी थां लीधी
प्रभु कीनो भरतमां राज, सुखभर संजम पालिया,
प्रभु सारिया छै आतम काज ॥ प्रभु० ॥

तीर्थनाथ त्रिभुवन धणी प्रभु थाप्या छै तीर्थ चार
समोसरण भेला रह्या जठे,सिंघ बकरी इक ठाम।प्र०।
सुरनर क्रोड़ सेवा करे, प्रभु वरषै छै अमृत धार
अमिझरै निज साहेबा थे तो आया म्हारे दाय।प्र०।
देव घणा इमे ध्याविया प्रभु गरज सरी नहीं कोय
अबके साचा साहबा मैं तो अराध्या मन मांय।।प्रभु।
लख चोरासी जीवा जोनिमें,प्रभु भटक्यो अननी वार
सेवक सरणे आवियो म्हारी आवागमन दो निवार।
साताकारी संतजी, प्रभु त्रिभुवन तारनहार।
विन्ती म्हारी सांभलो मने भवसागर सूं तार ।।प्र०।
रिख चौथमलजी री विनती,प्रभु सुण जो दुतियाछंद
अविचलपदवीथेपामिया,प्रभुआपअचलाजीरानंद।प्रभु

।। अथ कर्मोंकी लावणी ।।

करम नचावे ज्युंही नाचे ऊंची हुवणो सवी खसता
नकसीहुवणसूं कोईनराजी निंदाविकथावयुं करता।(टेर)
ओगणवाद तूं बोले लोकांरा चेतन भूल है तुझमाहीं
थारे करममें काई लिखी है, थारी तुझ सूझे नाहीं

चवदै पूरब च्यार ज्ञान था, कर्मोंसे छूटा नाहीं।
ऊंचो चढ़के पड़े कोचड़में, ज्ञानी बचन झूठा नाहीं
पाप उदैमें आवे चेतन, फीर समणीमें आवे नाहीं
पुण्डरीक गोसालो देख जमाली, खोटी व्यापै घटमाहीं

(उड़ावणी)

मोह छाक मोटो मदपीसे, ओगण औरोंका तू क्यों धींसे। थारा ओगण तुझकों नहीं दीसै, अनेक ओगण या थारी आतमा, ज्ञानी वच पकड़ो रस्ता। नकसी०।
पांच प्रकारे काम भोगतूं, सेवे सेवावे सारा करता
शब्द बरण गन्ध रूद फरसतूं, जहर खायके क्यूं मरता
आछी भूड़ी कथा लोकांरो, करतां आतम भारी करता
केने सरावै केने विसरावै हरख हरख आनंद धरता
आंव बछे और बंबूल वावै, आम रस मुख किम पड़ता
रोग सोग दुख कलह दालिदर, दुखमें दुख पैदा करता

(उड़ावणी)

थारी म्हारी करता दिन जावै, आमा सामा भाठा भिड़ावै सुखमें दुख तूं वैर घलावै, ज्यों दीपकमें पडै

पतंगा चेतन दुरगति क्यूं पड़ता ॥ नकशी० ॥२॥
हुंतरो तूं क्या (काईं) सराबै, अणहूंतका क्या विसराता है
पुन्य पाप जो बांधा जीवनें वैसा ही फल पाता है
किणने माया दीवी भोगणने, कोई रखवाली करताहै
जस अपजस जो लिखा करममें, जैसा कारज सरता है
पाप अठारे सेंधा जीवरे, इणमें सब ही फसता है
स्वादबाद (सुख) और कामभोगमें, कूचा पुन्नों का करताहै

(उड़ावणी)

रुच २ दाप बांधे तू सोरा उदे आयां भोगंता दोरा
लख चौरासी भुगते फोड़ा, आक थोर और तुंबा
निबोली पाप फल कड़वा लगता ॥ नकशी ॥३॥
विपाक सूत्रमें मिरगा लोढ़ो, देखो पाप उदै आया
हाथ पांव मुख आकार नाहीं, राजा घर बेटा जाया
जीमण पापो एक ही सुरमें झाड़ा नाड़ा उणमें लाया
ज्युं नदीके टोल समाने, इन खाखे उनकी काया
नरक सरीखा दुख जिन भाख्या, मलमूत्रमें लपट रह्या
अत्यन्त दुर्गन्धजागा गन्धावै, भवरेमांहो ढक्या रह्या

(उड़ावणी)

गाड़ी भरयो आहार करावे, उणभवरेमें कोईयन जावै
जो जावै तो मुरछा आवै, विचित्र गति करमोंकी
भाखो ज्ञानी वचन पकड़ो रसता ।। नकसो० ।।४।।
क्रोध मान और माया लोभमें, वोर तणी गतलेपाई
खाय रगड़ तुझ थुक्यो चेतन पगोंमें ठोकर खाई
विविध प्रकारे साग चौहटै ओडोमें मालण लाई
एक कोडीरे केई भागमें आनन्तीवार तूं विकआयो
च्यार गति छव काया मांही, दड़ी दोटे जूं भमि-
आयो काल अनन्तो वोल्यो हे चेतन, नरक
निगोद झोंको खायो (उड़ावणी)
उठे मान थे क्योंकोनोनो, हणे (अंवी) वोले ज्यूं
बोल्यो क्यूंनी
अनन्त जीवांरो तूं जो खूनी, नानुचवाण की इये
उपदेशी चतुर अर्थ हिरदै धरता ।। नकशो० ।।५।।

। इति पद ।।

—✡✡—

॥ सास उसासको थोकड़ो ॥

मगद देश राजगिरि नगरी जां श्रेणिक राजा राज करे । ज्यां सम्मरण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी चउदेह हजार मुनिराजका परिवारसे समोसरिया । जिहां चन्दन बालाजी आदिदेइने छत्तिस हजार आरजांजीका परिवारसे पधारय्यां, तबश्रेणिकरांजा चेलणां राणी अभयकुमार अनेक राजपुत्र अंतेवर परिवार सहित भगवन्तने वन्दना करवाने गया ।

❁ दोहा ❁

ज्यां बारे प्रकारकी प्रखदा, विद्याधरांकी जोड़ ।
गौतम स्वामी पूछिया, प्रश्न बेकर जोड़ ॥१॥
सुण हो त्रिभुवन धणी, पूंछूं वारे बोल ।
तेनो उत्तर दीजिये, शंका दीजे खोल ॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्ष छमन्छर कितना ?

उत्तर—हो गौतमजी एक सौ ॥ १ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना जुग कितना ?

उ०—हो गौतमजीबीस ।। २ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्ष की एना कितनी ?

उ०—हो गौतमजी दोय सौ ।। ३ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना ऋतु कितना ?

उ०—हो गौतमजी छै सौ ।। ४ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना महोना कितना ?

उ०—हो गौतमजी बारा सौ ।। ५ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना पखवाड़ा कितना !

उ०—हो गौतमजी चौबीस सौ ।। ३ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षकी अठवाड़ा कितना ?

उ०—हो गौतमजी अडतालीस सौ ।। ७ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना दिन कितना ?

उ०—हो गौतमजी छत्तीस हजार ।। ८ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षनी पहर कितनी ?

उ०—हो गौतमजी दो लाख अट्ठासी हजार ।। ६ ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना मुहूरत कितना ?

उ०—हो गौतमजी दस लाख ८० हजार ।। १० ।।

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना कच्ची घडियां कितनी

उ०—हो गौतमजी २१ लाख ६० हजार ॥११॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना सास उसास कितना?

उ०—हो गौतमजी ४ अरब ७ करोड ४८ लाख ४० हजार । ॥ इति ॥

प्र०—हो भगवान कोई समदृष्टी जीव राग द्वेष व रके रहित दयाधर्म करके सहित, एक उपवास करके अष्टपोहरको पोसो करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी २७ सौ अरब ७७ क्रोड ७७ लाख ७७ हजार ७ सै ७७ पल्योपम झाजेरो नारकीनो आयु तुटे । देवतानो शुभ आयुष बांधे । १ ॥

प्र०—हो भगवान, कोई पोसा रहित पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ३४६ क्रोड २२ लाख २२ हजार२२२ पाल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊ

षो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥२॥

प्र०—हो भगवान कोई आधा मुहूरतको संवर करे तिणकों कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ४६ करोड २६ लाख ६१ हजार ६ सै पल्योपम भाजेरो नारकीनों आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ।३॥

प्र०—हो भगवान कोई एक समायक करे तिणको कांई फल होवे ?

उ० हो गौतमजी ६२क्रोड ५६ लाख २५ हजार ६ सै २५ पल्योपय भाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ४ ॥

प्र०—हो भगवान कोई घड़ी घडीनां पच्चक्खान करे तिणकों कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी २ क्रोड ५३ हजार ४०८ पल्योपम भाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकार मन्त्रको

ध्यान करे तिनको कांई फल होवे ?

उ०--हो गौतमजी १९ लाख ६३ हजार २६३ पाल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ६ ॥

प्र०--हो भगवान कोई एक अनापुर्वीगणे तिनको कांई फल होवे ?

उ०--हो गौतमजी जगंन ६० सागरोपम झाजेरो उतकृष्टथ्या पांच सौ सागरोपमझाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे

प्र०--हो भगवान कोई एक नवकार सी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०--हो गौतमजी सौ वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ८ ॥

प्र०--हो भगवान ! कोई एक पोरसी करे तिणको काँई फल होवे ?

उ०--हो गौतमजी १ हजार वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ९ ॥

प्र०—हो भगवान कोई दो पैरसी करे तिणको
काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १० हजार वर्ष नारकीनो
आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१०॥

प्र० – हो भगवान कोई तीन पोरसी करे तिणको
काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! एक लाख वर्ष नारकीनो
आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥११॥

प्र० –हो भगवान कोई एक एकासणो करे तिणकों
काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दस लाख वर्ष नारकीनो
आयुषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१२॥

प्र०—हो भगवान कोई एक एकल ठाणो करे
तिणको काई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक क्रोड वर्ष नारकीनो
आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१३॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नेई करे तिणको काई
फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दस क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१४॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अमल करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक अरब वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१५॥

प्र०—हो भगवान कोई एक उपवास करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! एक हजार क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१६॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अभिग्रह करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! दस हजार क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे । देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१७॥ ॥इति॥

एक मुहूरतका ३७७३ सासउसास ॥१॥

एक पहरका १४१४६ सासउसास ॥२॥

एक दिन रातका ११३१६० सासउसास ॥३॥

१५ दिनका—१६९७८५० सासउसास ॥४॥

१ महीनाका—३३९५७०० सास उसास ॥५॥

३ महीनाका—१०१८७१०० सास उसास ॥६॥

६ महीनेका—२०३७४२०० सास उसास ॥७॥

९ महीनेका—३०५६१३०० सास उसास ॥८॥

१२ महीनेका—४०७४८४०० सासउसास जाणवो ९

॥ इति ॥

पृथ्वी कायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥१॥

अपकायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥२॥

तेऊ कायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥३॥

वायुकायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥४॥

प्रत्येक वनस्पतिकायका जीव एक मुहूरतमें ३२०० जनम मरण करे ।। ५ ।।

साधारण वनस्पतिकायकाजीव एक मुहूरतमें ६५५३६ जनम मरण करे ।। ६ ।।

बेइन्द्रीजीव एक मुहूरतमें ८० जनम मरण करे ।।७।।

ते इन्द्रीजीव एक मुहूरतमें ६०जनम मरण करे ।।८।।

चऊ इन्द्रीजीव एक मुहूरतमें४० जनम मरण करे।९।

असंनी पंचेन्द्री जीव एक मुहूरतमें २४ जनम मरण करे ।। १० ।।

संनी पंचेन्द्री जीव एक भव करे ।

।। इति सासउसासकी थोकडो संपूर्णम् ।।

—✡✡—

।। मोक्ष मार्गनो थोकड़ो प्रारम्भी ए छे ।।

श्रीगौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वन्दणां नमस्कार करके सम्मण भगवंत श्रीमहावीर देवने पूजता हुआ ।।

प्र०—हो भगवान ! जीव कर्मोंके वसकिम रमरयो?

प्र.–हो भगवान ! जीव जीव सगला मुगत मे जावेगा अजीव अजीव अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी नो अठे समठे यो अर्थ समर्थं नहीं ।

प्र.–हो भगवान कांई कारण से ?

उ.–हो गौतमजी ! जीवका दो भेद एक सूक्ष्म दूसरा बादर । ते बादर कुं मुगतिछे सूक्ष्म कुं नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! बादर बादर जीव सगला मुगतमें जावेगा, सूक्ष्म सूक्ष्म जीव सगला अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! कांई कारण से ?

उ.–हो गौतमजी ! बादर दो भेद एक त्रस दूजा स्थावर त्रसकुं मुगतो छे स्थावरकुं मुगत नहीं ।

प्र॰ हो भगवान ! त्रस त्रस सगला मुगतमें जावेगा, स्थावर २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ.-हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.-हो भगवान कांई कारण से ?

उ.-हो गौतमजी ! त्रसका दो भेद (१) पंचेन्द्री ने (२) तीन विकलेन्द्री । पंचेन्द्रीकुं मुगत छे तीन विकलेन्द्री कुं मुगत नहीं ।

प्र.-हो भगवान पञ्चेन्द्री २ सगला मुगत जावेगा तिन विकलेन्द्री २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ.-हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं

असन्नी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ.—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ.—हो गौतमजी ! सन्नीका दो भेद, एक मनुष्य दूजा तिर्यञ्च, मनुष्य कुं तो मुगती छे त्रियंचकुं मुगती नहीं ।

प्र.—हो भगवान मनुष्य २ सगला मुगतमें जावेगा त्रियञ्च त्रियञ्च अठे रह जावेगा ?

उ.—हो गौतमजी नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ.—हो गौतमजी ! मनुष्यका दो भेद एक समदृष्टि, दूजा मिथ्यादृष्टि । समदृष्टिकुं मुगत छे, मिथ्यादृष्टीकुं मुगत नहीं ।

प्र.—हो भगवान ! समदृष्टी २ सगला मुगतमें जावेगा मिथ्यादृष्टि २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! समदृष्टीका दो भेद एक व्रती दूजा अव्रती; व्रतीकुं मुगत छे अव्रती कुंमुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान व्रती व्रती सगला मुगतमें जावेगा, अव्रती २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! कांईं कारणसे ?

उ० हो गौतमजी ! व्रतीका दो भेद एक सर्वव्रती दूजा देशव्रती; सर्वव्रतीकु मुगत छे देशव्रतीकुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! सर्वव्रती २ सगला मुगत में जावेगा देशव्रती २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! सर्वज्ञतीका दो भेद एक प्रमादी दूजा अप्रमादी ; अप्रमादीकुं मुगत छे, प्रमादीकुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! अप्रमादी अप्रमादी सगला मुगतमें जावेगा, प्रमादी २ अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! अप्रमादीका दो भेद एक क्रियावादो दूजा अक्रियावादी क्रियावादीकुं मुगत छे अक्रियावादीकुं मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! क्रियावादी २ सगला मुगतमें जावेगा अक्रियावादी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजो ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.–हो भगवान कांई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजो ! क्रियावादोका दो भेद एक भवी दूजा अभवी, भवोकूं तो मुगत छे अभवीकुं मुगत नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! भवी भवी सगला मुगतमें जावेगा अभवो २ अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.–हो भगवान काई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजी ! भवीका दो भेद, एक विनीत दूजा अविनीत विनीतकुं मुगत छे अविनीत कुं मुगत नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! विनीत २ सगला मुगतमें जावेगा, अविनीत २ अठे रह जावेगा !

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! कांई कारण से ?

उ.–हो गौतमजी ! विनीतका दो भेद एक सकषाई दूजो अकषाई, अकषाईकु मुगत छे सकषाईकूं मुगत नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! अकषाई अकषाई सगला मुगतमें जावेगा सकषाई २ अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजी ! अकषाई का दो भेद एक उपशम श्रेणी दूसरा क्षपक श्रेणी, क्षपक श्रेणीवालाकूं मुगत छे उपशम श्रेणीवाला कूं मुगत नहीं ।

प्र.–हो भगवान क्षपकश्रेणी २ वाला सगला मुगतमें जावेगा उपशमश्रेणी २ वाला अठे रह जावेगा ?

॥ २० बोलकरी जोव तीर्थंकर गोत्र बांधे॥

१--अरिहन्तजीका गुणग्राम करतो थको जोव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

२--सिद्ध भगवंतजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड खपावे, उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

३--आठ प्रवचन दया माताका आराधतो थको जीव कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे ।

४--गुणवन्त गुरूजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

५--थेवरजीना गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे ।

६--बहुसूत्रीजी का गुण ग्राम करतो थको जीव कर्मोकी कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे।

७--तपसीजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे।

८--भण्यागुण्या ज्ञान चितारतोथको जीवकर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे।

९--समकित शुद्ध निर्मलोपालतो थकोजीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे।

१०--विनय करतो थको जीव कर्मा की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे

११--दोय वेला पडिक्कमणो करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे।

१२--लीयाव्रत पच्चक्खाण निरमलापालतो थको जीव कर्माकी कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१३--धर्म ध्यान सुक्ल ध्यान ध्यावतो थको जीव आर्त ध्यान रुद्र ध्यान वरजतो थकोजीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बाँधे।

१४--बारह् भेदे तपस्या करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१५--अभयदान सुपात्रदान देवतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१६--व्यावच दस प्रकारको करतो थको जीव कर्माकी कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१७--सर्व जीवाने साता उपजावतो थको जीव

कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थकर गोत्र बांधे ।

१८–अपूर्वकरण ज्ञान नयो नयो भणतो सीखतो थको जीव कर्मा को कोड खपावे, उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१९–सूत्र सिद्धांतनो विनय भगती उत्कृष्ट भाव से करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे, उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे

२०--ग्राम नगर पुर पाटन विचरता, मिथ्यात उत्थापताँ, समगत थापतां जीव कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

। इति संपूर्णम् ।।

-XX-

॥ गुरू चेलाको सवाद ॥

गुरू—देख्यो रे चेला बिना रूख छाया, देख्यो रे चेला बिना धन माया। देख्यो रे चेला बिना पास बन्धन, देख्योरे चेला बिना चोरी दंडन ॥ १ ॥

चेला—देख्या गुरूजी बिना रूख छाया, देख्या गुरूजी बिना धन माया । देख्या गुरुजीबिना पास बन्धन, देख्या गुरूजो बिना चोरी दंडन ॥ २ ॥

गुरू—कहोनी चेला बिना रूख छाया, कहोनी चेला बिना धन माया । कहोनो चेला बिना पास वधन । कहोनी चेला, बिना चोरी दण्डन ।३।

चेला—वादल गुरूजी बिना रूख छाया, विद्या गुरु जो विना धन माया । मोह गुरुजी विना पास वंधन । चुगली गुरुजी विना चोरी दण्डन ॥ ४ ॥

गुरू—देख्यो रे चेला विना रोग गलतां, देख्यो रे

चेला बिना अग्नि जलतां । देख्यो रे चेला बिना प्यार प्यारा, देखो रे चेला बिना खार खारा ॥ १ ॥

चेला—देख्या गुरूजी बिना रोग गलतां, देख्या गुरूजी बिना अग्नि जलतां । देख्या गुरुजी बिना प्यार प्यारा, देख्या गुरुजी बिना खार खारा ॥ २ ॥

गुरू—कहोनी चेला बिना रोग गलतां, कहोनी चेला बिना अग्नि जलतां । कहोनी चेला विना प्यार प्यारा, कहोनो चेला विना खार खारा ॥ ३ ॥

चेला—चिन्ता गुरुजो विना रोग गलतां, क्रोधी गुरुजी विना अग्नि जलतां । साध्र गुरुजी विना प्यार प्यारा, हिंसा गुरुजी विना खार खारा ॥ ४ ॥

गुरू—देख्यारे चेला बिना पान तरवर, देख्यारे चेला बिना पाल सरवर । देख्यारे चेला बिना पांख

सूवा, देख्या रे चेला बिना मौत मूवा। १।।

चेला—देख्या गुरुजी बिना पाल सरवर, देख्या गुरूजी बिना पान तरवर। देख्या गुरूजी बिना पंख सूबो, देख्या गुरूजी बिना मौत मूवो।। २ ।।

गुरू—कहोनी चेला बिना पाल सरवर, कहोनी बिना पान तरुवर। कहोनी चेला बिना पांख सूवा, कहोनी चेला बिना मौत मूवा ।३।।

चेला—तृष्णा गुरूजी बिना पाल सरवर, नेत्र गुरूजी बिना पान तरवर। मन गुरूजी बिना पांख सूवा, निद्रा गुरूजी बिना मौत मूवा।। ४ ।।

।। इति ।।

।। गुरु दर्शन विनती ।।

भूल मत जावोजी गुरू म्हांने, बिछड़ मत जाओजी गुरू म्हाने ।। म्हे अरज करोछों थाने ।। भूल मत जाओजी ।। टेर ।। सदगुरु प्रेम हियासों जडिया, प्रगट कहूँ क्या छाने । जो मुझसे अपराध हुए तो, करम दोष गुरु म्हांने ।। भू० ।। १ ।। भवसागर जलसे भरियो, जीव तिरण नहि जाने । जीरण नाव जोजरी डूबे, पार करो गुरु म्हांने ।। भू० ।। २ ।। मैं चाकरसे चूक पड़ी तो, गुरु अवगुण नहिं माने । मैं बाल गुनाह किया बहुतेरा, पिता बिरद इस जाने ।। भू० ।। ३ ।। मेरी दौड जहां लग सद्गुरुजी, नमस्कार चरणामें । भैरुंलाल कर जोड़ बीनवे, धन धन है संताने ।। भू० ।। ४ ।।

—✲✲—

॥ देव गुरू धर्म विषै स्तवन ॥

(देशी ख्यालकी)

गुरु ज्ञान नगीना, भलोरे बतायो मारग मोक्षको ॥ टेर ॥ अरिहंत देवने ओलख्या सरे, होवे परम कल्याण ॥ द्वादश गुणेकरी शोभता सरे, ते श्री अरिहंत जाण हो ॥गुरु०॥१॥ निर-लोभी निरलालची सरे, ते गुरु लीजै धार । आप तरे पर तारसी सरे, ते साचा अणगार हो ॥गुरु॥ ॥२॥ भेख धारी छोड देवो सरे, देखो अन्तरज्ञान। भेख देख भूलो मती सरे, करजोहिये पैछान हो ॥ गु० ॥३॥ वीतरागका वचनमें सरे, हिंसा न करवी मूल । हिंसा माहीं धर्म परुपे, ज्यांके मुंडे धूल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्म कारने सरे, हिंसा करसोकोय । ते रुलसी संसारमें सरे, लीजो सूत्रमे जोय हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ समकित दीधी मुझ गुरु सरे, जीव अजीव ओलखाय । त्रस थावर जाण्या विना सरे, कहो समकित किम थाय हो

।।गु० ६।। दया दान उथापने बोले, वीर गया छे चूक । ते मर दुरगत जावसी सरे, करसी कूंका कूक हो ।।गु० ७।। धर्म २ सब कोई कहे सरे, नहीं जाणे छे काय । धर्म होवे किण रीतसुं सरे, जोवो आगमके मांय हो ।।गु० ८।। गुरू प्रसादे समकित मिली सरे, गुरू सम और नहीं कोय । गुरु विमुख जे होय सो सरे, जेहने समकित किम होय हो ।।गु ६।। कषाय परगत ओलखी सरे, लीजो समकित सार । राम कहे पाम्यां नहीं सरे, बिन समकित कोइ पार हो ।।गु० १०।। समत उगणीसे असाढमें सरे, नागौर शहर चौमास । कातिक वदी पंचमी सरे, सामी विरधीचन्दजी प्रसाद हो ।।गुरु।। ११।।

– इति पदम् –

—✿✿—

जंबू कुमारजीरी सज्झाय

राजगृहीना वासीयाजी, जंबू नाम कवार, ऋषभदत्त रा डीकराजी भद्राज्यांरी माय, जंबू कह्यो मान लेजाया मत ले सजम भार ॥१॥ सुधर्मा स्वामी पधारियाजी राजगृहो रे माय । कोणक बंदरा चालियोजी, जंबू बांदण जाय ॥जंबू०॥२॥ भगवतबाणी बागरीजी, वरसे अमृत धार । वाणी सुणी वैरागियाजी, जाण्यो अथिर संसार॥जंबू०॥ ३॥ घर आया माता कनेजी, बंदे बारम्बार । अनुमत दीजै म्हारी मातजी माता लेसुं सजम भार ॥जंबू॥ ॥४॥ माता मोरी सांभलो जननी लेसुं संजम भार ॥जंबू०॥ ये आठुहीं कामिणी, जबू अपछररे उणीहार । परणीनें किम परिहरो, ज्यांरो किम निकले जमवार ॥जंबू०॥५॥ ये आठूहीं कामिणी, जंबू तुझ विन बिलखी थाय । रमिज्यां ठमियां सु नीसरे ज्यांरो वदन कमल बिलखाय ॥जंबू०॥ ६॥ मति हीणो कोइ मानवी माता मिथ्यामत भरपूर ।

रुप रमणीसूं राचिया ज्यांरा नहीं हुवा दुरगत दूर । माता मोरी सांभलो जननी लेसूं संजम भार ।। जंबू० ।। ७ ।। पालपोस मोटो कियो, जंबू इम किम दे छिटकाय । मात पिता मेले झूरता, थाने दया नहिं आवे मांय ।। ज० ।।८।। एक लोटो पानी पियो, माता मायर बाप अनेक, सगलारो दया पाल सुं माता आणीने चित्त विवेक । माता मोरी सां०।।९।। ज्युं आंधारे लाकड़ो जबू तूं म्हारे प्राण आधार । तुझ विन म्हारे जग सूनो जाया जननी जीत वराद ।।जंबू०।।१०।। रतन जड़ित रो पींजरो, माता सूवो जाणे सही फंद, काम भोग संसारना, माता ज्ञानी जाने झूठा फंद ।।जंबू०।।११।। पांच महाव्रत पालणो जबू, पांचोही मेरु समान दोष वयालिस, टालणो जंबू, लेणो सुजतो आहार ।।जं०।।१२।। पंच महाव्रत पालसुं माता पांचुंही सुख समान, दोष वयालिस टालसुं, माता लेसुं सुजतो आहार ।। माता० ।। १३ ।।

संजम मारग दोहिलो जंबू चलणो खाँडेरी धार।
नदी किनारे रुखड़ो जम्बू जद तद होय विनाश
॥जम्बू०॥ ॥१४॥ चाँद विना किसी चांदणी जंबू,
तारा विना किसी रात! बीर बिना किसी बैनड़ी,
जम्बू झुरसी बारतिवार॥जंबू०। १५॥ दीपक बिना
मन्दिर सूनो कंता, पुत्र बिना परिवार। कंत बिना
किसी कामणी, कता झुरसी बारोही मास। बाल-
मजी कह्यो मान लो, थेतो मत लो संजम भार॥
जं०॥१६॥ मात पिता मैलो मिल्यो, गोरी मिल्यो
अनती वार। तारण समरथ कोई नहीं गोरो, पुत्र
पिता परिवार! सुन्दर कह्यो सांभलो, म्हे लेमुं
संजम भार॥जं०॥१७॥ मोह मत करो मोरी मातजी
माता मोह किया वंधे कर्म ? हालर हूलर क्या
करो, माता मोह कीया वंधे कर्म॥मा०॥ १८॥
ये आठूंही कामिणी जंवू, सुख विलसो संसार।
दिन पाछो पड़िया पछे थे तो लीजो संजम भार॥
जं० ॥ १९॥ ए आठूंही कामिणी माता, समझाई

एकरण रात जिन जीरो धर्म पिछाणियो, माता संजम लेसी म्हारे साथ ॥मा०॥२०॥ मात पिताने तारिया, जंबू तारी छे आठुंहिनार सासु ससुरा ने तारिया जंबू पांचसे प्रभव परिवार। जंबू भलो चेतियो थेतोलीजो संजम भार ॥ मा० ॥ २१ ॥ पांचसै ने सत्ताइस जणासुं, जंबू लीनो संजम भार। इग्यारे जीव मुगते गया, साधूबाकी स्वर्ग मझार जंबू० ॥ २२ ।

॥ इति पदम् ॥

पूज्य श्रीलालजी महर्षिकी लावणी।

श्रीहुकम मुनि महाराज हुवे वड़भागी। महा-राज क्रिया उद्धार कराया जी। शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दिपायाजी॥ टेर ॥ उगणीसै छब्बीसे टोंक सहरके माहीं। महाराज पूज्यका जनम जो थाया जी। है ओस वंश वंब जिन कुल धन २ कहलायाजो चुनीलालजो पिता हरख वह

पाये, महाराज सर्वको अधिक सुहायाजी। धन्य चांद कुंवरजी मात जिन्होंने गोद खिलाया जी (उडावणी) है क्या बालपणामें सूरत मोहनगारी जो देखे जिस कूं लागे अतिही प्यारो। है छोटी वयमें संगत साधाको धारी। शुद्ध सरधा पामी मिथ्या मतको टारी। महाराज जैनका भक्त कहाया जी ॥ शिवलाल० ॥ १ ॥ फिर कीवी सगाई मात ओर भाईने, महाराज नार सुन्दर परणाया जी। है मान कुंवरिजी नाम रुप गुण सम्पन्न पाया जी फिर थोडा दिनांमें चढ़ा अतुल वैरागे, महाराज संजम लेवा चित चायाजी। नहि दीनी आज्ञा मात भैरव साधूको गायाजी (उडावणी) उगणी से वीसदूणा जो चारसालमें मुनि दीक्षा लीथी कोटेके साधनालमें। सब तजा जगत नहि आये मोह जालमें। नहीं लगा दिल आचार उनको चालमें। महाराज फेर चौथ मुनी पै आयाजी ॥ शिवलाल० ॥ २ ॥ उगणी से सैंतालीस साल

महा सुखदाई, महाराज चौथमें दिक्षा पाईजी। मुनि वृद्धिचन्दजी नेसराय शिक्षा सदगुरु फुरमाई जी। फिर संजम क्रिया पाले दिन २ चढ़ते, महाराज सूत्रको ज्ञान सिखाईजी। बहु बोल थोकड़ा, सीख वुद्धि अधकी दिखलाईजी (उडावणी) अठारे वरस उमरमें तज घर बारे, नहीं ममता किससे तजा सर्व संसारे, बहु संजम किरिया पाले शुद्ध आचारे, वे पंच महाव्रत मेरुपम सिरधारे। महाराज भव्य जीवां मन भायाजी ॥ शिवलाल ॥ ३ ॥ फिर केई वरसां लग ज्ञान गुरांसे लीना। महाराज साल सो बावन जाणोजी। क्या कातिक सुदी के मांह, शहर रतलाम पिछाणोजी। मुनि विनय वैयावच्च कर साता उपजाई। महाराज पूज्य मन अति हरखाणोजी! हे लेवो पूज्य पद आज स्वयं मुख इम फुरमाणोजी (उडावणी) जब गुरु आग्रहसें पूज पद मुनि लीनो। पूज मस्तक हाथ रख हित उपदेश बहु दीनो। मुनि शुद्ध भावसों

अमृत सम रस भीनो । चारो संघ सन्मुख भोला-
वण बहु दीनो, महाराज चौथ पूज्य स्वर्ग सिधा-
याजी ।। शिवला० ।। ४ ।। मुनि सम भाव शांति
मूरत है प्यारी । महाराज सम्पगुण अधको पाया-
जी । ये भक्तवच्छल मुनिराज सर्वको अधिक सुहा-
याजी । रतलाम शहर चौमासो पूरण करके महा-
राज फिर इन्दौर सिधायाजी । कई ग्राम नगर पुर
विचर बहु उपकार करायाजी (उडावणी) मुनि
जहां जावे तहां लागे सबको प्यारे । कथा अमृत
वाणी मूरति मोहन गारे । मुनि जहां विचरे जहां
करे बहुत उपकारे । तपस्या सामाइक पोसध व्रत
बहुधारे, महाराज भव्य मन बहु हुलसायाजी ॥
शिव० ।।५।।फेर साल अठावन नवे शहर पधारया
महाराजा जहांमें दरसण पायाजी, काई रोम २
हरखाय, हिया मेरा ऊमटायाजी । उस वखत थी
मेरे मनमें गुणकथ गाऊं, महाराज दिल मेरा लल-
चायाजी पिण थिरता नहीं थी, जिसमें नहीं कुछ

गुणकथ गायाजी (उड़ावणी) अब दीनदयाल दया निधि तुम हो मेरे, अब रखो हमारी लाज शरण हूँ तेरे । कृपाकर काटो लख चौरासी फेरे। दरशण कर पीछा आया फिर अजमेरे महाराज मनमें बहु पछतायाजी ।। शिव० ।। ६ ।। अठावने साल जोधाणे चौमासो कीनो, महाराज धर्मका ठाठ लगायाजी, उमराव मुसद्दी लोग वचन सुण बहु हरषायाजी, जहां बहु त्याग पचक्खाण खन्ध हुवा भारो महाराज जैनका धर्म दिपायाजी । अमृत सम वाणी सुणकै बहु जीव सरधालायाजी (उड़ावणी) फिर साल एक कम साठ बीकाणे चौमासो । श्रावक श्राविका धर्म्म ध्यान किया खासो, तपस्याका नहीं था, पार, झूठ नहीं मासो स्वमति परमति सुण बचन हुवा हुलासी, महाराज भव्य जीव केइ समझायाजी ।। शिवला० ।। ७ ।। फिर साल साठके उदयपुर चौमासो, महाराज मुलक मेवाड़ कहायाजी, जहां लगन धर्मकी बहुत

जिन वचना चितलाया । जहां राज मुसद्दी अहलकार केई आये, महाराज दरशनकर प्रश्न थायाजी । फिर दिया खूब उपदेश जैन झण्डा फररायाजी (उड़ावणी) फिर साल इकाष्ठे टोंक चौमासो ठायो । जहां हुआ बहुत उपकार कै आनंद पायो । सब श्रावक श्राविका धर्मकरण हुलसायो । बहु हुआ त्याग पच्चक्खाण सर्व मन भायो । महाराज जन्म भूमि कहलायाजी ॥ शिव० ॥८॥ फिर साल बासठे जोधाणे चौमासो, महाराज दूसरी वार करायोजी यह बचन अमोलख सुनकै भव्य जीव बहु हरषायोजी । जहां दया सामायक हुआ बहुत सा पोसा महाराज खंध कितना ही उठायोजी । तपस्या सम्वर नहीं पार भविक मन बहु लोभायोजी (उड़ावणी) फेर स्वमति परमति प्रश्न पूछणकू आवै । वहु हेत जुगत भिन्न२ करके समझावै । वलिनय निक्षेप प्रमाण जो खूब बतावै नहीं पक्षपातका काम है सरल सावै । महाराज

वचन सुण सब हुलसायाजी ॥ शिवलाल० ॥९॥
फिर साल तेसठे रतलाम आप पधारे महाराज, श्रावक श्राविका मनभायाजी । ये वचन पूज्यका अरज पूज्यसें आण मनायाजी । की चौमासे की अमृत सम नित वरसै, महाराज सुणन सहु मन ललचायाजी । दीवान मुसद्दी और राज अहलकार केई आयाजी (उड़ावणी) जहां मुसलमान केई वखाण सुणवा आये । उपदेश पूज्यका सुणकर बहु हरषाये । जहां मद्य मांसका त्याग किया शुद्ध भावें । फिर ठाकुर पचेडे काकूं शिकार छुडाये महाराज जैन पर भावक थायाजी॥शिवला०।१०॥
फिर कर चौमासो भाण पुरे पधारे । महाराज भव्य जीव बहु हरषायाजी । एक ठाकुरको समभाय वदद सेरा बचायाजी । फिर केई जाल मछ०ांका वन्द करवाये । महाराज अतिसय गुण अधिका पायाजी । कांई सूरत देख दिलमस्त हुवै धर्म चित लायाजी । (उडावणी) जो वखाण सुणवा एक

बार कोई जावै । फिर नहीं कहणेका काम, तुरत चल आवै। उपदेश सुणके दिल उनका हुलसावै करै आपसुं पच्चक्खाण त्याग मन भावै। महाराज आपका गुण बहु छायाजी ।। शिवला० ।। ११ ।। फिर कोटेसे अजमेर जो आप पधारे महाराज नव-ठाणे से आयाजी। बहु हाव भावके साथ चौमासौ जाण मनायाजी। अजमेर पधार्या सुणके जटमें आया। महाराज दरशणकर प्रशन थयाजी। हुवो हरख हिये उल्लास जोड़ कथ गुणमें गायाजी (उडा-वणी) कहे लाल कन्हैया बीकानेरका वासी। अज-मेर लावणी जोड़के गाई खासी। चौसठ साल आसाढ़ एकम सुदी भासी। सब श्रावक श्राविका सुणके हुआ हुलासी। महाराज पूज्यका जस सवा-याजी। शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दिपायाजी ।।१२।

।। इति सम्पूर्णम् ।।

॥ चौबीस तीर्थंकरका तवन ॥

जै जिन ओंकारा, प्रभु रट जिन ओंकारा, जामण मरण मिटावो प्रभुजी, कर भवोदधि पारा ॥ जै जिन ओंकारा० ॥ केवल लोक अलोकं, प्रभु तीर्थकर पद धारा । प्रभुतो०॥ तिलोक दयाल, जग प्रति-पालं, गंभीर भारा ॥ जै जिन ओं०॥१॥ कर्म्मदल खण्डण, सिव मग मण्डण, चन्दण जिम शीलं ॥ प्रभु चं० ॥ छवकायाना रक्षण, मनरूपी भक्षण, ततक्षण अमीलं ॥ जय जि० ॥ २ ॥ श्रीऋषभ अजित शंभव अभिनन्दन, शांती करतारा ॥ प्रभु शांति क०॥ सुमति पदम सुपास चन्दा प्रभु चन्दर जत हारा ॥ जै जिन० ॥३॥ सुविध शीतल श्रेयांस वासु पूज्य स्वामी । प्रभू वासु पूज्य स्वामी । विमल अनन्त श्री धर्म शांतजी, सायर गंभीरा ॥ जैन जिन० ॥४॥ कुंथु अरि मल्ली मुनि सुव्रतजी तीन भवन स्वामी ! प्रभु तीन भ० ॥ नमि नेम पारस महावीरजी, पञ्चम गति गामी ॥ जै जिन ओं ।५।

गौतमादिक गणधर, गणधर मुनि सेवा ।। प्रभु गण० ।। बखाण सुणन्ता मन आनन्दा, जो नर ले मेवा ।। जै जिन० ।।६।। जीव अराधे जिनमत साधे पामे सुख ठामं ।। प्रभु पामे० ।। नन्दलाल तेही गुणगावे, जो जिन लै नामं ।। जौ जिन० ।।७।।

।। इति पदम् ।।

-※※-

श्री सीमन्धर जीरो स्तवन

श्री श्री सीमंधर सांम; इकचित बंदू हो बेकर जोड़ने, पूरब देसे हो प्रभुजी परवय्या, नगरी पुण्ड-रपुर सुखठाम बेकर जोड़ी हो, श्रावक बीनवे, श्री सीमंधर स्वाम ।। इकचित बंदूहो बेकर जोड़ने ।।१।। चौतीस अतिशय हो प्रभुजी शोभता, वाणीपनरे ऊपर वोस, एक सहस लक्षण हो प्रभुजी आगला जाता रागनेरीस ।। इक० ।। २ ।। काया थारी हो धनुप पांचसै, आउखो पूर्व चौरासी लाख निरवद्य

घणी हो श्रीवीतरागनी, ज्ञानो अगम गया छे साख ।।इक०।।३।। सेवा सारे हो थारी देवता, सुरपति थोड़ा तो एक करोड़ मुझ मन माहें हो, होस बसे घणी, वन्दू बेकर जोड़ ।। इक० ।। ४ ।। आड़ा परवत हो नदियां अति घणी, बिचमें विकब विद्याधर ग्राम, इणभव मांहे हो आय सकूं नहीं, लेसुं नित्त उठ थारो नाम ।।इक०।।५। कागद लिखूं हो प्रभु थांने बिनतीं, वन्दना बारम्बार। कुन्दन सागर हो कृपा कीजिये, बीनतडो अवधार ।।इक०।।६।।

।। इति पदम् ।।

—✲✲—

श्री १००८ श्रीपूज्य श्रीजवाहिरलालजी महाराजका स्तवन

भज भज ले प्यारे पूजने, मोहे जाल हटाया ।। टेर पंच महाव्रत पाल आपने, आतम अपनी तारी ।। तारी रे तारी, हां, तारी रे तारी ।। भज० ।। १ ।। षट कायाके पीहर आप हैं, पर उपकारी भारी।

भारी रे भारी हां, भारी रे भारी ॥ भज० ॥ २ ॥
शीतलचन्द्र समान सोभते, गुण रत्नोंके धारी।
धारीरे धारी, हां, धारीरे धारी ॥ भज० ॥ ३ ॥
पाखण्ड खंडन जिन मत मंडन भवजीवनका तारी।
तारीरे तारी हां तारीरे तारी ॥ भज० ॥ ४ ॥
दयाधर्म प्रचार आपन करदीना है जारी।
जारीरे जारी, हां जारी रे जारी ॥ भज० ॥ ५ ॥
समन उन्नीसे साल पच्चासी, अगहन मासके माई।
माई रे माई, हां माई रे माई ॥ भज० ॥ ६ ॥
मङ्गल अरज करे पूज्य थाने, शहर पधारन तांई।
ताई रे ताई हां, ताई रे ताई ॥ भज० ॥ ७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

—◇◇—

❀ दोहा ❀

सासणपति श्रीवीर जिन, त्रिभुवन दीपक जाण।
भवउदधीतारणतरण, वाहण सम भगवान ॥१॥
चरण कमल युग तेहना, वन्दे इन्द दिनेन्द।

चन्द नरिन्द फनिन्द सुर, सेवें सुर नर वृन्द ॥२॥
तासु कृपासों उद्धर्‌या, जीव असंख्य सुज्ञान ।
लहि शिव पद भव उदधि तरि, अजर अमर सुख धान।
तस मुख थी वाणी खरी, जिम श्रावण बरसात ।
अनत आतमज्ञान थी भवि जन दुःख मिटात ॥४॥
ते वाणी सद्‌गुरु मुखे, ते भवि हृदय धरन्त ।
स्वपर भेद विज्ञान रस, अनुभव ज्ञान लहन्त ॥५॥
उत्तम नर भव पायकर, शुद्ध सामग्री पाय ।
जो न सुणे जिण वचनरस, अफल जमारो जाय॥६॥
ते माटे भवि जीव कूं, अवश उचित ए काज ।
जिनवाणी प्रथमहि श्रवण, अनुक्रम ज्ञान समाज ॥७
जिनवाणीके श्रवण विन, शुद्ध सम्यक् न होय ।
सम्यक बिण आतम दरश, चारित्र गुण नहि होय ॥८
शुद्ध सम्यक् साधन विना, करणी फल शुभ बन्ध ।
सम्यक रतन साधन थकी, मिटे तिमिर सविधन्ध ॥९
सम्यक्त भेद जिन वचनमें, भेद पर्याय विशेष ।
विण मुख दोय प्रकार है, ताको भेद अलेख ॥१०॥

निश्चै अरु व्यवहार नय, ये दोनों परिमाण ।
दधि मथने घृत काढ़वा, तेतो न्याय पिछाण ॥११॥
देव धर्म गुरु आसता, तजे कुदेव कुधर्म ।
ये व्यवहार सम्यक्त कहि, वाह्य धर्मनो मर्म ।१२॥
निश्चै सम्यक्त नो सही, कारण छे व्यवहार ।
ये समकित आराधता, निश्चेपण अवधार ॥१३॥
निश्चै सम्यक जीवने, पर परणति रस त्याग ।
निज स्वभावमें रमणता, शिव सुख नोए भाग ।१४
बहु सम्यक्त तदलहे, समझे नव तत्वज्ञान ।
नय निक्षेर प्रमाणसुं, स्यादवाद परिणाम ॥१५॥
द्रव्य क्षेत्र इणही तणा, काल भाव विज्ञान ।
सामान्य विशेष समझते, होय न आतम ज्ञान ।१६

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

—※—

श्री १००८ मुनि श्री श्री गणेशीलालजी महाराजका स्तवन ॥

(तर्ज—सियाराम बुला लो अयोध्या मुझे)

स्वामी दया धर्म सुनादो मुझे ।
गणेशीलाल मुनी तुम तारो मुझे ॥

शेर–शीतल चन्दर शोभते, जिम गगनमें तारा जिहां
मोहनी मूरत देखके, हुलसा रहा मेरा हिया ॥
गुरु सत्य धर्म सिखा दो मुझे ॥ स्वामी० ॥१॥

शेर–आज्ञापूज्य का धारके तुम, चूरुमें आये हियां ।
देशना भवि जीवकूं दे, तारते उनका जिया ॥
ऐसे दीनबन्धु तुम तारो मुझे ॥स्वामी० ॥२॥

शेर–जीवकी रक्षा तणी, उपदेश करते आविया ।
नमस्कायके सत्य प्रेमसे दया धर्मको फैला दिया ॥
दया धर्मकी राह बतादो मुझे ॥ स्वामी० ॥३॥

शेर–व्याख्यान सुनवा आपका कइ आवे नर व नारियां
रामचारितकी छटा दया धर्म चितमें लाविया ॥
षट जीवके रक्षक तारो मुझे ॥ स्वामी० ॥४॥

शैर–सम्बत उनीसे पच्यासिमें ·चौमास चुरु ठाविया।
दरशन करवाआपकामैं,शहर वीकाणेसे आविया
मगल अरज करे गुरु तारो मुझे ।।स्वामी०।५।
।। इति पदम् ।।

—△—

।। पूज्य श्री १००८ श्री श्री जवाहिरलालजी ।।
।। महाराजका स्तवन ।।

पूज्य श्री ने ध्यावियेजी, नाम जवाहिरलालजी।
शांति मुद्रा देखनेजी हरष हुआ नरनार जिनन्द–
राय कीधा हो, दर्शन मार।। टेर ।।

देश मालवे मांयनेजी, शहर थांदल गुलजार
ओसवंश में ऊपनाजी, जात कुवाड विख्यात।जि०।
।।१।। पिता जीव राजजी माता है नाथी नाम।
धन्य जिनोरी कूख अवतर्या, ऐसे वाल गोपाल ।।
कि० ।। २ । सम्वत बत्तीसमें जन्मीयाजी, दीक्षा
अड़चासे मांय । चढ़ता भावासु आदरीजी मगन
मुनीपें आय ।। जि० ।। ३ ।। दस छ्रवकी वयमेंजी,

कीनो ज्ञान उद्योत । पंचमहाव्रत निरमलाजी पाल रहा दिनरात ।। जि० ।। ४ ।। तेज सूर्य सम है सही जी, शीतल चन्द्र समान । मुख देखो सुख उपजेजी, रटता जय जयकार ।। जि० ।।५।। धर्म बुद्धि धारी देखनेजी; पाखण्ड जीव कंपाय। अमृतवाणी सुणनेजी, मिथ्या देने निवार ।। जि० ।।६।। भवि जीवाने तारतां जी आय बीकाणे पास । नवीलेनने तारनेजी, कीजो मेहर महाराज ।। जि० ।। ७ ।। आशा करे सहु शहरमेंजी जैसे पपीहो मेघ। कल्प वृक्ष सम सोवताजी मेहर कीजो महाराज जि० ।। ८ ।। सम्वत उगनीसे मांयनेजी, साल चौरासी जाण । मंगलचन्द थ ने बीनवेजी त्रिविधि शीश नमाय ।। जि० ।। ९ ।।

।। पूज्य श्री १००८ श्री श्रीजवाहिरलालजी ।।
।। महाराज का स्तवन ।।

(तर्ज—सियाराम बुलालो अयोध्या मुझे)

पूज्य ज्ञान तुम्हारा सिखा दो मुझे ।
अपने चरणोंका दास बनालो मुझे ।।पुल।।१।।

शैर—पंच महाव्रत पालते, करते तो उग्र बिहार हैं ।
षट जीवोंके लिये, करते फिरे उपकार हैं ।।
आया तोरी शरण प्रभु तारो मुझे ।।पु०।।२।।

शैर—पंच सुमति पालते और तीन गुप्ति धारके ।
शिष्य मण्डली को लिये भवि जोव तुम हो तारते
ऐसे पूज्य गुरू अब तारो मुझे ।। पु० ३ ।।

शैर—दोष बयालिस टाल पूज्य, आहार सूजतलात है
आत्माको तार अपनी, शिष्यको सिखलात हैं।।
धन्ये ! पाप कर्मोंसे बचावो मुझे ।।पु०।।४।।

शैर—शहर बीकाणेकी है अरजी,मेहर जल्दी कीजिये
आशा करे सब संघ स्वामी,दर्श जल्दी दीजिये।।
अपनी भक्तिकी लौ में लगालो मुझे ।।पु०।५।।

शैर-कर्मको काटो प्रभू, इस धर्मरूपी तेगसे ।
संघ तो इच्छा करै, जैसे पपीहा मेघ से ॥
डूबे जाता हूँ नाथ बचालो मुझे ॥ पु० ॥६॥
शैर-विनती करे करजोडके यह दास मंगलचंद है।
हुक्म जल्दी दीजिये,मुखसेजो अबतक बन्द है ।
जिससे बहुत खुशी अब होय मुझे ॥पु०॥७॥

इति सम्पूर्णम्

!! पूज्य श्री जवाहिरलालजी का स्तवन॥

पूज्य जवाहिरलालजी स्वामी,अन्तर्यामी शिव मुख गामी, तारो दीनानाथ ॥ टेर ॥

अरज करूं मैं थाने पूज्यजी, हरष हुवो है अपार । सम्वत बत्तीसमें जन्म लियोथे,शहर थांदले मांय हो ॥ पू० ॥१॥ पञ्च महाव्रत सोहे पूज्यजी, करता उग्रविहार । दोष बयालिस टाल मुनीश्वर। लावो सुजतो, आहार॥ पू० ॥ २ ॥ कामधेनु सम आप पूज्यजी, सर्वभणो सुखदाय । दरशन करके प्रसन्न होवे, सारोलोक संसार हो ॥ पू० ॥ ३ ॥

ठाणावारेसुं सोवो पूज्यजी गुण रतनोंकी माल। महिमा आपकी कहांतक कहूँ कहत न आवे पार हो ।।पू० ।४।। प्रश्न पूछै थांने पूज्यजी स्वमती अन्य मति कोय। शान्ति पणेसुं जवाब देवोथे, सामलो शीतल थाय हो ।। पू० ।। ५ ।। सम्बत उगनीसे मॉय पूज्यजो, साज सतीन्तर थाय। दूजा श्रावण बदी दशमी कांई मगलचन्द्र जस गायहो ।।पूज्य।। ।। ६ ।। ।। इति सम्पूर्णम् ।।

—※※—

। अथ सर्व सिद्धप्रद स्तोत्रम् ।

बिमल सयल मणोहरं, नमि ऊणं चरणं जिन वराणं।। वइस्सं तणुताणुत्तं, सुहसिद्धियं भवि हिय ट्ठाए ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं उसभोसिर—मवउ ॐ एं क्रों वि अजिओ भालं, ॐ श्रीं संभवो नेत्तं पाउ सया सव्व सम्मदोय ।। २ ।। धाणिंदियं सव्व या, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिरि अभिनन्दणो ।। वच्छ–

अं पाउ सुमई ॐ कण्णं ॐ ह्लों च पउ मप्प हो ॥ ३ ॥ कंठसंधितु रक्खउ, ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं सुपास जिणवरो मे ॥ खंधं पुण पाउ मज्झ, ॐ ह्लीं श्रीं जिणचंदप्प हो ॥ ४ ॥ ॐ क्रों सुविधि बुद्धि, अवउ सिज्जंस वासु पुज्जो करजं ॥ विमल जिणो उयरंमें ॐ ह्लीं श्रींवण संकलिवो ॥५॥ ॐ ह्लीं धम्मो जघं पिट्ठं मल्लि मल्लि कुसुमकोमलो ॥ सदय मुणिसुव्वयोहियं,कुंथू करेगोवं अरो श्रीं ॥६॥ ॐ श्रां श्री नमी कक्ख ना सा रोग हरउ ह्लीं श्रीं नेमो ॥ अणंत पासो गुज्झ रोगं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुकलियो ॥ ७ ॥ ॐ श्रीं तिल्लोक वसं कुरु कुरु वद्धमाणा महावीरो ॥ सव्व मंगल सुह करो चिंतामणि सुरतरुव्व फलाओ ॥ ८ ॥ सव्वे जिण गण हरा अंगरोमाई मज्झ रक्खंतु ॥ ॐ ह्लीं श्रीं सीयल पहू, सव्व सत्तु सिढिल कुरु ॥ ९ ॥ ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं ह्लीं, संती स य संपयं मज्झ कुणउ समिद्धि ॥ ॐ ह्लीं ऐं मंदर पमुहा होंतु

कामधेणुब्ब ॥ १० ॥ पुज्ज जवाहिरलालो गुणं विसालो गणप्पहू गरिमोय ॥ तउ सब्ब सिव मंगलं भवउ मज्झाणं जिणगुरू चंदो ॥ ११ ॥

यह स्तोत्र १०८ अथवा २७ बार प्रातः काल निरंतर जपना चाहिये ।

पूज्य श्री १००८ श्री श्री श्रीलालजी महाराजका गुण स्तवन

पूज्य श्रीलाल गुणधारी । सितारे हिन्दमें दीपे जपो नरनार तन मनसे । सितारे हिन्दमें दीपे टेर ॥ तजा संसार जान असार । लिया संयम भार महाव्रत में धार चले संजमखाडा धार । सितारे हिन्दमें दीपे ॥ १ ॥ धन्य आचार्य पद पाये। चतुर्विधि संघ दीपाये । पञ्चमें पाट शोभाये । सितारे हिन्दमें दीपे ॥ २ ॥ आतमा रूप सोनेको। तपस्याग्निमें शुद्ध करके । अतिशय धारि वन करके सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ३ ॥ देश विदेश विचर करके । श्रीसंघ रूप वगीचेको । ज्ञान घट शांति-

जलसे सींच। सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ४॥ जहां जाते वहां लगतो धूम। जय २ धर्मको होती। विचर कर आये जेतारन। सितारे हिन्दमें दीपे ।५॥ अंतिम वाणी अमी देकर। आषाढ़ सुदि तीज दिन आया। सिधाये स्वर्ग पूज्य श्रीलाल। सितारे हिन्दमें दीपे। जपो श्रीलाल गुणमाला। पापका मुख होवे काला। दुर्गतिके लगे ताला। सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ७॥ कल्पतरु स्थान कल्पतरु ही। हीरेकी खानमें हीरा। छटे पाट पूज्य जवाहिरलाल सितारे हिन्दमे दीपे ॥ ८ ॥ उन्नीसे साल चौरासी। मास आसाढ़ शनिचर तीज। मुनी पन्नालाल बीकानेर। सितारे हिन्दमें दीपे॥६।

महावीर स्वामीका स्तवन

श्रीमहावीर स्वामीकी सदा जय हो, सदा जय हो सदा जय हो।टेर।

पवित्र वदन त्रिशलाकी सदा जय हो सदा जय हो. [illegible] दुर्गों हो वीर देव—

म्बर, तुम्हीं ब्रह्मा तुम्हीं विष्णु । स० १ ।। तुम्हारे ज्ञान खजाने की महिमा बहुत भारी है लुटानेसे बढ़े हरदम ।। स० २ ।। तुम्हारी ध्यान मुद्रासे, अलौकिक शांति झरती है, सिंह भी गोद पर सोते ।। स० ३ ।। तुम्हारी नाम महिमासे जागती वीरता भारी हटाते कर्म लश्करको ।। स० ४ ।। तुम्हारा संघ सदा जय हो, मुनि मोतीलाल सदा जय हो ।। जवाहिरलाल पूज्य गुरुराय, सदा जय ।। स० ५ ।। इति

पार्श्व प्रभुका स्तवन

मंगलं छायाजी म्हारे पार्श्व प्रभुजी मनमें आयाजी ।। टेर ।। फटिक सिंहासन आप विराजे, देव दुन्दुभी बाजेजी ।। इन्द्राणियां मिल मंगल गावे, यश जिन गाजेजी । मां० ।।१।। चामर छत्र पुष्पकी वृष्टि, भूमण्डल चमकावेजी ।। अशोक वृक्ष शीतल छाया तल भवी सुख पावेजी ।। म० ।। ।। २ ।। सागर क्षीरका नीर मधुर अति, रसायन

अधिक सुहावेजी ॥ अमृतसे अति मधुर वाणी, प्रभु बरसावेजी ॥ मं० ३ ॥ नम्र देवता मुकुट हृचित मणि, किरण चरण जिन छावेजी ॥ अजिब छटा मृग तृणहि समज, जिन चरणे लुभावेजी॥मं० ।४॥ सिंहनाद करे यदि योद्धा वृन्द, सुन हस्ती घबरावेजी । सिंहाकार नर पीठ लिखित, हस्ती रोग मिटावेजी ॥ मं० ५ ॥ तैसे प्रभुके नामको सुन मेरे, विघ्न सभी भग जावेजी, रिद्धि सिद्धि नव निधि संपदा । मुझ घर आवेजी ॥ मं० ६ ॥ आप नाम मेरे घरमे मंगल, [illegible] सदाकाल मेरा [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] सिद्धि प्रगटावेजी [illegible] जावेजी ॥ मं० ८ [illegible]

मुनि जवाहिरलाल पूज्य, चित्त सुहायाजी ।। मां० ।। १० ।। उगणीसे अण्टोत्तर सालमें तास गांवमें आयाजी ।। घासीलाल मुनि गूढ़ी पडिवा दिन, मांगल पायाजी ।। मां० ११ ।।

गौतम स्वामी का स्तवन

मांगल बरतेजी म्हारे गौतम गणधर, मनमें बसतेजी ।। टेर १ । धन्नाशालिभद्रकी ऋद्धि, और अष्ट महा सिद्धीजी, गौतम नामसे प्रगटे म्हारे, नव विध निधिजी ।। मां० २ ।। लब्धिके भण्डार ज्ञानके गौतम हे आगरजी, आप नाम म्हारे सब सुख बरते मांगला चारेजी ।। मां० ३ ।। आप नाम अति आनन्दकारी, चिन्ता दुख झट भाजेजी, सुख संपतका मांगल बाजा मुझ घर वाजेजी ।। मां० ४ । नाम कल्पतरु म्हारे आंगन, दारिद्रय भग जावेजी, मन वांछित म्हारे रिद्धि सम्पदा घरमें आवेजी ।। मं० ५ ।। अमृत कुंभ में पाया चिन्तामणो, दुःख गया सब भागोजी, अमृत

सम मीठे गौतम तुम, मनशा लागोजी ॥ ६ ॥ मन कमल तुम नाम हंस है, बैठा अति सुखकारेजी, हर्षित प्राण हुवे सब मेरे, अपरंपारेजी ॥७॥ किसी बातकी कमी न मेरे, गौतम गणधर पायाजी, तीन लोककी लक्षमी मुझ घर, वास बसायाजी ॥ म० ८ ॥ मोतीलाल मुनि पूज्य श्री० श्री० जवाहिरलालजी मन भायाजी छठे पाट पर आपविराजे मगल छायाजो ॥ मं० ९ ॥ समत उगनीसे साल सितहन्तर शहर सतारे आयाजो, घासोलाल मुनि सप्तमी सावण, गुरु शुभ पायाजो ॥ १० ॥

शांतिनाथ प्रभुका स्तवन ॥

शान्ति जिनेश्वर शाताकारी, मुझ तन मन हितकारी ॥ टेर ॥ शांतिनाम मुझ तनमें अमृत रस सम है सुखकारी, तनकी वेदना गई सब मेरी मुझ मन है अविकारी ॥ शांति १ ॥ रोम रोममें हर्ष भरा मेरे, लो चाहूं घर द्वारो, फला कल्पतरु निज आंगन प्रभु, तुही मुझ सुख गुल पधारो

।। शा० २ ।। आत्म ध्यान प्रगटा मुझ तनमे मिटी दशा अंधियारी, गगन चन्द्र संयोग मिटाना, निजगत तम जिमि भारी ।।शांति ३।। ओं ह्रीं त्रैलोक्य वशं कुरु कुरु शान्ति सुखकारी, इम विध जाप जपे जिनवरका कोटी विघ्न निवारी ।। शांति ४ ।। डाकिनी साकिनी तस्कर आदि, भागत भय पर पारी, पिशुन मान मर्दन मेरे प्रभुजी, सेवक नव-निध धारी ।।शान्ति ।।५।।पूज्य ज्वाहिरलाल विराजे छटे पाट सुखकारी, घासीलाल गुरुवार ज्येष्ठमें, पारनेर किया त्यारी ।। शांति ६ ।।

—✲✲—

शांतिनाथ प्रभुका स्तवन

संपति पायाजी म्हारे शांति नामसे सब सुख छायाजी लक्ष्मी पायाजी, म्हारे शांति नाम नव निध घर आयाजी ।। टेर ।। आप पधारे गर्भ-वास तीनों लोकमें बहु सुख छायाजी, माता महल चढ़ी निरखे नाथ, मृगि मार मिटाया जी ।।सं०१।

शांति करो सब शांति नाम प्रभु, महावीरजीने गायाजी ।। अमृत सम भावे हृदय कमलमें, आप सुहायाजी ।। सं० २ । शांति नाम चिन्तामणी मुझ घर, वांछित सब सुख करतेजी ।। लक्ष्मीसे भण्डार प्रभूजी मुझ घर, भरते जी ।। सं० ३ ।। गरुड़ पक्षी सम शांति नाम, मुझ घर हृदय बसतेजी, दुःख रोग सम भुजंग भागते मंगल वरतेजी । सं० ४ ।। शांति नाम मैं पाया तभीसे, मुझ घर अमृत बरसेजी, मंगल बाजा मुझ घर बाजे मुझ मन हरखेजी ।। सं० ५ ।। चिन्तामणी पुनि काम धेनु मुझ, आंगन दूध पिलावेजी, मुझ घर नवनिध पारस प्रगटे संपत आवेजी । सं० ६ ।। ह्रीं त्रैलोक्य वशं कुरु कुरु मुझ कमला आवेजी दिन दिन मुझ घर सब सुख बरते दुश्मन जावेजी ।। सं० ७ ।। शांति नामसे ही जहां जाता मैं काम सिद्ध कर आताजी, सुख ही सुखमें [illegible] निश दिन गाता गाताजी ।। सं० ८ ।। शांति [illegible]

जो नर गावे रोग शोक मिट जावेजी, राज लोकमें महिमा मन्त्र जप सुख घर पावेजी ॥सां०९॥ मोतीलाल मुनि पूज्य जवाहिरलाल मुनिमन भावेजी। सदाकाल दीवाली मुझ घर, सब सुख आवेजी ॥सां० १०॥ संवत उगणोसे साल अष्टोत्तर, चारोली सुख पायाजी घासीलाल मुनि दीवाली दिन मन हर्षायाजी ॥ सां० ११ ॥

—✲✲—

चौदह स्तवन

दसमां स्वर्ग थकी च्यव्याजा चौबीसवां जिनराज चौदह सपना देखियाजी त्रिशला देवीजी माय, जिनन्द माय दीठा हो सुपना सार ॥टेर१॥ पहिले गयवर देखियाजी, सूण्डा दण्ड प्रचण्ड। दूजे वृषज देखियाजी धोरा धोरी सण्ड ॥जि०॥२॥ तीजो सिंह सुलक्षणोंजी करतो मुख आवास। चोथो लक्ष्मी देवताजी, कर रह्यो लोल विलास ॥जि०॥३॥ पंच वर्ण कुसमा तणोंजी मोटो देखा

फुलमाल । छट्ठो चन्द उजासियोजी अमिय झरंत रसाल ॥४॥ सूरज उग्यो तेज स्युञ्जी, किरण झांक झमाल ॥फरकती देखी ध्वजाजी ऊंची अति असराल ॥ जि० ॥ ५ ॥ कुम्भ कलश रत्नां जड़-योजी, उदग भरयो सुविशाल । कमल फूलांको ढाकनोजी नवमो स्वप्न रसाल ॥ जि० ॥ ६ ॥ पद्म सरोवर जल भरय्योजी, कमल करी शोभाय । देव देवी रंगमें रमेजी दीठा ही आवे दाय ॥ जि० ॥७॥ क्षीर समुद्र जल भरयोजी तेनो मीठोवार। दूध जिस्यो पानी भरयोजी, जेह नो छेह न पार ॥जि०॥८॥ मोत्यां केरा झूमकाजी, दीठोदेव विमान देव देवी रंगमे रमेजी, आवंता असमान ॥जि०॥९॥ रत्नां री राशी निर्मलीजी दीठो सुपन उदार । दीठो सुपनों तेरहवोंजी हिये हरष अपार ॥जि० ॥१०॥ ज्वाला [illegible] दीपनी [illegible], अग्नि शिखा बहु [illegible] ॥ [illegible] सुपना सूं हित ॥ [illegible] ॥११॥ [illegible] [illegible] पहना

राजन पास। भद्रासन आसनदीयोजी, दीनो छे आदर-सन मान सुकारण तुम आविया जी को थोरे मनड़ेरी बात ॥ जि० ॥१२॥ आज मारे आंगन सुरज दर पड़या जी पड़यो छे वंछित काज चौदह सुपना मै दीठाजी ज्योंरो अर्थ करोनी पृथ्वीनाथ ।जि०॥१३। सुपना सुण राय हरषियोजी कीनो स्पप्न विचार । तीर्थंकर तुम जनमस्योजी हम कुलनो आधार ।जि० ॥१४॥परभाते पंडित तेड़ियाजी कीनो स्वप्न बिचार तीर्थंकर चक्रवर्ती होसीजी, तीन लोकनो आधारजि० ॥१५॥पंडिताने बहुधन दियोजी बसतरने फूलमाल। गर्भ मास पूरा थयाजी, जन्मा है पुण्यवन्त बाल ।जि० १६॥ चौसठ इन्द्र आवियाजी, छप्पन दिसाकुमार अशुचि कर्म निवारनेजो, गावे मगलाचार ॥जि० १७॥ प्रतिबिम्ब घरमे धरियोजी माताजीने विश्वास शक्रेन्द्र लियो हाथमेंजी,पंचरूप प्रकाश ।जि०।१८॥ एक शक्रेन्द्र लियो हाथमेंजी, दोय पासे चंवर ढुलाय । एक वज्र लई हाथमेंजी, एक छत्र कराय ॥जि० ॥१९॥ मेरु शिखर नव रावियाजी, तेनो बहु विस्तार। इन्द्रादिक सुर नाचियाजी, नाची है

बत्तीसमें जन्मीयाजी, दीक्षा अड़चासे मांय ! चढ़ता भावसुं आदरीजी, मगन मुनि पै आय । जि० ।३।। दस छवकी बयमेंजी, कीनो ज्ञान उद्योत । पञ्च महाव्रत निरमलाजी पाल रहा दिन रात ।।जि०।४।। तेज सूर्य सम है सहीजी, शीतल चन्द समान मुख देखा सुख उपजेजी, रटता जै जैकार ।।जि०।। ।। ५ ।। धर्म बुद्धि थारो देखनेजी पाखंड जाव कंपाय। अमृत बाणी सुणनेजी मिथ्या देवे निवार ।। जि० ।। ६ ।। भवी जीवांने तारतांजी, आया बिकाणे पास । नवीलेन ने तारनेजी, कीजो मेहर महाराज ।। जि० ।।७।। आशा करे सहु शहरमेंजी जैसे पपैयो मेघ । कल्प वृक्ष सम सोवताजी, मेहर कीजो महाराज ।।जि०।।८।। सम्वत उन्नीसे मांयनेजी, साल चौरासी जाण । मंगलचन्द थाने वीनवेजी त्रिविध शीश नवाय ।। जि० ।। ९ ।।

—△—

।। शान्तिनाथ स्वाध्याय ।।

प्रात उठ श्री संत जिणंदको, समरण कीजै घड़ी घड़ी ।। सकट कोटि कटे भव संचित, जो ध्यावै मन भाव धरी ।।प्रा०।। ए आंकड़ी।। जनमत पाण जगत दुख टलियो, गलियो रोग असाधमरी ।। घट-घट अंतर आनंद प्रगटय्यो, हुलस्यो हिवड़ो हरष धरी ।। प्रा० ।।१।। आपद वित्र विषम भय भाजै, जैसे पेखत मृगहरी ।। एकण चितसुं सुध बुध ध्याता, प्रगटे परिचय परम गिरी ।।प्रा० ।।२।। गये विलाय भरमके बादल, परमार्थ पद पवन करी ।। अपर देव एरंड कुण रोपे, जो निज मंदिर केलफली प्रा० ।। ३ ।। प्रभु तुम नाम जप्यो घट अन्तर, तो नु [illegible] कर्म [illegible] । रतन चन्द सीतलता व्यापी, पायो नाथ [illegible] टली ।। प्रा०।।४।।इति।।

॥ शांतिनाथ स्तवन ॥

तुं धन तुं धन तुं धन तुं धन, शांति जिणेश्वर स्वामी॥ मिरगी मार निवार कियो प्रभु सर्व भणी सुख गामी॥ तुं धन ॥१॥ ए आंकडी॥ अवतरिया अचलादे उदरे, माता साता पामी संत ही साथ जगत बरताई, सर्व कहे सिरनामी ॥ तुं धन ॥२॥ तुम प्रसाद जगत सुख पायो भूले मूढ़ हरामी ॥ कचन डार कांच चित देवे, वाकी बुद्धिमें खामी ॥ तुं धन ।४॥ अलख निरंजन मुनि मन रंजन, भय भजन विसरामी ॥ शिवदायक नायक गुण गायक, पाव कहै शिवगामी ॥ तुं धन ॥४॥ रतनचन्द प्रभु कछुअन मांगे, सुणतूं अन्तरजामी ॥ तुम रहेवानी ठौर बताओ, तौ हूँ सहु भरपामी ॥ तुं धन । ५ ॥ इति ॥

—◇◇—

।। शांतिनाथ स्तवन ।।

तुं धन तुं धन तुं धन तुं धन, शाति जिणेश्वर स्वामी।। सिरगी मार निवार कियो प्रभु सर्व भणी सुख गामी।। तुं धन ।।१।। ए आंकडी।। अवतरिया अचलादे उदरे, माता साता पामो संत ही साथ जगत बरताई, सर्ब कहे सिरनामी ।। तुं धन ।।२।। तुम प्रसाद जगत सुख पायो भूले मूढ़ हरामी ।। कचन डार कांच चित देवे, वाकी बुद्धिमें खामी ।। तुं धन ।४।। अलख निरंजन मुनि मन रंजन, भय भजन विसरामी ।। शिवदायक नायक गुण गायक, पाव कहै शिवगामो ।। तुं धन ।।४।। रतनचन्द प्रभु कछुग्रन मांगे, सुणतूं अन्त-रजामी ।। तुम रहेवानी ठौर बताओ, तौ हूँ सहु भरपामी ।। तुं धन । ५ ।। इति ।।

—❖❖—

॥ अष्ट जिन स्तवन ॥

(श्रीनवकार जपो मनरंगे । एहनी देशी)

पह ऊठी परभाते वंदु, श्री पदम प्रभुजीरा पायरी माई ॥ वासु पूज्यजी तो म्हारे मनवसिया कमोयन राखो कायरी माई ॥ उपजे आनन्द आठ जिन जपता, आठु कर्म जाय तूटरी माई ॥उ०॥१॥ सुख संपदने लीला लाधै, रहे भरिया भण्डार अखूट री माई ॥ उ० । २ ॥ दोनुं जिनवर जोड़ बिराजे, हिंगुल वरण लालरी माई । तीर्थ थापीने करमाने कापो, पाप किया पय माटरी माई ।उ० ॥३॥ चन्दा प्रभुजीने सुबुधि जिनेश्वर, दोय हुवा सुपेतरी माई ॥ मोत्या वरणी देही दीपे, मुज देखण अधिक उम्मेदरी माई॥उ०॥४॥ मल्लिनाथ जिन पारस प्रभु, ए नीला मोरनी पांखरी माई । निरखंतारा नयन नधाये,अमिय ठरे ज्यांरी आंखरी माई ॥उ०॥५॥ मुनिय सुव्रत जिन नेमि जिणेश्वर सांवल वरण शरीररी माई॥ इन्द्रासुं वली अधिक

दीपे,दीठां हरषे हिवड़ो हीररी माई ॥उ०॥६॥रूप अनूपम आवल विराजै, ज्यु हीरा जड़िया हेमरी माई अत्तार सु अधिकी खुसवोई, मुज कहेता न आवे केम री माई ॥ उ० ॥ ७॥ शिवपुर माहि सा- हेब सोवे, हुँ नवी जाणु दूर री माई ॥ मुज चित्त माहे वस्या परमेश्वर, वन्दू उगंते सूर री माई ॥ उ० ॥ ८ ॥ ए आठु अरिहंतारे आ- गल, अरज करू कर जोड़ी री माई ॥ रिख रायचन्दजी कहे ज्ञानी म्हारा, पूरोनी सघला कोडरी माई ॥ उ० ॥ ९ ॥ संबत अठाराने बरस छत्तीसे, कियो नागोर शहर चौमासरी माई ॥ प्रसाद पूज्य जेमलजी केरो, कियो ज्ञान तणो अभ्यासरी माई ॥ उ० ॥ १० ॥

महावीर स्वामीका स्तवन

श्री महावीर सासण धणी, जिन त्रिभुवन स्वामी ॥ ज्यांरे चरण कमल नित चित धरुसु,

प्रणमु सिरनामी ।। सुरथित नगरी पिता मात, लक्षण अवगेहणा ।। वरण आउपो कवर पदे, तपस्या परिमाणा । चारित्र तप प्रभु गुण भणिये; छदमस्त केवल नाणी ।। तीरथ गणधर केवली, जिन सासण परिमाण ।। १ ।। देवलोक दसमें वीससागर, पूरण स्थित पाया ।। कुण्डणपूर नगरी चौवीस, श्री जिनवर आया ।। पिता सिद्धारथ पुत्र, मात त्रशलादे नन्दा ।। ज्यारी कुक्षे अवतरय्या, स्वामी वीरजिणन्दा ।। ज्यांरे चरण लक्षण छे सिंघ-नोए, अवगेहणा कर साथ ।। तनु कंचन सम शोभति, ते प्रणमु जगनाथ ।। २ ।। बोहोत्तर वरसनो आउषो, पाया सुख कारी । तीस बरस प्रभु कुंवर पदै, रह्या अभिग्रह धारी।। सुमेर गिरि पर इन्द्र चौसठे, मिल महोच्छव कीनो ।। अनंत बली अरिहत जाणी, नाम प्रभुनो दीनो ।' ज्यांरी मात पिता सुरगति ले आये, पछे लीनो सयम भार ।। तपस्या कीनी निरमली, प्रभुसाढे बारे

बगस मझार ।। ३ ।। नव चौमासी तप कियास, प्रभु एक छमासी ।। पांच दिन उणो अभिग्रह, एक छमास बिमासी ।। एक एक मासी तप किया, प्रभु द्वादस बिरिया।। बोहोत्तर पक्ष दोय दोय मास छबिरिया गिणिया ।। दोय अढ़ाई तीन दोय, इम दिडमासी दोय । भद्र महा भद्र शिव भद्र तप तप्या, इम सोले दिन होय।। ४ ।। भिखुनो पडिमा अष्ट भगवतिनो द्वादश कीनी ।। दोय सोने गुणत्तीस छठ्ठम तप गिणती लीनी ।। इग्यारे बरस छ मास, पच्चीस दिन तपस्या केरा ।। इग्यारे मास उगणीस दिवस, पारणा भलेरा।। इण विधि स्वामी जी तप तप्याए, पछे लीनो केवल नाण ।। तीस बरस उण बिच'रया, ते प्रणमुं वर्धमान ।। ५ ।। प्रथम अस्ती दूजो चम्पापुरी पीस्ट चम्पा दोय कहिए वाणिए विशालापुर, बेहु मिलीस द्वादश लहिए ।। चतुर्दश मालंदोपाड, छ मिथिला गिणिए ।। भद्दिल-पुरी दोय सव मिली, अगतीस भणिए ।। एक आलं

विया एक सावथिए, एक अनारज जाण ।। चरम चौमासो पावापुरी, जठे प्रभु पहुंता निरवाण ।।६।। मुनिवर चवदे सहेस, सहस छत्रीस अरजका ।। एक लक्ष गुणसठ सहेस श्रावक, तीन लाख श्राविका ।। अधिक अठारे सहस इग्यारे गणधरनी माला ।। गौतम स्वामी बडा शिष्य, सती चंदनबाला।। ज्यांरे केवल ज्ञानी सात सोए, प्रभु पहुंता निरवाण ।। सासण बरते स्वामीनो, एक बीस सहेस वर्ष प्रमाण ।। ७ ।। पूरब तीनसौ धार, तेरासे आवधि ज्ञानी ।। मन प्रजव पांचसौ जाण, सातसौ केवल नाणी ।। वैक्रिय लभधिना धार, सातसौ मुनिवर कहिए ।। बादी चारसौ जाण, भिन्न२ चरचा लहिये ।। एका-एक चारित्र लियोए प्रभु एकाएक निरवाण ।। चौसठ वर्ष लग चालियो, दरसण केवल नाण ।८। बारा नरबल वृषभ २ दस एक जिसि हैवर ।।बारा हैवर महिष,महिष पांचसे एक गैवर ।। पांचसे गज हरी एक, सहस दोय हरी । अष्टापद दस

लाभ बलदेव बासदेव, अरुदोय दोय चक्री ॥ क्रोड चक्री एक सुर कह्योये क्रोड सुरा एक इन्द्र ॥ इन्द्र अनन्ता सुननमें, चिटी अंगुली अग्र जिनन्द ॥ ६ ॥ आपतणा प्रभु गुण अनन्त कोई पार न पावे ॥ लब्ध प्रभावे क्रोड़ काय, क्रोड़ गुणसिर वणावे । सीर सीर क्रोडा क्रोड बदन जस करेसु ज्ञानी ॥ जिभ्या जिभ्यासु कोड़ कोड़ गुण करेसु ज्ञानी ॥ कोड़ा कोड़ सागर लगेए करे ज्ञान गुणसार ॥ आप तणा प्रभु गुण अनन्ता, कहेता न आवेजी पार ॥ १० ॥ चवदेई राजु-लोक, भरिया बालुन्दा कणिया । सर्व जीवना रोमराय, नहि जावै गिणिया ॥ एक एक बालु गुण करेस, प्रभु अणंता अणंता ॥ पूज्य प्रसादरिख लालचन्दजो, नहीं आवे कहेता ॥ समत अठारे वासण्टेए मास मिगसर छन्द ॥ सामपुरे गुण गाइया, धन श्रीवीर जिणद ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ कालरी सज्झाय लिख्यते ॥

इण कालरो भ'ोसो भाईरे को नहीं, ओ किण विरिया माहे आवे ए ॥ बाल जवान गिणे नहीं, ओ सर्व भणी गटकावे ए ॥ इण० ॥१॥ बाप दादो बैठा रहै, पोता उठ चल जावे ए ॥ तो पिण धेंठा जोवने, धर्मरी बात न सुहावे ए ॥ इण० ॥ २ ॥ महेल मंदिरने मालिया, नदीय निवाणने नालो ए सरगने मृत्यु पातालमें, कठिग्रन छोड़े कालोए ॥ इण० ॥३॥ घर नायक जाणी करी. रिख्या करी मन गमती ए ॥ काल अचानक ले चल्यो, चौक्या रह गई झिलती ए । इण०॥४॥ रोगी उपचारण कारणे, वैद विचक्षण आवे ए । रोगोने ताजो करे आपरी खबर न पावे ए ॥ इण०॥५॥ सुन्दर जोड़ी सारखी, मनोहर महेल रसालो ए॥ पोढ्या ढोलिए प्रेमसुं, जठे आण पहुंतो कालोए ॥इण०॥६॥ राज करे रलियामणो, इन्द्र अनूपम दिसे ए ॥ बैरी पकड़ पछाडियो, टांग पकड़ने घीसे ए ॥ इण० ॥ ७ ॥

बल्लभ बालक देखने, माड़ी मोटी आसो ए, छिनक माहे चलतो रह्यो,होय गई निरासो ए ॥ इण०॥८॥ नार निरखने परणियो,अपछराने उणि-हारे ए ॥ सूल ऊठ चलतो रह्यो, आ ऊभी हेला मारे ए ॥ इण०॥६। चेजारे चित्त चुपसु, करी इमारत मोटी ए ॥ पावडी ए चढतो पड्यो, खाय न सकियो रोटी ए ॥ इण० ॥ १० ॥ सुरनर इन्द्र किन्नरा, कोई न रहै निशंको ए ॥ मुनिवर कालने जीतिया, जिण दिया मुक्त मांहे डंको ए ॥ इण० ॥ ११ ॥ किसनगढ़ माहे सिडसठे आया सेखे कालोए ॥ रतन कहे भव जीवने, कीजो धर्म रसालो ऐ ॥ इण० ॥ १२ ॥ इति ॥

—✠✠—

॥ धर्म रुचीनी सज्झाय ॥

चम्पानगर निरोपम सुन्दर, जठे धर्म रुचि रिख आया ॥ मास पारणे गुरु आज्ञा ले गोच-रिया सिधाया हो ॥ मुनिवर धर्म रुची रिख वंदु

॥१॥ ए आंकड़ी ॥ भव भव पाप निकाचत संचत दुकृत दूर निकंदू हो ॥मु०॥२॥ नीची दृष्टि चरण सिर सोहे। मुनीश्वर गुण भण्डारे ॥ भिक्षा अटन करता आया, नाग श्रीघर द्वारे हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ खारो तुंबो जेहर हलाहल मुनिवर वेहराव्यो ॥ सहेज उखरडा आई असघर, कहो बाहेर कुण जावे हो ॥ मु० ॥४॥ पूरण जाणी पाछा वलिया, गुरु आगे आवी धरियो ॥ कोण दातार मिल्यो रिख तोने, पूरण पातर भरियो हो ॥ मु० ॥५॥ ना ना करतो मोने बहिराव्यो, भाव उलट मन आणो ॥ चाखीने गुरु निरणय कीधो, जेहर हलाहल जाणी हो ॥ मु० ॥६॥ अखज अभोज कटुक सम खारो, जो मुनिवर तुं खासो, निरबल कोठे जहेर हलाहल अकाले मर जासो हो । मु० ॥७॥ आज्ञा ले परठणने चाल्या, निरवध ठोर मुनि आया ॥ बिन्दु एक परठेव्या ऊपर, किडिया बहु मर जाया हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ अल्प आहार थी, एहवी

हिंसा, सर्व थी अनरथ जाणी ।। परम अभय रस भाव उलट धर, किडियारी करुणा आणी हो ।। मु० ।। ६ ।। देह पडंता दया निपजे, तो मोटा उपकारे ।। खीर खांड समजाणी हो मुनिवर, तत्क्षण कर गया अहारे हो ।। मु० ।। १० ।। प्रवल पीर शरीरमें व्यापी, आवण सक्तज था की ।। पादु गमन कियो संथारो, समता दृढ़ता राखी हो।। मु० ।। ११ ।। स्वारथ सिद्ध पहुँता शुभ जोगे, महा रमणीक विमाणे ।। चौसठ मणरो मोती लटके करणीर परमाणे हो । मु०।। १२ ।। खबर करणने मुनिवर आया, रिखजी कालज कीधो ।। धृग धृग इन नागश्रीने, मुनिवरने विष दीधो हो ।मु०।।१३।। हुई फजीती करम बहु बांध्या, पहुँतो नरक दुवारे ।। धन धन इण धर्म रुचीने, कर गया खेवो पारे हो।। मु० ।।१४।। पैसठ साल जोधाणा माहे सुखे कियो चौमासो ।। रतनचन्दजी कहे एह मुनिवरना, नाम थकी शिव वासो हो ।। मुनि० १५ ।। इति ।।

श्री ढ ढण मुनिनी सज्झाय ।

ढंढण रिखजीने वंदणा हुंवारी उत्कृष्टी अण-गागरे हूँवारी लाल ।। अविग्रह किधो एहवो हूँवारी लब्धे लेशुं आहाररे हूँवारी लाल ।।ढ० ।।१।। दिन प्रति जावे गोचरी हूँवारी, न मिले सुजतो भातरे हूँवारी लाल ।। मूलन लीजे असुजतो हूँवारी, पिंजर हुय गया गात रे हूँवारी लाल ।। ढं० ।।२।। हरी पूछे श्रीनेमने हूँवारी,मुनिवर सहेंस आठार रे हूँवारी लाल ।। उत्कृष्टो कुण एहमें हूँवारी,मुजने कहो किरताररे हूँवारी लाल।। ढं० ।। ३ ।। ढंढण अधिको दाखीयो हूँवारी, श्रीमुख नेम जिणंदरे हूँवारी लाल।। कृष्ण उमायो बांदवा हूँवारी, धन जादव कुलचन्दरे हूँवारी लाल।।ढं०।।४।। गलियारे मुनिवर सिल्या हूँवारी,बांद्या कृष्ण नरेशरे हूँवारी लाल।। कोईक गाथा पति देखने हूँवारी ।। उपनो भाव विशेष रे हूंवारी लाल ।। ढं० ।। ।। ५ ।। मुज घर आवो साधुजी हूंवारी, बहीरो

हार ।। दुर्लभ तो मानव भव पायो, ते किम जावो हार ।। १ ।। धन दौलत रिद्ध सपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल ।। मोहो माया माहे भुल रह्यो, जीवा नहीं लिवो सुरत सभाल ।। नहि लिवी सुरत संभाल, जीवाजी नहिं लिवी सुरत संभाल ।। दु० ।। २ ।। काया तो थांरी कारमो दिसे, दिसे जिन धर्म सार ।। आऊषो जाता वार न लागे, चेतो क्योंनी गवांर ।। चेतो क्यों नी गवांर, जीवाजी चेतो क्यों नी गवांर ।। दु० ।।३।। यौवन वय माहे धंदो लगो, लागो हे रमणीरे लर ।। धन कमायने दौलत जोड़ी, नहिं कोनो धर्म लिगार ।। नहीं कीनो धर्म लिगार, जोवाजो नहिं कीनो धर्म लिगार ।। दु० ।। ४ ।। जरा आवैने यौवन जावे जावे इन्द्रिय विकार ।। धर्म किया विना हाय घसोला, परभव खासो मार, परभव खासो मार जीवाजी परभव खासो मार ।दु०।५। हाथोंमें कड़ाने कानोंमें मोती, गले सोवनको माल ।। धर्म किया बिन एह जीवा

मोदिक अभिलाषरे हूँवारी लाल ।। वेहरीने पाछा फिरय्या हूंवारी,आया प्रभुजीने पासरे हूंवारी लाल। ढं० ।। ६ ।। मुझ लब्धे मोदक किम मिल्या हूवारी मुझने कहो किरपालरे हूंवारी लाल ।। लब्ध नहीं ओ वच्छ ताहर्यरी हूंवारी लाल ।। लब्ध निहालरे हूंवारीलाल ।ढं०।७। तो मुझने कलपे नहीं हूंवारी, चाल्या परठण ठोररे हूंवारी लाल ।। ईंट निहाले जायने हूंवारी, चुग्ग्या करम कठोररे हूंवारी लाल ढ० ।।८।। आई सुधी भावना हूँवारी, उपनी केवल ज्ञानरे हूँवारी लाल ।। ढढण रिख मुक्ते गया हूंवारी, कहे जिन हर्ष सुजाणरे हूँवारी लाल ।। ढं० ।। ९ ।। इति ।।

—※※—

नव घाटीको स्तवन ।

नव घाटी माहे भटकत आयो पाम्यो नर भव सार ।। जेहने वछे देवता जीवा ते किम जावो हार।। ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो

हार ।। दुर्लभ तो मानव भव पायो, ते किम जावो हार ।। १ ।। धन दौलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल ।। मोहो माया माहे झुल रह्यो, जीवा नहीं लिवो सुरत सभाल ।। नहि लिवी सुरत संभाल, जीवाजी नहि लिवी सुरत संभाल ।। दु० ।। २ ।। काया तो थांरी कारमो दिसे, दिसे जिन धर्म सार ।। आऊषो जाता वार न लागे, चेतो क्योंनी गवांर ।। चेतो क्यों नो गवांर, जीवाजी चेतो क्यों नो गवांर ।। दु० ।।३।। यौवन वय माहे धंदो लगो, लागो हे रमणीरे लर ।। धन कमायने दौलत जोड़ी, नहि कोनो धर्म लिगार ।। नहीं कीनो धर्म लिगार, जीवाजी नहि कीनो धर्म लिगार ।। दु० ।। ४ ।। जरा आवैने यौवन जावे जावे इन्द्रिय विकार ।। धर्म किया विना हाय घसोला, परभव खासो मार, परभव खासो मार जीवाजी परभव खासो मार ।दु०।५। हाथोंमें कड़ाने कानोंमें मोती, गले सोवनको माल ।। धर्म किया बिन एह जीवाजी

अभरण छे सहुभार जीवाजी, अभरण छे सहुभार ।।दु०।६।। ए जग है सय स्वारथ केरा, तेरो नहीरे लिगार ।। बार बार सतगुरु समझावे, ल्यो तुम सयम भार ।। ल्यो तुम संयम भार, जीवाजी ल्यो तुम संयम भार ।दु०।७। संयम लेईने कर्म खपावो, पामो केवल ज्ञान ।। निरमल हुयने मोक्ष सिधाओ ओछे साचोज्ञान । ओछे साचो ज्ञान जीवाजी ओछे साचो ज्ञान ।दू०।८।संमत अठारेने वरस गुण्यासो हरकेन सिघजी उल्लास ।। चैत बदी सातम साय-पुरमें, कोनो ज्ञान प्रकाश । कोनो ज्ञान प्रकाश जीवाजी, कोनो ज्ञान प्रकाश ।।दुर्लभतो०।

—✲✲—

श्री धन्नाजीरी सज्झाय

श्रीजी आज्ञा दिवी फुरमायके ।। विमल गिरी थेवर सगे, चाल्या समसय साध खमायके ।। घन० ।।२।। ठायो संथारो एक मासनो । थेवर आया प्रभुजीरे पासके ।। भंडउपगरण जिन वीरने, गौतम पूछे वेकर जोड़के ।।ध०।। ३ ।। तप तपीया वहु आकरा कहो स्वामी वासो किहां लोधके । सागर त्रेतीसारे आउषो, नव महीनामें सर्वारथ सिद्धके ।।ध०।।४। महा विदेह क्षेत्र माहे सिद्ध हूशी, विस्तार नवमा अंगरे माह्यके। शिव सुख साध पदवी लही आसकरणजी मुनिगुण गायके ।।ध०।।५।। संवत अठारे बरस गुणसठे, बैसाख बद पक्षरे माह्यके ।। विसलपुरमें गुण गाइया, पूज्य रायचन्दजीरे प्रसादके ।ध०।६।।ओछोजी इधकोमें कह्यो तो मुज मिच्छामि दुक्कड होयके ।। बुद्धि अनुसारे गुण गाइया, सूत्रनो सार जोयके ।। ध० ।। ७।। इति ।।

—△—

।। श्री पद्मावती आराधना ।।

होवे राणी पद्मवती, जीवरास खमावे ।। जाणपणो जग दोहिलो, इण बेला आवे ।। १ ।। ते मुज मिच्छामी दुक्कड ।। अरिहन्तनी साख, जे मैं जीव विराधिया, चौराशी लाख ।। ते मुज० ।। २ ।। सात लाख पृथिवी तणा, साते अपकाय ।। सात लाख तेउकायना, साते वलिवाय । ते० ।। ३ । दस प्रत्येक वनस्पति, चौदे साधारण, बीती चौरिंद्री जीवना, बे बे लाख बिचार ।। ते० ।। ४ । देवता तिर्यञ्च नारकी, चार चार प्रकाशो ।। चौदे लाख मनुष्यना, ए लाख चौरासी ।। ते० ।। ५ ।। इण भवे परभवे सेविया, जे मैं पाप अठार । त्रिविध त्रिविध करि परिहरूं, दुर्गतिना दातार ।। ते० ।। ६ ।। हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ।। दोष अदत्ता-दानना, मैथुनने उन्माद ।। ते० ।। ७ ।। परिग्रह मेल्यो कारमो, किधो क्रोध विशेष ।। मान माया लोभ मै किया, वली रागने द्वेष ।। ते० ।। ८ ।।

कलहकरी जीव दुहव्या, दिधा कुडा कलंक ॥
निन्दा कीधो पारका रति अरति निशंक ॥ ते० ॥
॥ ९ ॥ चाड़ी कोधी चोतरे, कीघो थापण मोसो ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ते०॥
॥१० ॥ खटिकने भवे मैं किया, जीव नाना विध
घात॥ चिडि मारने भवे चिडकला ॥ मारया दिनने
रात ॥ ते० ॥११॥ काजी मुल्लाने भवे, पढ़ी मन्त्र
कठोर॥ जीव अनेक जबे किया, कोधा पाप अघोर ॥
॥ते०॥ १२ ॥ मच्छी मारने भवे माछला, जालया
चल वास ॥ धीवर भील कोलो भवे, मृग पाडया
पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे जे किया ।
आकरा कर दंड ॥ बन्दीवान माराविया, कारेड़ा
छड़ी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे,दीधा
नारकी दु:ख ॥ छेदन भेदन बेदना ॥ ताडण अति
तिख ॥ ते० ॥१५॥ कुंभारने भवेमें किया, नीमा-
हपचाव्या ॥ तेली भवे तिल पेलिया, पापे पिंड
भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडिया,

फाडय्या पृथ्वीना पेट ॥ सूडने दान घणा किया,दीधी बदल चपेट ॥ ते० । १७ । मालीने भवै रोपिया, नाना विध वृक्ष । मूल पत्रफल फूलना, लागा पाप ते लक्ष । ते° । १८ । अद्धोवाइयाने भवे, भरय्या अधिका भार ॥ पोठी पुठे कीड़ा पडया दया नाणी लिगार । ते० । १९ । छीपाने भवे छेतरया कीधा रंगण पास ॥ अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते० । २० ॥ सुरपणे रण झुंझता, मारया माणस वृन्द ॥ मदिरा मास माखण भख्या, खादा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलंच्या ॥ आरम्भ किया अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते° । २२ ॥ करम अंगारे किया वली, घरने दव दीधा । सम खाधा वीतरागना, कुडा कोलज कीधा ॥ ते° । २३ । बिल्ला भवे उंदर लिया, गिरोलो हत्यारी । मूढ़ गवार तणे भवे, मैं जुंआ लीखा मारी । ते° । २४ । भडभुंजा तणे भवे, एकेंद्री जीव ॥ जुआरी चणा

बहु शेकिया, पाडंता रोच । ते० ॥ २५ ॥ खांडण
पीसण गारना, आरम्भ अनेक ॥ रांधण इंधण
अग्निना, कीधा पाप अनेक ॥ ते० ॥ २६॥ विकथा
चार कीधावली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग
पाडया किया, रुदनने विखवाद ॥ ते० ।२७ ।साधु
अने श्रावक तणा, व्रत लहीने भाग्या ॥ मूल अने
उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या ॥ ते० ॥ २८ ॥
सांप विच्छु सिंह चीतरा, सिकराने सामलि ॥
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते०
॥२९॥ सुआवड़ी दूषण घणा, वली गरभगलाव्या
जीवाणी ढोल्या घणी शीलव्रत भंगव्या ॥ते०।३०॥
भव अनन्ता भमता थका, कीधा देह सम्बन्ध त्रिविध
त्रिविध करी बोसरूं, तिणसु प्रतिबन्ध ॥ते०।३१॥
भवअनन्त भमता थका, कीधा कुटुम्ब सम्बन्ध ॥
त्रिविध त्रिविध करी बोसरूं, तिणसुं प्रतिबन्ध ।ते०।
।३२। इण परे इह भवे पर भवे, कीधा पाप अक्षत्र
त्रिविधत्रिविध करी बोसरूं, करूं जन्म पवित्र ।ते०।

॥ ३३ ॥ इणविध ए आराधना भावे करसे जेह ॥ समय सुन्दर कहे पाप थी, इह भव छुटसे तेह ॥ ते० ॥ ३४ ॥ राग बैराडी जे सुणे यह त्रिजो ढाल ॥ समय सुन्दर कहे पाप थी, छुटे भव तत्काल ॥ ते० ॥ ३५ ॥ इति ॥

श्रीसुखविपाक-सूत्रम्

अर्हं

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे
गुणसिलए चेइए सोहम्मे समोसढे जंबू जाव
पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइणं भंते! सम-
णेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवा-
गाणं अयमट्ठे पण्णत्ते सुहविवागाणं भन्ते! के
समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के
अट्ठे पण्णत्ते? तत्तेणं से सुहम्मे अणगारे जंबू
अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू! समणेणं
भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं
दस अज्झयणा पण्णत्ता। तंजहा-सुबाहू १
भद्दनंदीय २, सुजाए य ३, सुवासवे ४, तहेव

जिणदासे ५, धणपतीय ६, महब्बले ७ ॥ १ ॥
भद्दनदी ८, महचंदे ९, वरदत्ते १० ॥

जइणं भन्ते ! समणेण जाववंपत्तेणं सुह-
विवागाण दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सणं
भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव के अट्ठे
पण्णत्ते ? ततेणंसे सुहम्मे अणगारे जंबू अण-
गारं एवं वयासी—एवं खलु—जंबू ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था रिद्धि-
त्थिमियसमिद्धे, तस्स णं हत्थिसीसस्स णगरस्स
वहिया उत्तारपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं पुप्फ-
करंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वो उय० तत्थणं
कयवण मालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था
दिव्वे० तत्थणं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू
णामं राया होत्था महया० वण्णओ, तस्स णं
अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामुक्खं देवीसह-
स्सं ओरोहेयावि होत्था। ततेणं सा धारिणी
देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वास

घरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं । सुबाहुकुमारे जाव अलंभोग समत्थे यावि जाणंति, अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करा- वेंत, अब्भुग्गय० भवणं एवं जहामहाबलस्स रण्णो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं राय वर कण्णयसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पि पासाय वर- गए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा निग्गया, अदीणसत्तू जहा कू- णिओ तहेव निग्गओ सुव हू वि-जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिसा पडिगया । तएणं से सुबाहु कुमारे सम- णस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति जाव वयासि-सद्दहामिणं भन्ते ! णिग्गंथं

जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राइसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहण्णं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराओ अण-गारियं पव्वइत्तए अहण्णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालस-विहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणु-प्पिया ! मा पडिबंधं करेह । ततेणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणु-व्वइयं सत्तासिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जति पडिवज्जिता तमेव चाउग्घंटं आस-रहं दुरुहति जामेव दिसं पाउब्भूए तामेवदिसं पडिगए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जावएवंवयासी-अहोणंभते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंत २ पिए २ मणुण्णे २ मणामे २ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरू[illegible] णस्स

सोमे ४ साहुजणस्स भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ साहुजणस्स वियणं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरुवे । सुबाहुणा भन्ते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? केवा एस आसी पुव्वभवे ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जबुद्दीवेदीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्धित्थिमिय समिद्धे तत्थणं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा-णामं थेरा जाति सम्पन्ना जाव पंचहिं समणस-एहिं सद्धि संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्वं चरमाणा गामाणु गामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहस्संबवणेउज्जाणेतेणेवउवागच्छइ उवागच्छता अहापडिरूव उग्गहंउग्गिण्हित्तासंयमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अन्तेवासी

जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राइसर जाव सत्थवाहप्पभिइओ मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहण्णं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता अागाराओ अण-गारियं पव्वइत्तए अहण्ण देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालस-विहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणु-प्पिया ! मा पडिबंधं करेह । ततेणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महाबीरस्स अंतिए पंचाणु-व्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जति पडिवज्जिता तमेव चाउग्घंटं आस-रहं दुरुहति जामेव दिसं पाउब्भूए तामेवदिसं पडिगए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जावएवंवयासी-अहोणंभंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंत २ पिए २ मणुण्णे २ मणामे २ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणस्स वियणं

वइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगा-
हगसुद्धेण तिविहेणं तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अण-
गारे पड़िलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए
मणुस्साउए निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच
दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा-वसुहारा वुट्ठा १
दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए
३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरावियणं
आगासंसि अहो दाण महोदाणं घुट्ठेय ५ ।
हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४- धन्नेणं देवाणुप्पि
या ! सुमुहे गाहायई सुकयपुन्ने कयलक्खणे
सुलद्धेण मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं
धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तत्ते-
णंसे सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं
पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थि-
सीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए
वीए कुच्छिंसि पुत्तताए उववन्ने । ततेणं

सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति । तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाये पोरिसीये सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुधम्मं) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणे उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे तएणं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे चितमाणंदिया आसणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेस्सामोति तुट्ठे पडिलाभेमाणेवि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे । ततेणं तस्स सुमुहस्स गाहा

वइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगा-
हगसुद्धेण तिविहेणं तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अण-
गारे पड़िलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए
मणुस्साउए निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच
दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा-वसुहारा वुट्ठा १
दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए
३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतरावियणं
आगासंसि अहो दाणं महोदाणं घुट्ठेय ५ ।
हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४- धन्नेणं देवाणुप्पि
या ! सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणे
सुलद्धेणं मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं
धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तत्ते-
णंसे सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं
पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थि-
सीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए दे-
वीए कुच्छिंसि पुत्तताए उववन्ने । ततेणं सा-

धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा श्रोही-
रमाणी २ सीहं पासति सेसं तं चेव जाव उप्प
पासाए विहरति तं एयं खलु गोयमा । सुबा-
हुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता
अभिसमन्नागया । पभूणं भंते ! सुबाहुकुमारे
देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्तये ? हंता पभू । तते णं से
भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वदति नमं
सति २ त्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे
विहरति । ततेणं से समणे भगवं महावीरे अ-
न्नया कयाइ हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फक-
रंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स
जक्खायणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया
जणवयविहारं विहरति । ततेणं से सुबाहुकुमारे
समणो वासये जाते अभिगय जीवाजीवे जाव
पडिलाभेमाणे विहरति । तते णं से सुबाहुकु-
मारे अन्नया कयाइं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासि-

णोस् जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २

त्ता पोसहसालं पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवण

भूमिं पडिलेहति २ त्ता दब्भसंथारं संथरेइ २

त्ता दब्भसंथारं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमभत्तं पगि-

ण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठमभत्तिए

पोसहं पडिजागरमाणे विहरति । तए णं तस्स

सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्ता वरत्तकालसमयंसि

धम्मजागरियं जागरमाणस्सइमे एयारूवे अज्झ-

त्थिये चितीए पत्थीए मणोगए संकप्पे समुप्पन्ने

धण्णा णं ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा

जत्थणां समणे भगवं महावीरे जाव विहरति,

धन्नाणं ते राईसर तलवर० जेणं समणस्स भग-

वओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति

धन्नाणं ते राईसर तलवर० जे णं समणस्स

भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव

गिहिधम्मं पडिवज्जंति, धन्ना णं ते राईसर जाव

जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए

धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ सीहं पासति सेस त चेव जाव उप्प पासाए विहरति तं एयं खलु गोयमा। सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया। पभूणं भंते! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तये? हंता पते ण से भगवं गोयमे समाणं भगवं महावीर वदति नमं सति २ त्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। ततेणं से समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्सजक्खस्स जक्खायणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति। ततेणं से सुबाहुकुमारे समणो वासये जाते अभिगय जीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति। ततेणं से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमास-

धम्मं सुणेंति तं जत्तिणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमा गच्छिज्जा जाव विहरिज्जा ततेणं अहं समणस्स भगवओ महाबीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइएज्जा। ततेणं समणे भगवं महाबीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थिय जाव वियाणित्ता पुव्वाणु पुव्वीं चरमाणे गमाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमाल पियस्स जवखस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरित परिसा राया निग्गया ततेणँ तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया। तते णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा

धम्मं सुणेंति तं जत्तिणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमा गच्छिज्जा जाव विहरिज्जा ततेणं अहं समणस्स भगवओ महाबीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइएज्जा। ततेणं समणे भगवं महाबीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थिय जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गमाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमाल पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरित परिसा राया निग्गया ततेणं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं महया जहा पढमं तहा निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया। तते णं से सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा

कुमारे सिरिदेवि पामोक्खा णं पञ्चसया सामी समोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुण्डरीकिणी णगरी विजए कुमारे जुगवाहू तित्थियरे पडिलाभिए माणुस्साउए निवद्ध इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहित बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंत करेहिति

॥ बितियं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो — वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाणं वीरकण्हे जक्खे मित्तेणया सिरी देवी सुजाए कुमारे बलसिरिपामोक्खा पञ्चसयकन्ना सामी समोसरणं पुव्वभवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिला

चोथस्स उक्खेवो—विजयपुर णगरं णंद-णवण· (मणोरमं) उज्जाणं असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा णं पंचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दे-अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥

॥ चोत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

पञ्चमस्स उक्खेवओ--सोगंधिया णगरी नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकन्ना देवी महचंदे कुमारे तस्स अरह दत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णगरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे

॥ पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ—-कणगपुर णगरं सेया-सोयं उज्जाणं वीरभद्दो जक्खो पियचन्दो राया सुभद्दा देवी वेसमणे कुमारे जुवराया सिरि देवी

पामोक्खा पञ्चसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थय-
रागमणं धनवती जुवरायत्ते जाव पुव्वभवो
मणिवया नगरी मित्तो राया संभूतिविजए
अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥

॥ छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो महापुरं णगरं रत्ता-
सोगं उज्जाणं रत्तपाओ बले राया सुभद्दा
देवी महब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पञ्च-
सया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं जाव
पुव्वभवो मणिपुरं णगरं णागदत्तो गाहावती
इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥

॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

अट्ठमस्स उक्खेवो—सुघोसं णगरं देवर-
मणं उज्जाणं वीरसेणो जक्खो अज्जुणो राया
तत्तवती देवी भद्दनन्दी कुमारे सिरिदेवीपामो-
क्खा पञ्चसया जाव पुव्वभवे महाघोसे णगरे

चोथस्स उक्खेवो—विजयपुर णगरं णंद-णवण (मणोरमं) उज्जाण असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भद्दापामोक्खा णं पचसया जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी धणपाले राया वेसमणभद्दे-अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे ॥

॥ चोत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

पचवमस्स उक्खेवओ--सोगधिया णगरी नीलासोए उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ राया सुकन्ना देवी महचांदे कुमारे तस्स अरह दत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमणं जिणदासपुव्वभवो मज्झमिया णगरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे

॥ पंचमं अज्झयणं समत्तं ॥ ५ ॥

छट्ठस्स उक्खेवओ—कणगपुरं णगरं सेया-सोयं उज्जाणं वीरभद्दो जक्खो पियचन्दो राया सुभद्दा देवी वेसमणे कुमारे जुवराया सिरि देवी

पामोक्खा पञ्चसया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थय-रागमणं धनवती जुवरायत्ते जाव पुव्वभवो मणिवया नगरी मित्तो राया संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥

॥ छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

सत्तमस्स उक्खेवो महापुरं णगरं रत्ता-सोगं उज्जाणं रत्तपाओ वले राया सुभद्दा देवी महब्बले कुमारे रत्तवईपामोक्खाओ पञ्च-सया कन्ना पाणिग्गहणं तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवो मणिपुरं णगरं णागदत्तो गाहावती इन्ददत्ते अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥

॥ सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

अट्ठमस्स उक्खेवो—सुघोसं णगरं देवर-मणं उज्जाणं वीरसेणो जक्खो अज्जुणणो राया तत्तवती देवी भद्दनन्दी कुमारे सिरिदेवीपामो-क्खा पञ्चसया जाव पुव्वभवे महाघोसे णगरे

धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिला
भिए जाव सिद्धे ॥

॥ अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चपा णगरी पुन्नभद्दे
उज्जाणे पुन्नभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवईदेवी
महचंदे कुमारे जुवराया सिरिकंतापामोक्खाणं
पञ्चसयाकन्ना जाव पुव्वभवा तिगिच्छी णगरी
जियसत्तू राया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए
जावं सिद्धे ॥

॥ नवमं अज्झयणं समत्त ॥ ९ ॥

जतिणंदसमस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू!
तेणं कालेणं तेण समएणं साएयं नामं नयरं
होत्था उत्तरकुरु उज्जाणे पासमिओ जक्खो मि-
त्तनंदो राया सिरिकंता देवी वरदत्ते कुमारे वर
सेणापामोक्खा णं पञ्चदेवीसया तित्थयरागमणं
सावगधम्मं पुव्वभवो पुच्छा सततदुवारे नगरे
विमलवाहणे राया धम्मरुई अणगारे पडिला-

भिए संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पवज्जा कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ।। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवआ महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेसेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा ।।

।। दसमं अज्झयणं समत्तं ।। १० ।।

नमो सुयदेवयाए—विवागसुयस्स दो सुय क्खंधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुह–विवागे दस अज्झयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उदिसिज्जन्ति, एवं सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ।।

।। इति एक्कारसमं अंगंसमत्तं ।।

।। इअ सुखविपाकसुत्तं समत्तं ।।

धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारे पडिला भिए जाव सिद्धे ॥

॥ अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चपा णगरी पुन्नभद्दे उज्जाणे पुन्नभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवईदेवी महचंदे कुमारे जुवराया सिरिकंतापामोक्खाणं पञ्चसयाकन्ना जाव पुव्वभवा तिगिच्छी णगरी जियसत्तू राया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जावं सिद्धे ॥

॥ नवमं अज्झयणं समत्त ॥ ९ ॥

जतिणंदसमस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयरं होत्था उत्तरकुरु उज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनंदी राया सिरिकंता देवी वरपत्ते कुमारे वर सेणापामोक्खा णं पञ्चदेवीसया तित्थयरागमणं सावगधम्मं पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवारे नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुई अणगारे पडिला-

भिए संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पवज्जा कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेसेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा ॥

॥ दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

नमो सुयदेवयाए—विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उदिसिज्जन्ति, एवं सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ॥

॥ इति एक्कारसमं अंगसमत्तं ॥

॥ इअ सुखविपाकसुत्तं समत्तं ॥

हितोपदेश।

चालो २ मुगत गढ़ माहीं, थांने ऊतगुरु रह्या समझाई रे ॥ टेर ॥ थांने मानवको भव पायो, चिन्तामणि हाथज आयोरे ॥ ॥०॥१॥ काया दीसै रंगो, चगी, दया धर्म करो नवरंगी रे ॥चा०।२॥ मात पिता लाड़ लड़ावे, स्वार्थ बिना अलगा जावे रे ॥चा०।३॥ तू परणीने लायो लाड़ी, वापण नहिं आवे आड़ी रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ सूरी कंता नारी देखो, सूतर मे चाल्यो ईंको लेखो रे । चा०॥५॥ धन दौलत माया जोड़ो, भेली कर मेली कोड़ी कोड़ी रे ॥ चा० ॥ ६ ॥ सागर सेठ थो धनको लोभी, समुद्रमें गयो ते डूबी रे ॥चा०॥७॥ माया-जालकी ममता मेटो, सतगुरुजीने लेवो भेटी रे ॥ चा० ॥ ८ । दया दान कमाई कीजे, नरभवको लाहो लीजे रे ॥ चा० ॥९॥ उगणीसे बासठ माहीं रामपुर रह्या सुख पाहिरे ॥ चा० ॥ १० ॥ कहै हीरा लाल गुणवन्ता, जिन धर्म करो पुन्यवन्ता रे ॥ चा० ॥ ११ ॥ इति ॥

अथ तेरह ढालकी बड़ी साधु बन्दना ॥

दोहा ।

अरिहंत सिद्ध साधु नमो, नमतां क्रोड़ कल्याण ।
साधू तणा गुण गायशुं, मनमें आनन्द आण ॥१॥
गुण गाऊं गुरुवां तणा, मन मोटे मंडाण ।
गुरु आं सहजें गुण करे, सिझे वंछित काम ॥ २॥
इण हिज अढाई द्वीपमें, जयवंता जगदीस ।
भाव करी बन्दन करू, इच्छुक मन अति लीना॥३॥
भाव प्रधान कह्यो तिसे, सबमें भावज जाण ।
ते भावें सबकुं नमुं, अनंत चोबीसी नाम ॥४॥
उठ प्रभात समरु सदा, साधु बन्दन सार ।
गुण गाउं मोटा तणा, पाप रोग सब जार ॥५॥

॥ ढाल पहिली चौपाईकी चालमें ॥

पंच भरत पञ्च ऐरवत जाण, पंच महा विदेह वखाण । जेह अनन्त हुआ अरिहंत, ते प्रणमुं कर जोड़ी संत ॥ १॥ जे हिवड़ा विचरे जिनचन्द,

क्षेत्र विदेह सदा सुखकन्द । कर जोड़ी प्रणमु ं तस पाय, आरत विघन सहु टलो जाय । २ ।। सिद्ध अनन्ता जे पनरे भेद, ते प्रणमु ं मन धरी उमेद । आचारज प्रणमु ं गणधार, श्री उवज्झाय सदा सुखकार ।। ३ ।। साधु सहु प्रणमु ं केवली काल अनादि अनन्तावली । जे हिवड़ां वरते गुणवन्त, साधु साधवी सहु भगवन्त ।। ४ । ते सहु प्रणमु ं मन उल्लास, अरिहन्त सिद्धने साधु प्रकास । (वार अनन्ती अनन्त विचार) साधु बन्दना करसु ं हितकार, ते साँभलज्यो सहु नर नार ।। ५ ।।

दोहा ।

इण हिज जंबूद्वीपवर, भरत नाम यहाँ क्षेत्र ।
जिनवर बचन लही करी निर्मल कीधा नेत्र ।।१।।
यहाँ चौबीसे जिन हुवा, ऋषभादिक महावीर ।
पूरव भव कहि प्रणमये, पामीजे भव तीर ।। २ ।।
पूरव भव चक्री (वर्ति) थया, ऋषभदेव निरभीक
अजितादिक तेवीसजिन, राजा सहु मण्डलीक ।।३।।

व्रत लहि पूरब चौदे, ऋषभ भण्या मन रंग ।
पूरब भव तेवीस जिन, भण्या इगियारे अंग ॥४॥
बीस स्थानक तिहां सेवियां, बीजे भवे सुरराय ।
तिहांथी चवी चोवीस जिन,हुवा ते प्रणमुं पाय ।५।

॥ ढाल दूजी चौपाईनी देशी ॥

चक्रवर्त्ति पूरब भव जाण, वइरनाभ तिहां नाम वखाण । ऋषभदेव प्रणमुं जगभाण, गुण गावतां हुवे जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ विमलराय पूरब भव नाम, अजित जिनेसर करुं प्रणाम । विमल बाहन पूरब भव राय, श्रीसंभव जिन प्रणमुं पाय ॥ २ ॥ पूरब भव धर्मसिंह राजान, अभिनन्दन प्रणमुं शुभ ध्यान । पूरब भव सुमति प्रसीध, सुमति जिनेसर प्रणमुं सीध॥३॥ पूरब भव राजा धर्म मित्त, पद्मप्रभुजाने वांदुनित्त । पूरब भव जे सुन्दर बाहू, तेह सुपास प्रणमुं जगनाहू ॥ ४ ॥ पूरब भव दोहबाहु मुनीस, चंदा प्रभु प्रणमु निश-दोस । जुगबाहु पूरब भव जीव, प्रणमुं सुविध

जिणंद सदीव ॥ ५॥ लठुबाहु पूरब भव जास, श्रीशीतल जिन प्रणमुं उल्लास। दत्त (दिण्ण) राय कुल तिलक समान, प्रणमुं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥ इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवन्त। वास पूज्य प्रणमुं भगवन्त ॥ पूरब भव सुन्दर बड़ भाग, बंदु विमल धरी मन राग॥ ७ ॥ पूरब भव जे राय महिन्द, तेह अनन्तजिन प्रणमुं सुखकन्द। साधु शिरोमणि सिंहरथ राय, धरमनाथ प्रणमुं चित्त लाय ॥ ८ ॥ पूरब भव मेघरथ गुण गाऊं, शांति नाथ चरणे चित्त लाऊं ॥ पहले भव रूपो मुनि कहिये, कुन्थनाथ प्रणम्यां सुख लहियें ॥९॥ राय सुदंसण मुनि विख्यात, वन्दु अरिजिन त्रिभुवन तात। पहले भव नन्दन मुनि चन्द, ते प्रणमु श्रीमल्लि जिणंद ॥ १० ॥ सिंहगिरि पूरब भव सार, मुनिसुव्रत जिण जगदाधार। अदीण शत्रु मुनिवर शिव साथ, कर जोड़ी प्रणमुं नमिनाथ ।११। संख नरेसर साधु सुजाण अरिट्ठनमि प्रणमुं

गुणखाण । राय सुदंसण जेह मुनीस, पार्श्वनाथ प्रणमुं निशदीस ॥ १२ । छट्ठे भवे पोटिल मुनि जाण, क्रोड बरस चारित्र प्रमाण । तीजे भवें नदन राजान कर जोड़ो प्रणमुं वर्द्धमान ।१३। चौवीसे जिनवर भगवन्त, ज्ञान दरसण चारित्र अनन्त । बार अनन्त करूं परणाम, दुष्ट कर्म क्षय करसुं साम ॥१४॥

दोहा

मेरु थकी उत्तार दिसें इणहिज जम्बूद्वीप ।
ऐरवत क्षेत्र सुहावणो, जिणविध मोती सीप ।१।
तिहां चोवीसे जिग थया, चंद्रानन वारिषेण ।
एहिज चोवीसी सही, ते प्रणमुं समश्रेण ॥२॥

॥ ढाल ३ जी राग बेलावली ॥ ए देशी ॥

चन्द्रानन जिण प्रथम जिणेसर, बीजा श्री सुचंद भगवंतके । अग्गिसेण तीजा तीर्थंकर, चौथा श्री नदिसेण अरिहंत के । त्रिकरण शुद्ध सदा जिण प्रणमुं ॥ १ ॥ एरवय क्षेत्र तणा रे

चौवीस, ऋषभादिक स्वामी अनुक्रम हुवा, एक समय जनम्या सुजगीसके ॥ त्रि० ॥ २ । पचमा इसिदिण्ण थुणीजे, बवहारी छठा जिणरायके । सामीचन्द सातमा जिन समरु, जुत्तिसेण आठमा सुख सायके ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ नवमा अजिय सेण जिण प्रणमु , दसमा श्री सिवसेण उदारक । देव सम्म इग्यारमा गाउं, बारमा निक्खित्त सत्थ सुखकारक ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ तेरमा असजल जिन तारक, चौदमा श्री जिणनाथ अनंतक । पनरमा उवसंत नमिजे, सोलमा श्री गुत्तिसेण महंतक ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सत्तारमा अति पास थुणीजे, प्रणमु अठारमा श्री सुपासक । उगणीसमा मेरुदेव मनो-हर, वीसमा श्रीधर प्रणमु हुल्लासक ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ इकवीसमा सामीकोट्ठ सुहंकर, बावीसमा प्रण-मु अग्गिसेणक । तेवीसमा अग्गिपुत्त अनोपम चोवीसमा प्रणमु वारिषेणक ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ चोथे अंग थकी ए भाख्या, अडतालीस जिणे-

सर नामक । छठे अंग कह्या मुनिसुव्रत, सुख-
विपाक जगबाहु स्वामक ॥ त्रि० । ८ ॥ जिण-
पचास ए प्रवचने, इम अनंत हूवा अरिहंतक ।
विहरमान बलि जे जिन बंदु, केवली साधु सहु
भगवंतक ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ सिद्ध थवा बलि सं-
प्रति वरते, कर जोड़ी प्रणमुं तस पायक । हवे
जे आगम थुणीजे, ते मुनिवर कहस्युं चित्त-
लायक ॥ त्रि०॥ १० ॥ जिनवर प्रथम जे गणधर
समणि, चक्रवर्ति हलधर वली जेहक । पूरब भव
तसु नाम जे तस गुरु, गाइस्युं चौथा अंगथी
तेहक ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ चोवीसे जिन तीर्थ अंतर,
कोड़ असंख्य हुआ मुनि सिद्धक । कर जोड़ी
प्रणमुं ते प्रहसमें, नाम कहुँ हवे जे परसिद्धक ॥
॥ त्रि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ राग धन्या श्री नी देशी ॥

प्रहसमें प्रणमुं ऋषभ जिनेसरु, श्री मेरु-
देवी सोध सुहंकरु । चौरासी गणधर शीरोमणी

प्रणमुं मुनिवर जे थया केवली । श्री सुपास वि-
दर्भ गुणदधि प्रणमुं, सोमा समणो गुणनिधि ।।
गुणनिधि नवसे क्रोड सागर अंतरे जे केवली,
तेह प्रणमुं भावस्युं ए दुःख जावे सहु टली ।
श्रीचन्द्र प्रभु दीनगणधर सती समणा ध्याइये,
नेऊं सागर क्रोड अंतरे केवली गुण गाइये ।।६।।

ढाल ५ मी ।

सफल संसार अवतार ए हुँ गिणूं ।। ए देशी ।।

सुविधि जिणेसर मुनि वाराहए, वारुणो
वंदिये चित्त उच्छाहए । अंतर कोड नव सागर
सहु जिहां, कालिकसूत्र तणो विरह भाष्यो इहां
।। १ ।। स्वामि शितलजिन साधु आणद ए, सती
सुलसा नमुं चित्त आणंदए । एक सागर तणो
कोड अन्तर कह्यो, एकसो सागर ऊणो करि
संग्रह्यो ।।२।। सहस छवीस लख छांसठ उपरे,
कालिकसूत्र तणो छेद इण अन्तरे । श्री श्रेयांस
मुनि गोथुभ ध्याइये, धारिणी साहुणी चरण चित्त

लाइये ।। ३ । पूर्बभव गुरु कहूँ साधु सभूत ए, विश्वनन्दी वली श्रमण संजुत्तए । अचल मुनिवर नमु पढम हलधारए, बंधन त्रिपृष्ट केशव सिरदार ए ।। ४ ।। चोपन सागर बीच थया केवली, बंदिये सूत्र तणो विरह भाष्यो वली । इम विच्छेद बिच सात जिण अन्तरे, जाणिये शांति जिनवर लग इणि परे ।। ५ ।। स्वामी वासुपूज्य जिन साधु सुधर्म धरे, साहुणी वली जिहां धरणी आपदा हरे । सुगुरु सुभद्र सुबन्धु बखाणिये, विजय मुनि बंधव द्विपृष्ट हरि जाणिये ।।६।। तीस सागर बीच अन्तरे जे थया, केवली बंदिये भाव भगते सया । विमल जिन वंदिये साधु मन्दर वली, समणी धरणीधरा आगमे सांभली ।।७।। गुरु सुदरिसण मुनि सागर-दत्त ए, स्वयंभू हरि बंधव भद्र शिवपत्तए । अन्तर सागर नव बीच केवली, बंदिये जे थया ते सहु-वली वली ।। ८ ।। स्वामी अनन्त जिन प्रणमिये जसगणो, समणी पउमा नमु सुगुरु श्रेयांस मुनि

सीस अशोक भव बीये सुप्रभ जति । भ्रात पुरुषोत्तम केशव नरपति ।।९।। सागर चारनो अन्तरो भाखिये, केवली वंदि ने शिवसुख चाखिये । जिणवर धर्म अरिट्ठ गणधर कहुं, सती श्रमणी शिवा वांदी शिवसुख लहुँ ।। १० ।। पूर्वभव कृष्णागुरु ललित सुसीसए, प्रणमुं राम सुदसण निसदासए । बंधव पुरुषसिंह केशव थयो, पांच आश्रव सेवी निरय पुढवी गयो ।। ११ ।। सागर तीन बीच आंतर भाखियो पल्य पऊणो करी ऊणो ते दाखियो तिहां कणे राधरिसी मघव मुनिवर थयो तिणे नवनिधि तजी शुद्ध संयम ग्रह्यो ।। १२ ।।चोथो चक्रीसर सनतकुमार ए, वंदिये अंतकिरिया अधिकारए । इम इण अंतर मुनि मुक्ति पहूँना जिके, केवली वदिये भाव भगते तिके ।। १३ ।।

।। ढाल छट्ठी ।।

उत्तम हिवसिवरायऋषि महासतीय जयन्ती एदेशी।

सोलहमा श्रीशान्ति पउ चक्रीजिनराण, चक्रा-

युधगणि समणो सुई प्रणम्यां सुखपाया । पूर्व भव गंगदत्त गुरु तसु शिष्य वाराह, बंधव पुरुष पुण्ड-रीक राम आणंद उच्छाह ।। १ ।। अर्द्ध पल्योपम अंतरे ए, सिद्धा बहु भेद तेह मुनिवर वंदता, नहीं तीरथे छेद । चक्री श्री कुंथ नमु शाम्ब गणधार, अजुअज्जा बंदतां, हुवे जय-जय कार ।।२।। सागर गुरु धर्मसेन, सिस नन्दन हलधार, बंधव केसवदत्त नमूं, समवायांग प्रकार । कोड़ सहस बरसे करी, ऊणो पलिये चौभाग, इण अन्तर हुवा सिद्ध, बहु वांदु धरि राग ।। ३ ।। अर्जुन चक्री सातमा ए, कुम्भ गणधर गाउं, रक्खिया समणी वंदता ए, सिव संपत्त पाउं, कोड सहस वर्ष अंतरे ए, सिद्धा मुनि बृन्द, सातमी नरक सुभूम चक्री, पहुल्यो मतिमन्द ।।४।। मल्लि जिनेसर वंदिये, वले भिसय मुणिंद, गुरुणी वंदु बंधुमति, चरण कमल सुख-कन्द । सहस पंचावन साधवी ए, साधु सहस चालीस, बत्तीस सो मुनि केवली ए, प्रणमुं निस-

दीस ।।५।। मल्लि जिनेसर पूर्वभव, महाबल अण-गार, तात वलि तसु वंदिए, वल मुनिअनवार। अचल जीव पडिबुध थयो ए, धरण चन्द्रछाय, पूरण जीव ते संख वसु रूपी कहाय ।।६।। वेसमण ते अदीनशत्रु, अभिचन्द्र जितशत्रु, लहि केवल मुगते गया, पूर्वभव मित्रु । मुनिवर नंदने नदमित्र सुमित्र बखाणुं, बलमित्र वली भानुमित्र, अमर-पति आणुं ।।७।। अमरसेण महासेण, आठे नाय-कुमार, मिलि सगाते साधु थया अंग छठुं विचार अन्तर वलि इहाँ जाणीये, लाख चोपन्न वास, केवली तिहां बहु वंदिये, धरी हर्ष उल्लास ।।८।। वंदु जिणेसर वीसमा, मुनिसुव्रत स्वामी, गणधर इन्द्रने पुप्फमती प्रणमुं शीरनामी सुरवर सातमे कप्प थयो, मुनिवर गंगदत्त, कत्तिय सोहम इन्द्र पणे, सुरश्रीय संपत्त ।। ६ । रायरिसि महापउम चक्री, वांदु कर जोड़ी, समुद्रगुरु अपराजित ए गाउं मदमोडी। रामकृष्णेश्वर वदिये ए, नाम पउम

जेह, केशव नारायण तणो ए, बांधव कहुँ तेह ॥ ॥ १० ॥ केवल लही मुक्ते गया, आठ बलदेव, नवमो सुरसुख अनुभवो ए, लेहसे शिव हेव । मुनि-सुव्रत नमि अन्तरो ए, वर्ष लाख छ होई, केवली सिद्धा ते सहु, प्रणमुं सूत्रजोई ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

नवकार जपो मन रंगे ॥ ए देशी ॥

एक वीसमा श्रीनमिजिन वंदु, गणधर कुम्भपर–धान री माई । समणी अनिला ना गुण गावता ॥ सफल हुवे निज ज्ञान री माई ॥ १ ॥ श्रीजिनशा-सन मुनिवर बंदु, भक्ते निज शिर नाम री माई ॥ ॥ ए आ० ॥ कर्म हणीने केवल पाम्या, पहुत्या शिवपुर ठामरी माई ॥ २ ॥ नवनिध चौदे रयण रिंध त्यागी, चक्री श्री हरिसेणरी माई ॥ आश्रव छण्डी संवर मंडो, वेगे वरो शिव जेणरी माई ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ वरस वलीइहां दश लख अन्तर, तिहां चक्री जयरायरी माई । वली अनेरा मुक्ति

पहोत्या, ते बंदु मन लायरी माई ।। श्रीजिन०।४।।
ग्रह ऊठी प्रणमु नेमीश्वर, समण ते सहस ग्रठार-
री माई । वरदत्त ग्रादि मुनि पनरेसे, बंदु केवल
धाररी माई ।। श्री० ।। ५ ।। गौतम समुंद्रने सागर
गाउं, गंभीर थिमिति उदाररी माई।ग्रचल कंपिल्ल
ग्रछोभ पसेणई, दशमो विष्णुकुमाररी माई ।।
श्री० ।। ६ ।। ग्रक्षोभ सागर समुद्र वंदु, हिमवंत
ग्रचल सुचंगरो माई । धरण पूरण ग्रभिचंद
ग्राठमो, भण्या इग्यारे ग्रंगरी माई ।। श्री० ।।७।।
ग्रंधक बृष्णि सुत धारणी ग्रंगज, मुनिवर एह
ग्रठाररी माई ।। ग्राठ ग्राठ ग्रंतेउर छंडी, पाम्या
भवजल पाररी माई ।। श्री० ।। ८ ।। वसुदेव देवकी
ग्रंगज छऊं ग्रणीयसे ग्रणंतसेणरी माई। ग्रजित
शेणने ग्रणिहतरिपु, देवसेण सत्रु तेणरी माई ।।
श्री०।।६।। सुलसानाग घरे सुर जोगे वधिया रमणी
बत्तीसरी माई । छंडो छठ्ठ तप चौदस पूर्वी, संयम
वरसे वीसरी माई ।। श्री० ।।१० ।। वसुदेव देवकी

अंगज आठमो मुनिवर गजसुकुमालरी माई । सही उपसर्गने शिवपुर पहोता, वंदु ते त्रिकालरी माई ॥ ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सारण दारुय कुमर प्रणा हिट्ठी चौदे पूरब धाररी माई ।संयम वच्छर वीस आराधी, कीधो कर्म संहाररी माई ।श्री०।१२।जाली मयालीने उवयाली पुरिससेण वारिसेणरी माई । बारे अंगी सोला बरसे, पाल्यो संयम तेणरी माई ।।श्री०।१३। वसुदेव धारणी अंगज आठे रमणी तजी पचासरी माई । समता भावे शिवपुर पोहत्या, प्रणमु तेह उल्लासरी माई ।।श्री०।।१४ ।। सुमह दुमुहने कूव- य ए वंदु, बलदेव धारणी पुत्ररी माई । वीस वरस संयम धर सीख्या, चौदे पूरव सूत्ररी माई ।। श्री० ।१५।। रुकमणी कृष्ण कुमर कहुं पज्जुन्न, जंबूवती सुत सांबरी माई । पज्जुन्नसुत अनिरुद्ध अनोपम जास वेदर्भी अंबरी माई ।। श्री० ।। १६ ।। समुद्र विजय शिवादेवीरा नंदन, सत्यनेमी दृढ़नेमरी माई। बारे अंगी सोला बरसे व्रत, रमणी पचासे तेमरी

माई° ।। श्री० ।। १७ ।। समुद्रविजयसुत मुनि रह नेमि, ए एहु राजकुमाररी माई । केवल पामी मुक्ते पहोत्या, ते प्रणमुं बहुबाररी माई ।। श्री० ।। ।। १८ ।। आरज्यां जक्षणी आददे सिक्षणी, समणी सहस चालीसरी माई । साधव्यां सिद्धि तीन सहस ते, बन्दु कुमति टालीसरी माई ।। श्री० ।। १९ । पउमावई गौरी गंधारी, लखमणा सुसीमा नामरी माई । जम्बूवती सतभामा रुकमणी, हरि रमणी अभिराम री माई ।।श्री०।।२० ।। मूल सिरी मूलदत्ता वेहुं संवकुमररी नाररी माई । अन्तगड़ अंगे ए सहु भाषी, पामी भवजल पाररी माई ।। श्री०।। ।। २१ ।। उत्तराध्ययन राजेमती सती, संयम सील निहालरी माई । प्रतिबोधी रहनेमी पाम्मो, सासता सुख निरवाणरी माई ।। श्री० ।। २२ ।।

।। ढाल ८ मी ।।

गौतमसमुद्र सागर गम्भीरा ।। ए देशी ।।

यावच्चासुत सुक सेलग आद, पंथक प्रमुख

मुनि पांचसे ए। मास संलेषणा करी तप अति-घणां, पुण्डरीकगिरी शिवपुर वसेए ॥ राय युधिष्ठिर भीम अतुलबली, अर्जुन नकुल सहदेवजी ए। राय श्री परिहरो सुध संयम धरी, साधुजी शिवपदवो वरीए।१। चौद पूरवधरी थीवर धर्मघोष धर्म रुचि सीस सहु गुण भर्या ए॥ नाग श्री माहणी, दत्त विष जे हणी, तुंबानो मास पारणो करायो ए ॥ सर्वार्थसिद्ध अवतरी तद नरभव करी, क्षेत्रविदेहमें शिवगयो ए। ते मुनी वंदता कर्मवली नंदतां, जन्म जीवित सफलो थयो ए ॥ २ ॥ समभी गोवालिया जेण सुकुमालिया, दाखिया तास सहु गुण थुणुं ए। तेव वली सुव्रता द्रौपदी संयता, नेमशासन नित गुण भणुं ए ॥ विमल अनन्तजिन अन्तरे राय, महाबल देवी पद्मावती ए। तास ते अंगय कुमर वीरंगय, तरुण बत्तीस तरुणीपती ए ॥ ३ ॥ ताम सिद्धत्थ गुरु पास संयम वरु, ब्रह्मलोके सुर उपनो ए। चवी बलदेव घर रेवती

उवरवर, निसढ नाम सुत संपनो ए ।। नेमपाय अनुसरी अथिरधन परिहरी, रमणो पचवास तजी व्रत ग्रह्यो ए । करी बहु सम दम वरस नव सांयम पालीने सर्वार्थसिद्ध सुख लह्यो ए ।।४।। क्षेत्र विदेहमें केवल सांयम, सिद्ध होसी वली ते मुनि ए । इणपरिअनि✡ वह वेहप्रगति सहु, जुत्ति कहुँ गुण थूणुए । दसरह दढरह महाधनु तेह, सतधनु गुण मुज मन वस्या ए । नवधनु दसधनु सयधनु मुनि एह, भाषिया सूत्र वण्हिदशाए ।।५।। पूरब भव हरिगुरु नाम द्रुमसेण, ललित⁕तेराम⁂पूरब भवे ए ।राम बलदेव वली नवमो हलधर ब्रह्मलोक सुख अनुभवे ए । चविजिण तेरमो नाम निकसाय, थायसी जिन सूरतरु समोए । बंधव केशव एक अवतार, अमम

✡ बारमा उपाग "वाह्निदशा' के तेरह अध्ययनोमे 'निसढ' से 'सयधणु' पर्यन्त १३ नाम कहे है ।

⁕ नवमा बलदेवका पूर्वभव रायललिय (राजललित) नाम से प्रसिद्ध है (समयायाग सूत्र १५८) ।

⁂ राम अर्थात् बलराम नामका नवमा बलदेव ।

होसी जिन बारमोए ॥६॥ सहस त्र्यांसिया सातसे आधिया, बरस पच्चास इहां अन्तरोए। तिहां किण चित्त मुनि सिद्धसंपत तास, पाट वंशी कीरत करू ए ॥ पूर्वभव बधव चक्री ब्रह्मदत्त सातमी नरकमें संचर्या ए। इण अन्तरे वली नमुं बहु केवली, वेगे शिव सुन्दरी जे वर्याए ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६ मी ॥

रामचन्द्रके बागमें चम्पो मोरी रह्यो री ॥ए देशी

तेवीसमा जिन तारक, पुरिसादाणीय पास। मुनिवर सोले सहस वर गणधर आठ हुल्लास ॥ (अज्जदिन्न❀) शुभ अज्जघोष, वांदु वसिट्ठनाम।

❀ पार्श्वनाथ स्वामीके प्रथम गणधर 'अज्जदिन्न' (आर्यदत्त) थे ऐसा शास्त्रोंसे स्पष्ट ज्ञात होता है परन्तु स्थानांग-सूत्रमें 'शुभ' से 'जस' पर्यन्त आठ गणधरोंके नाम उपलब्ध होते है किन्तु इस सूत्रका टीकाकार अपनी टीकामें ऐसा लिखते हैं "आवश्यक सूत्रमें पार्श्वनाथ स्वामीके दस गणधर दस सुने जाते हैं, यथा "दस नवगं गणाण माणं जिणिंदाणं" (तेवीसवें जिनके दस और चौवीसमे जिनके नवगुण हुए हैं) किन्तु अल्पायु आदि कारणोंसे उन दो गणधरों की यहां विवक्षा नहीं की गई ऐसा सम्भावना है" ऐसी टीकाका भाव देख कर आठ गणधरों की गिनतीमें 'अज्ज-दिन्न' का नाम न मिलनेसे यहां दूसरी बात हुई जैसे उनकी पुस्तकके अनुसार यह नाम कोष्टकमें स्थापित किया गया है।

वली ब्रह्मचारी सोमने, श्रीधर करु प्रणाम ॥१॥ वीरभद्र जस आदि सिद्धा सहस प्रमाण। तेह मुनिवर वंदता, होवे परम कल्याण। साध्वी संख्या सहु अडतीस सहस बखाणु ॥ पुष्पचूला-दिक सहस दो सिद्धि ते मन आणु ॥ २ ॥ समणी सुपासा सोझसीभाषी, धर्म चौजाम। ए अधिकार कह्यो श्रीठाणांग सुठाम॥ चौदश पूर्वी वली, चौनाणी मुनि केसीकुमार। परदेशी प्रतिबोधियो कीधो बहु उपकार ॥ ३ ॥ वरस अठाईसो अन्तरो सिद्धा साधु अनेक। तेह सहु विनयसे वांदिये, आणि चित्त विवेक ॥ मुनिवर चौदे सहस गुरु, प्रणमु श्रीमहावीर। सातसो केवली वंदिये, एका-दश गणधर धीर ॥ ४ ॥ इन्द्रभूति अग्निभूति, तीजा वांदु वाउभूई। वियत्त सुधर्मा वंदता, मुझ मति निर्मल होई॥ मंडिय मोरियपुत्त, अकंपित नित सिव्वास, अचलभूई मेतारिय वदु श्रीप्रभास

ॐ सुपासाका अधिकार स्थानाङ्ग ठा ६ मे कहा है।

॥ ५ ॥ वीरंगय* वीरजसनृप, संजय एणोयक राय । सेय सिव उदायण, नरपति संख कहाय ॥ वीर जिनेसर आठेइ, दीक्षा रायसुजाण । मुनि–वर पोटिल बांध्या गोत्र तीर्थंकरठाण ॥ ६ ॥ पालक श्रावकपुत्र ते, वांदु समुद्रपाल । पुन्यने पाप बिहुँक्षय करो, सिद्धा साधु दयाल ॥ न–यरी सावत्थी बिहुं मिल्या, केशी गौतम स्वामी सिस्स संदेह परिहरी, पंच महाव्रत लिया शिर नामी ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० मी ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

माहनकुण्ड नयरीनो अधिपति, माहणकुल नभ-चंदोजी । वीर जिनेसर तात सुगुण नीलो, ऋषभ-दत्त मुणींदोजी ॥ नि० ॥ १ ॥ नित नित वांदु मुनिवर ए सहु, त्रिकरण शुद्ध त्रिकालोजी । विधि सु

* वीरगय (वीराङ्गद) प्रमुख आठराजा श्रीमहावीर स्वामीके पास दीक्षा ली । (स्थानाङ्ग-सूत्र, ठाणा ८) ।

देई रे तीन प्रदक्षिणा, कर अंजलीनिज भालोजी।।
।। नि० । २ ।। राय उदायण* सिंधु सो वीरनो,
निरमल संजम धारोजी। सेठ सुदर्शन मुनि मुगते
गया, सुणी महाबल अधिकारोजी ।नि०।३। काला-
सवेसिय☼ गंगेयमुणी पोग्गलने✲ शिवराजीजी।
कालोदाई अइमुत्तामुनि, वांदता सीजे काजोजी।नि०
।४। मंकाई❋ मुनिवर किकम वंदिये, अर्जुनमालो
हुल्लासोजी। कासव खेमने धृतिहर जाणिये, केवल
रूप कैलासोजी ।। नि० ।५।। मुनि हरिचंदण बार-
त्तय वली, सुदर्शन पूर्णभद्दोजी। साध सुमणभद्र
समता आदरे, सुपइट्ठ समय सवदोजी ।। नि०।६।।
मेघमुनीश्वर अइमुत्ता मुनि, रायऋषि अलक्खोजी
श्रीजिनसीस ए सहु मुगते गया, सेवे सुरनर सक्कोजी

---

* उदायनका अधिकार भागवती, श० ३, उ० ६ मे कहा है।

☼ कालासवेसियपुत्त (कालाश्यवैशिक पुत्र) (भगवती, श० १ उ० ९)

✲ पोग्गलका अधिकार (भगवती, श० ११ उ० १२ मे कहा है।

❋ "मकाई" से 'अलक्खो" पर्यन्त १६ मुनियोका चरित्र-अन्त कृद्दशा वर्ग ६ मे कहा है।

।। नि० ।। ७ ।। सहस छत्तीसे समणी चंदणा, आदे चौदसे सिधो जी, देवानंदा जननी वीरनी केवलज्ञाने संबंधोजी ।नि०।८। समणी जयवंती पढमसिज्यातरी, सिद्धी केवल पामीजी । नंदा● नंदवती नदोत्तरा, वली नंदसेणिया नामोजी ।। नि० ।।९।। मरुता सुमरुता महामरुता नमुं मरुदेवा वली जाणोजी । भद्रा सुभद्रा सुजाया जिनतणी, पाली निर्मल आणोजी ।नि०।१०। सुमणा समणो भूपदिन्ना नमुं, राणी श्रेणिकरायजी । मास संलेषणा तेरे सिद्ध थई,प्रणम्यां पातक जायजी ।।नि०।।११।। काली✻ सुकाली महाकाली नमुं, कण्हा सुकण्हा तेमोजी । महाकण्हा वीरकण्हा साहूणी, राम कण्हा सुद्धनेमो जी ।। नि० । १२ ।। पिउसेणकण्हा महासेणकण्हा ए दश श्रेणिकनारीजी निज निज नंदन कालसुणे

● 'नन्दा' से 'भुपदिन्ना' पर्यन्त १३ महासतियोका चरित्र-अन्त कृद्‌पा वर्ग ७ मे कहा है ।

✻ 'काली' से महासेणकण्हा' पर्यन्त १० महासतियोंका चरित्र अन्तकृद्दशा वर्ग ८ मे कहा हैं ।

करी लीधो सँजम भारोजी ॥ नि० ॥१३॥ एदस समणी तप रयणावली, आदे दस प्रकारोजी । लई केवल ए सहु मुगते गई, ते बंदु बहु बारोजी॥नि०॥१४॥

॥ ढाल ११ मी ॥

सुखकारण भवियण समरो नित्य नवकार । ए देशी।

धर्मघोषमुनीश्वर, महाबल गुरु सुतधार। जिण पूछ्यो रोहे, लोकालोकबिचार ॥१॥ वेसालियसावय, पिंगल नाम नियंठ। पडिवायक पुछ्या, खंधरु समय पियंठ ॥२॥ कालियपुत्ता● महेल, आणंदरविखय ज्ञानी । वली कासव चौथे, थिवरां पास संतानी ॥३॥ मुनि तीसग❋ कुरुदत्तपुत्र नियंठीपुत्त धननारदपुत्र-मुनि✠, सामहत्थी संजुत्ता ।४। सुणखत्त✖सव्वाणुभूई, खपकआणंद☼ । जिन औषध

● भगवती श० २ उ० ५ । ❋ भगवती श० ३ उ० १ ।

✠ भगवती श० ५ उ० ७ ।

✖ भगवती, श० १५ उ० १ । ☼ खपक आणद (क्षपकआनन्द) अर्थात् आनन्द नामका तपस्वी साधु ।

आएयो धन धन सिंहमुणिंद ।। ५ ।। वली पूछया जिमने लेश्यादिक बहुभेद । गुण गाउं महामुनि माकंदो पुत्र उमेद ।६।। हवे श्रेणिकसुत कहुं, जाली● कुंवर मयाली । उवयाली पुरिससेण, वारिसेण आपदा टाली ।। ७ ।। दीहदंतने लट्ठदंत, धारणी नंदण होय । बेहलने विहायस, चेलणा अंगज दोय ।। ८ ।। ईक नंदा नंदन, मुनिवर अभय महंत । दीहसेणने❀ महासेण, लट्ठदतने गूढ़दंत ।। ।। ६ ।। सुधदंत कुमर हल, द्रमने वली द्रम-सेण । गुण गाउं महाद्रुमसेण। सिंहने सिंह सेण ।। १० ।। मुनिवर महासेन पुण्यसेन पर धान । ए धारणी अंगज, तेजे तरणि समान ।। ।।११। सहुश्रेणिकनंदन, इयदस तेरे कुमार । आठ आठ रमणी तजी, अनुत्तरसुर अवतार ।।१२।।

● 'जाली' से 'अभय' पर्यन्त दश मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोप-पातिक वर्ग १ मे कया है । ❀ 'दीहसेण' से 'पुण्यसेन' पर्यन्त तेरह मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग २ में कहा है ।

तिण अवसर नयरी काकंदी अभिराम।
तिहां परिबसे भद्रा, सारथवाही नाम ॥ १३ ॥
तस नन्दन धनो * सुन्दर रूपनिधान।
तिण परणी तरुणी, बत्तीस रंभा समान ॥ १४ ॥
जिनवयण सुणीने, लीधो संजम जोग। मुनि
तरुण पणेमें सहु, छण्डया रसना भोग ॥ १५ ॥
नित छठ तप पारणो, आंबीले उज्झित भात।
जस समण वणीमग, कोई न बछे भात ॥ १६ ॥
अति दुक्कर संयम, आराध्यो नवमास। करी
मास संलेषणा, सर्वार्थसिद्ध मांही बास ॥ १७ ॥
ककंदी, सुणक्खत्त, राजगृही इसिदास। पेलक
ए वेउं, एकण नगर हुल्लास ॥ १८ ॥ राम पु.
त्रने चन्द्रमा। साकेतपुर वर ठाम। पिट्ठिमाइया
पेढाल-पुत्ता वाणियाग्राम ॥ १९ ॥ हत्थिणापुर
पोट्टिल, सहु ए धन्ना समान। तरुणी तप

---

* 'धन्ना' से 'वेहल्ल' पर्यन्त दश मुनियोका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग ३ मे रहा है।

जननो, संयम वरसो मान ॥ २० ॥ हवे वेहल्ल कुमर कहुं, राजगृही आवास । सर्वार्थ सिद्ध पहुंतो, धर संयम छई मास ॥ २१ ॥ ए एक भवे शिव-गामी जिनवर सीस । सहु नवमे अंगे भाख्या मुनि तेतीस ॥ २२ ॥ हवे पउम महापउम, भद्र सुभद्र बखाण । पउमभद्दने पउमसेण, पउमगुम्म मन आण ॥ २३ ॥ नलिणीगुम्म आणंद, नदन एह मुनि जान । कालादिक दस सुत, कप्पवडसिया ❀ ठाण ॥ २४ ॥ मुनि उदये पुच्छ्यया, गौतमने पच्चखाण । चउजाम थकी कीयो, पंचजाम परिमाण ॥ २५ ॥ जिणें जिन-मत मंडी, खंडो कुमत अनेक । ते आर्द्रकुमार मुनि, धन तसु बुद्ध विवेक ॥ २६ ॥ गद्दभालि✱ बोहिय, संजय नृप अणगार । मुनि क्षत्री भा-

---

❀ कप्पवडसिया (कल्पावतसिका) अर्थात् नवमा उपागमे 'पउम' मे 'नन्दण' पर्यन्त १० मुनियोके नाम कहे है ।

✱ गर्दभलि मुनिसे प्रतिबोध पाया संजय नृप, उत्तराध्ययन, अ० १८

ख्या, बहुविध अर्थ प्रकार ॥ २७ ॥ महीमडल विचरे, विगत मोह अनाथ☼ । गुणगावंता अह-नीस, संपजे शिवपुर साथ ॥ २८ ॥ नृप श्रेणि-कनंदन, मुनिवर मेघ सुजाण । तजी आठ अंते-उर, उपन्यो विजय विमाण ॥ २९ ॥ अपमानी रयणा*, आदर्यो संयम जेह । जिनपालित* मुनिवर, सोहम सुरथयो तेह ॥ ३० ॥ हरि चोर चोलाती, सुसमा तात ते धन्नो । आराधो सयम सोहम सुर उववन्नो ॥ ३१ ॥ श्री वीर जिनेसर, सासण मुनिवर नाम । नित भक्ते गाउं तेह तणा गुण ग्राम ॥ ३२ ॥

॥ ढाल १२ ॥

॥ वेसालियसावय पिंगल० ॥ एदेशी ॥

धर्मघोष गुरु शिष्य सुदत्त, मासने पारणे तेह

☼ अनाथ मुनि, उत्तराध्ययन अ० २०

* रयणा रत्नद्वीपमें रहने वाली देवी ।

* जिनपालितका अधिकार ज्ञाता १ अ० ९ अध्ययनमें कहा है ।

सुपत्त, प्रतिलाभ्यो सुभचित्त । सुमुख थयो भव बिय सुबाहु, सुर थयो संजम ग्रही साहु, गुण तसु गाऊं नित्त ।।१।। श्रीजुगबाहु जिणवर आवे बिजय कुमार प्रतिलाभे भावे, बीजे भवे भद्रनंद । भोग तजी थयो साधु मुणीन्द, करी सलेषणा लह्यो सुखवृन्द, गुण तसु गात आणंद ।। २ ।। ऋषभदत्त पहले भव संत, तिण प्रतिलाभ्यो मुनि पुष्पदंत, तिहांथी थयो सुजात । तृण सम जाणी सहु रिद्धिजात, आदरी आठे प्रवचन मात, भविषण तसु गुण गात ।। ३ ।। पहले भव नृपति धनपाल, वेसमणभद्रने दान रसाल, देई सुवासव थाय, । संयम लेई ते मुनिराय, लहि केवल वलो शिवपुर जाय, ते वंदु मन लाय ।।४।। पूर्वभव मेघरथ राजान, सुधर्म मुनिने देई दान बोजे भव जिनदास । संवरे पालो जे थयो सिद्ध केवल दर्शन ज्ञान समिद्ध, वादु तेह उल्लास ।।५।। मित्ररायो पूर्वभव जाण, संभूतिविजय मुनि

दान वखाण, कुमरते धनपति होई। वीर समीपे संयम लीधो, ततक्षरण कर्महणीने सीधा, दिन प्रति वंदु सोई ॥ ६ ॥ पूर्वभव नागदत्त धनीसर प्रतिलाभ्यो इन्द्रपुर मुनीसर, महाबल नाम कुमार। संयम लेई कारज साख्या, भवसागरथी आतम ताख्या, ते बंदु बहु वार ॥ ७ ॥ गृहपति पहले भव धर्मघोष, तिन प्रतिलाभ्यो अति संतोष, नाम मुनि धर्मसिह। बीजे भव थयो भद्र-नंदी, मुक्ति गयो भव बंधन छंदी, ते वंदु निस-दीह ॥ ८ ॥ पहले भवजित शत्रु नरेश, प्रतिला-भ्यो धर्मवीर्य सुलेस, वली महचन्द नाम कुमार। तिरण छंडी वहु राजकुमारी पांचसे अपछराने उणी-हारी, ते वंदु केवलधारी। ६ ॥ विमल वाहन राजापूर्वभव, धर्मरुचि पडिलाभ्यो गुणस्तववरदत्त हुवो भवबीजे। संयम लेई सुरश्री पामी। कप्पंत-रियो जे शिवगामी, कीरति तेहनी कीजे ॥ १० ॥ पूर्वभव देई दान उदार, बीजे भव थया राजकुमार

त्यां तजी पांच पांचसे नारी। सहु थया वीर जिनेश्वरशिष्य, सुखविपाके एह मुनीस, पंचमहा-व्रतधारी ॥ ११ ॥ नमि ❀ मातंगने सो मिल गाऊं, रामगुत्त सुदर्शन ध्याउं, नमुं जमाली भगाली। किकम पेल्लक फाल यतीजी, अंतगढ़ अंगे वायणा बीजी, ठाणा अंग संभाली ॥१२॥ पूर्व भव महापउम ते बीजे,तेतलीपुत्र☼ मुनि प्रण मीजे, महापउम✖ पुण्डरीक तात। वली वन्दु जित शत्रु सुबुद्धी, कर्म हणी तिण करी विशुद्धी, ते मुनी वन्दु विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजय-घोष वांदु, बलश्री❀ नाम मृगापुत्र वांदु, कमला

❀ 'नमि' से 'फाल' (अंवडपुत्र) पर्यन्त दश नाम ठाणांग ठा० १० में कहे हैं।

☼ तेतलीपुत्रका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १४ अध्ययनमें कहा है।

✖ महापउम जो पुण्डरीक कंडरीकका पिता था उसका अधि-कार ज्ञाता १ श्रु० १६ अध्ययनमें कहा है ॥

❀ सुग्रीव नगरके राजा बलभद्र रानी मृगावतीका पुत्र बलश्री जो कि मृगापुत्र इस नामसे प्रसिद्ध था इसका अधिकार उत्त-राध्ययन अध्ययन १९ में कहा है।

वती❋ इषुकार पुत्र पुरोहित वली तसु नारी,नाम जसा संवेगे सारो,वंदता नित्य जयजयकार ॥१४॥

॥ ढाल १३ मी ॥

चतुर विचारिये रे ॥ ए देशी ॥

मुनि इसिदास✵ ने धन्नो वली वखाणीये रे, सुणक्खत्त कत्तिय संजुत्त । सट्ठाण शालिभद्र आणंद तेतली रे, दशार्णभद्र अइमुत्त ॥ १ ॥ मुनिगुण गाइये रे, गावंता परमाणंद । शिवसुख साध गुणे करी अहोनिस संपजे रे, भाजे भव भय दंद । मुनि० ॥२॥ अणुत्तर अंग नी एहीज बीजी वाचना रे, ए दश मुनिवर नाम । नन्दो-सूत्रमें साधु सुबुद्धि पणे कह्या रे, नन्दीसेण अभिराम ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ विषम नन्दो फल अधि-

---

❋ इषुकारपुर नगर इषुकार राजा कमलावती रानी भृगु पुरोहित वशिष्ठ गोत्रवाली जसा नाम भार्या और इनके दो पुत्र यह अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १४ मे कहा है ।

✵ 'इसिदास' से 'अइमुत्त' पर्यन्त दश मुनियोंके नाम ठाणा-ंगसूत्र ठा० १० मे कहे है ।

कार वली धन्नो मुनि रे, धन्नो देव धन तात। सुव्रता* समणी गुरुणी शिष्यणी पोटिल्ला रे, पुंडरीक** कुंडरीक भ्रात ॥मुनि०॥४॥ शिष्यणी सुभद्रा*** केरी गुरुणी सुव्रतारे, पूर्णभद्र सुचंग। मणिभद्रने दत्त शिव बल मुनिरे, अणाढिय पुप्फिया उपांग ॥मु०॥ ५॥ धन ते कपिल■ जति अति निर्मल मति रे, तिण तज्या लोभ संताप। इन्द्रपरीक्षा अवसर उपशम आदरीरे, नमो नमावे आप ॥मु०॥६॥ सुरवरसेवित श्रीहरिकेश** बलमुनि रे, संवर धार सुलेस। शक्रने प्रेरयो

---

* सुव्रताका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १४ अध्ययनमे कहा है।

** पुंडरीक तथा कंडरीकका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १९ अध्ययन तथा उत्तराध्ययन अध्ययन १० में कहा है।

*** सुव्रताकी शिष्यणी सुभद्रा थी यह अधिकार पुप्फिया उपांग अध्ययन ४ मे कहा है।

■ कपिलका अधिकार उत्तराध्ययन अ० ८ मे कहा है।

** हरिकेश नामसे प्रसिद्ध ऐसा बल नामका मुनि है, यह अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १२ में कहा है।

परतिख संयम आदर्यो रे, दशार्णभद्र* नरेस ॥
॥मु०।७॥ मुनि करकंडु* राजा देश कलिंग नो रे,
दुम्मुह पंचाल भूचाल । वली विदेही नामे नमि नर-
पति रे, नग्गई गंधार रसाल ॥ मु० ॥८॥ सिव *
बीजे ने महाबल* ए सहु राजवी रे, व्रत
लेई थया अणगार । काम कषाय निवारी शी-
तल आतमा रे, थिवर गंगेयो गणधार ॥ मु० ॥
॥ ९ ॥ हवे श्री वीर जिनेश्वर शिष्य सुहम्म गणी
रे, तास परंपर एह । जंबू प्रभवने वली शय्यं-
भव जाणिये रे, मनगपिया मुनि तेह ॥ मु० ॥
॥ १० ॥ श्रीयशोभद्रने मुनि संभूति विजय वली
रे, भद्रवाहु थूलभद्र एम । अनेरा जिणवर आणा ।

---

* दशार्णभद्रका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४४ मे कहा है ।

* करकडु आदि चार मुनियोंका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४५ मे कहा है ।

* शिवराजर्षिका अधिकार भगवती श० ११ उ० ९ में कहा है

* महाबलका अधिकार भगवती शतक ११ उ० ११ मे कहा है

मांही जे हुवा रे, ते मुनि गाऊं सर्वंद ।। मु० ।। ।। ११ ।। सूयगडाँग में साधु दोय कह्या रे, ठाणा अंग मांहो चालीस । एकसोगुणंतर चौथे अंगे कह्या रे, भगवती दोय तीस ।।मु० ।।१२।। पचास मुनि ज्ञाता मध्ये रे, अन्तगड नेऊ होय । तेतीस साधु नवमे अंगे कह्या रे, एकवीस विपाकमें जोय ।। मु० ।। १३ ।। राथपसेणी केसी समण वली रे, जंबूदीवपन्नत्ति रे माय । एरवयक्षेत्र तणा चक्री साधु सुहामणा रे, ते वंदू मनलाय ।। मु० ।। १४ ।। दस साधु कप्पवडसिया रे पुप्फिया मांही सात । चवदे भिक्खू वह्निदशा रे, हूँ वंदु दिन रात ।। मु० ।। १५ ।। बयालीस साधु उत्तराध्ययनमें रे, नन्दीसूत्रमें एक । आठ पाट श्रीवीर ना रे, हूं गाऊं धरिय विवेक ।। मु० ।। ।। १६ ।। सर्व साधु मिलने थया रे, पांच सो इकबीस । पन्नरे सूत्रमें जे कह्या रे, ते वंदू निसदीस ।। मु० ।। १७ ।। काल अनंते मुनिवर मुक्ते

गया रे, संप्रति बरते जेह । नाण दंसण ने चरण करण धुरंधरा रे, श्री देव वंदे तेह ।।मु० ।।१८ ।।

—✿✿—

॥ कलश ॥

चौवीस जिनवर प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुवा ।
संसार तारक केवली वली समण समणी सथुआ ।
संवेग श्रुतधर साधु सुखकर आगम बचने चे सुण्या
दीपचन्द्र गुरु सुपसाये श्रीदेवचन्द्रे संथुण्या ।। ११ ।।

देवचन्दजीके गुरु दीपचन्दजी इनके गुरु ज्ञानधर्म गणि हुए यथा दोहा–पाठक ज्ञानधर्म गणि, पाठक श्रीदीपचन्द । तास शिष्य देवचन्द कृत, भणता परमाणंद ।।२०।। यह दोहा प्रकरण रत्नाकर भाग प्रथम गत नयचक्र विवरण का प्रशस्तिका है ।

पूज्य श्री श्री आचार्य मुनिराजोंका स्तवन

॥ दोहा ॥

श्री पूज्य गुण वर्णन करूं सुणो सभो चितलाय ।
छऊं पाटकी लावणी, जोडी चित्त लगाय ।।१।।

श्रीहुकुममुनि महाराज हुवे अवतारी । महाराज जैनका धर्म दिपाया जी । जाने भोग

छोड़ लिया जोग रोग करमोंका मिटाया जी ॥
॥ टेर ॥ फिर दुतिय पाट शिवलाल मुनीकी थाप्या
॥ म० ॥ क्रिया उद्धार करायाजी । कियो ज्ञान
तणो उद्योत सभी कुं खोल सुणाया जी । फिर
तृतिय पाट उदेसागरजी सोहे ॥ म० ॥ सभीको
लागे प्याराजी । ज्याने चतुर्थ पाठ मुनि चोथ-
मल कुं दिया बिठाईजी ॥ श्री० ॥१॥ फिर पंचम
पाट मुनि श्रीलाल तपधारी ॥ म० ॥ तेज सूर्य
सम भारीजी । हुवे महा बड़े मुनिराज जिन्हों की
जाऊं बलिहारीजी ॥ संवत उन्नीसे साल पिचंत्तर
माहीं ॥म०॥ चैत वदी नम सुखकारी जी । रतनपुरी
मंझार पूजने चादर ओढाई जी ॥ श्री० ॥ २ ॥
चतुर विध संग मिलीने महोत्सव कीनो ॥ म० ॥
सभीके आनन्द छाया जी । देश देशके
आय जातरी उत्सव गावेजी ॥ फिर छठे पाट
मुनी जवाहिरलालजी दीपे ॥म०॥ जैनमें वल्लभ
लागेजी । ज्याने किया बहुत उद्योत भवी जीवन

कूंतारय्याजी ।।श्री०।। ३ । पंचमहाव्रतधारी परम उपकारी ।। म० ।। दोष बयालीस टालोजी । मुनि लावे सुजतो आहार । जाणे सब ही नर नारी जी ।।कल्पवृक्ष साक्षात महा मुनिगाया ।। म० ।। चिन्तामणि चिन्ता चूरेजी। ये कामधेनु सम जाण जगतमें है सुखकारीजी ।। श्री० ।। ४ ।। गुरू भाई मोतीलालजी जारी ।। म० ।। तपस्या माहे भारी जी । लालचन्दजी सन्त सभीमें हिमतधारी जी राधालालजी महाराज बहु उपकारी ।। म० ।। सताइस गुणके धारीजो । सिरदारमल श्रीचन्द उनोंका गुण कथ गाउंजी ।। श्री० ।। ५ ।। चांदमलजी मुनि वेया वचधारी ।।म० ।। सुरजमल हैं सन्तोषीजी। करे ज्ञान ध्यान उद्योत रात दिन सीखण तांईजी । शहर बीकाणे मांही आप बिराजो ।। म० ।। सभोका पुन्य सवायाजी। जो नित करे आपकी सेव उसीका वेडा पारीजी ।।श्री०।।६ ।श्री रतनचन्दजी संत साथमें लाये ।।म०।।सूरति मोहन

गारीजी । सिरेमलजी सन्त ज्ञानमें हैं भण्डारीजी।
सिमरथमलजी महाराज बड़े हैं ज्ञाता ।। म० ।।
सूत्रके है वे धारीजी। हैं पुनमचन्दजी शिष्य जिनोंकी
महिमा न्यारीजी ।। श्री० ।।७।। ठाण दस तीजोजी
महाराज बिराजे ।।म०।। जुमाजी हैं ब्रह्मचारीजी।
सिलेकंवरजी औरजेठाजी सब गुणधारीजी । इन्द्र
कंवरजी पानकंवरजी जाणो ।।म०।। ज्ञानमें हैं ले
लीनाजी । ज्याने किया ज्ञानका थोक उनोंकी
महिमा भारीजी ।।श्री०।।८।। कालकंवरजी फकी
रकंवरजी जुंजे ।।म०।। तपमें जोर लगावेजी।
ज्याने कीवी तपस्या बहुत आतमा कूंय सुधारीजी
अणचकंवर महाराज बड़ जसधारी ।। म० ।।
छोटाजी हैं गुणवन्ताजी। वाने दीवी रिद्ध छिटकाय
ध्यान प्रभुसे लगायाजी ।।श्री०।।९।। संबत उन्नीसे
साल सीतंतर मांही ।। म० ।। आपने किया चौमा-
साजी । हुआ धर्म तणा उद्योत सभी जीवों हित-
कारीजी ।। भायां बायांकी अरज आप सुण लीजो

।।म०।। अरज कूं आन गुजारीजी । कल्पे सो चौमास आप बीकाणे कीजोजी ।श्री।१०।। पहले श्रावण सुदी मासके मांई ।। म० ।। चतुरदसी तिथने गाई जी । या करी जोड सुध भाव आपका गुण मैं गावोंजी । मालु मंगलचन्द अरज करे सुण लीजो ।। म० ।। त्रिविधे शीश नमाइजी । जो भूल चूक इस मांय हुवे तो माफ करावोजी ।।श्री०।।११।इति।

।। अथ श्री सोलह सतियोंका स्तवन ।।

आदिनाथ आदि जिनवर बन्दू । सफल मनो-रथ कीजिये ए ।। प्रभात उठी मंगलिक कामे । सोलह सतीना नाम लीजिये ए ।। १ ।। बाल कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी वेनडी ए घट घट व्यापक अक्षररूपे । सोले सतीमा जेवड़ी ए ।। २ ।। बाहुवल भगिनी सती शिरोमणि । सु-न्दरिनामे ऋषभसुता ए ।। अंक स्वरूपी त्रिभुवन माहे । जेह अनूपम गुणजिताए ।। ३ ।। चन्दन बाला बालपणेथी । शियल वन्ति शुद्ध श्राविकाए ।।

उड़दना बाकला वीर प्रतिलाभ्यो । केवल लहिव्रत भाविकाए ।। ४ ।। उग्रसेन धुया धारिणी नन्दन राजमती नेम बल्लभाए ।। जोवन वयसे कामने जीत्यो । संयम लेई देव दुर्लभाए ।। ५ ।। पंच भरतारी पाण्डव नारी द्रुपद तनया बखाणीए । एक सौ आठ चीर पुराणो शीयल महिमा तास जाणो ए ।। ६ ।। दशरथ नृपनी नारि निरूपम। कौशि-ल्या कुल चन्द्रिका ए ।। शीयल सलोनी राम जनेता । पुन्यतणी प्रणालिकाए ।। ७ ।। कौशम्बिक ठामे सन्तानक नामे । राजकरे रंगराजियो ए । तसघर घरनी मृगावती सती । सुर भवने जस गाजियो ए ।। ८ ।। सुलसा साची शियल न काची राची नहीं विषय रस ए ।। मुखडा जोतां पाप पलाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए । ९।। राम रघु बंशी तेहनी कामिनी जनक सुता सीता सतो ए ।। जगसहु जाणे धीज करंता अनल शीतल थयो शियलथिए ।। १० ।। सुरनर बदित शियल अख-

ण्डित शिवा शिवपद गामिनी ए। जेहने नामे निर्मल थई ए बलिहारी तस नामनी ए ॥ ११ ॥ कांचे तन्त चालणी बान्धो । कूप थकी जल काढ़ियो ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा । चम्पा पाप उघाड़ियो ए॥ १२ ॥ हस्तिनापुरे पाण्डु रायनी । कुन्ता नामे कामिनीए ॥ पाण्डुमाता दशे दशारनी वहने पतिव्रता पद्मिनीए ॥ १३ । शील वती नामे शीलव्रत धारिणी त्रिविध तेहने वदिये ए ।। नाम जपन्ता पातक जाये दरशने दुरति निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ नीषध नगरी नल नरेन्द्रनी दमयन्ती तस गेहनी ए ॥ संकट पड़ता शीयल— जराख्यो । त्रिभुवन कीरति जेहनीए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जग जन पूजिता । पुप्फचुलाने प्रभावती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता । सोलहमी सती पद्मावती ए ।। १६ ॥ वीरे भाषी शास्त्रे साखो । उदयरतन भाखे मुदा ऐ ॥ भाणउवंता जे नर भणसे ते लेवे सुख सम्पदा ए ॥ १७॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

पूज्य श्री श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी
महाराज कृत

सुदर्शन चरित्र

॥ चौपाई ॥

धन शेठ सुदर्शन शियल शुद्ध पाली तारी आतमा ॥ टेक ॥ सिद्ध साधु को शीश नमाके, एक करूं अरदास ॥ सुदर्शन की कथा कहूँ मैं, पुरो हमारो आस ॥ धन०॥१॥ चम्पापुरी नगरी अति सुन्दर, दधी वाहन तिहा राय ॥ पटरानी अभिया अति प्यारी, रूप कला शोभाय ॥ धन० ॥२॥ तिन पुर शेठ श्रावक दृढ़ धर्मी, यथा नाम जिन दास ॥ अर्हंदासी नारी अति खासी, रूप शील गुण खास ॥ धन० ॥३॥ दास सुभग बालक अति सुन्दर, गौवें चरावन हार ॥ शेठ प्रेमसे रखे नेम से, करे साल संभार ॥ धन० ॥ ४ ॥ एक दिन जंगल में मुनि देखे, तन मन उपज्यो प्यार ॥ खड़ा

सामने ध्यान मुनिमें, विसर गया संसार ॥धन०॥ ५ ॥ गगन गये मुनिराज मंत्र पढ़, बालक घरको श्राय ॥ शेठ पूछते मुनि दर्शनके, सभी हाल सुनाय ॥ धन० ॥ ६ ॥ प्रमुदित भावे शेठ कहे धन, मुनि दर्शन ते पाया ॥ अपूर्ण मंत्रको पूर्ण करके, शुद्ध भाव सिखलाया ॥ धन० ॥ ७ ॥ शिखा मंत्र नवकार बाल जब, मनमें करता ध्यान ऊठत बैठत सोवत जागत, वस्ती और उद्यान ॥ धन० ॥ ८ ॥ एक दिन जंगलसे घर श्राता, नदिया श्राई पूर ॥ पेली तीर जानेको बालक, हुआ अति आतुर ॥ धन० ॥ ६ ॥ धरके ध्यान नवकार मंत्रका, कूद पडा जल धार ॥ खेर खूंट घुस गया उदरमें । पीड़ा हुई अपार ॥धन०॥१०॥ छोड़ा नहीं नवकार ध्यानको, तत्क्षण कर गया काल ॥ जिन दास घर नारी कुंखे, जन्मा सुन्दर लाल ॥ धन० ॥ ११ ॥ कर महोत्सव रखा नाम सुदर्शन, वर्त्या मंगलाचार ॥ घर घर रंग वधावना

सरे. पुरमें जय जयकार ॥ धन० ॥ १२ ॥ पंच धाय हुलसावे लालको, पाले विविध प्रकार ॥ चंद्र कला सम बढ़े कुंवरजी, सुन्दर अति सुकुमार ॥ धन० ॥ १३ ॥ कला वहोत्तर अल्प कालमें, सीख हुआ विद्वान ॥ प्रौढ़ पराक्रमी जान पिताने, किया व्याह विधि ठान ॥ धन० ॥१४॥ रूप कला यौवन वय सरीखी। सत्यशील धर्मवान ॥ सुदर्शन और मनोरमाकी, जोड़ी जुड़ी महान । धन० ॥ १५ ॥ श्रावक व्रत दोनोंने लीना· पौषध और पचखान ॥ शुद्ध भावसे धर्म अराधे, अढलक देवे दान ॥ धन० ॥१६॥ किया शेठने काल कुंवरने, जब पाया अधिकार ॥ पर उपकारी परदुःखहारी, निराधार आधार ॥ धन० ॥ १७ ॥ नगर शेठ पदराय प्रजा मिल, दिया गुणो दधि जान ॥ स्वकुटुम्ब सम सब की रक्षा, करते तज अभिमान ॥ धन० ॥ १८ ॥ कपिल पुरोहित विविध विद्याधर, सुदर्शनसे प्रीत । लोह चुम्बक सम मिल्या परस्पर, सरीखे सरीखी

रीति ॥ ध० ॥ १६ । पुरोहित नारी महा व्यभिचारी, कपिला कुटिल कठोर ॥ शेठ कीर्ति सुन सुन्दर तनकी, व्यापो मन्मथ जोर ॥धन०॥२०॥ पति गये परदेश शेठ पै, बोली कपट विशेष ॥ पति हमारा अति बीमारा, चलो चलो तज शेष ॥ धन० ॥ २१ ॥ प्रीति बंधाना शेठ शियाना, आया कपिला साथ ॥ अन्दर लेकर हाव भव रे, बोली मन्मथ बात ॥ धन० ॥ २२ ॥ महिषी सींगमें डांस डंक सम, लगे न इसको बोल ॥ दाव उपाय से यहांसे निकलूं, करते मनमें तोल ॥धन० ॥२३ अपछर सम तुम नारी प्यारी,मम नव यौवन काय ॥ कौन चुके ऐसे अवसरको, मिल्यो योग सुखदाय ॥ ॥ धन० ॥ २४ ॥ हतभागी हुँ मैं सुन सुभगे अन्तरायके जोर ॥ सढपना है मेरे तनमें, व्यर्थ मनोरथ तोर ॥ धन० ॥ २५ ॥ हे दुर्भागी जा दुर्भागी, धिक मैं खोई बात ॥ धिक मेरे अज्ञान पतिको, रहता तेरे साथ ॥ धन० ॥ २६ ॥ देव

गुरुकी मुझे प्रतिज्ञा, कहु न तेरो बात ॥ तुम भी निश्चय नियम करोरो, लाज मेरी तुम हाथ ।धन०। २७ । नियम कराया बाहर आया, मन पाया विश्राम ॥ बाघिनके मुखसे मृग बचके, पाया निज आराम ॥ धन० ॥ २८ ॥ लिया नियमपर घर जानेका, जहां रहती हो नार ॥ निज घर रह-के धर्म आराधे, शियल शुद्ध आधार ॥धन०॥२९॥ नृप आदेश इन्द्र उत्सवे, चले सभी पुर बाहर ॥ सज सृङ्गारी चली नृप नारी, कपिला उसकी लार ॥ धन० ॥ ३० ॥ पांच पुत्र संग मनोरमाजी, चली बैठ रथ माय ॥ कपिला निरखी अति मन हर्षी, रानीको बतलाय ॥ धन० ॥ ३१ ॥ सती सावित्री लक्ष्मी गौरीसे, अधिकी इनकी काय ॥ किस घर यह नारी सुखकारी, शोभा वरनी न जाय ॥ धन० ॥ ३२ ॥ राणी कहे सुण पुरोहि-ताणी, शेठ सुदर्शन नार ॥ सत्य शियल और नियम धर्मसे इसका शुद्ध आचार ॥ धन० ॥३३॥

मुह मचकोड़ो तनको तोड़ी, हँसी कपीला उस बार ॥ भेद पूछती अति हठ धरती, कहो हँसी प्रकार ॥ धन० ॥ ३४ ॥ नारी नपुंसकको व्यभिचारी, जन्म्या पुत्र इन पांच ॥ तुम जो बोलो शीयलवती है यही हँसीका साँच ॥ धन० ॥ ३५ ॥ कैसे जाना हाल सुनावो, कही बीतक सब बात । राणी बोली मतिमन्द तोरी, हारी सुदर्शन साथ ॥ धन० ॥ ३६ ॥ छलकर तुझको छली सुघड़ने, तू नहिं पाया भेद ॥ त्रियाचरित्रका भेदन समझी व्यर्थ हुका तुझ खेद ॥ धन० ॥३७। मुझसे जो नहि छला जायगा, वह नर सबसे शूर ॥ सुर असुर नागेन्द्र नारीसे टले स उसका नूर ॥ धन०॥ ३८ ॥ अरि मूर्खा मत वोलो ऐसी, नारी चरित जो जाने ॥ सुर असुर योगिन्द्र सिद्धको, पलक डाल वश आने ॥ धन० ॥ ३९ ॥ व्यर्थ गर्व मत धरो रानीजो, मैं सव विधि कर छानी ॥ सुदर्शन नहि चले शीलसे, यह वात लो मानी ॥ धन० ॥

४० ।। जो मैं नारी हूँ हुशियारी, सुदर्शन वश लाऊं ।। नहिं तो व्यर्थ जगतमें जी के, तुझे न मुंह दिखलाऊं ।। धन० ।।४१।। सुदर्शनको जो वश लावो, तो तुम रग चढ़ाऊं ।। नारी चरितकी पूरी नायिका, कहके मान बढ़ाऊं ।। धन० ।।४२।। करी प्रतिज्ञा हो निर्लज्जा, क्रीड़ा कर घर आई ।। धाय पंडितासे वात सुनाई, लोभसे वह ललचाई धन० ।।४३।। घाट घड़ा नाना विध जब मन, एक उपाय न आया ।। कौमुदी महोत्सव निकट आवे जब, काम करूं मन चाया ।। धन० ।।४४।। काम देवकी करी प्रतिमा, महोत्सव खूब मडाया ।। बाहिर जावे अन्दर लावे, सब जनको भरमाया ।। धन० ।।४५।। कार्तिक पूर्णिमा कौमुदी महोत्सव, नृप पुर बाहिर जावे ।। सुदर्शनजी नृप आज्ञासे पौषध व्रतको ठावे ।। धन० ।। ४६ ।। कर प्रपंच अभिया मुर्छाणी, नृप वोले युं वाणी ।। कोन उपाधि तुम तन बाधा, कहो कहो महारानी ।। धन०

॥४७॥ हुंहुंकार करे नृपनारी, शब्द न एक उचारे ॥ धाय पंडिता कपट चरित्रा, खोटी जाल पसारे ॥ धन० ॥४८॥ महाराजा तुम युद्धसिधाये राणी देव मनाये ॥ जो आवे सुखसे महाराजा, तो प्रतीति तुम पाये ॥ धन० ॥ ४९ ॥ कार्तिक पूर्णिमा महोत्सव पूरा, बिन बाहर नहिं जाऊं ॥ विसर गई ऐ नाथ साथ तुम ताके फल दरशाऊं ॥ धन० ॥ ५० ॥ आप कहो अरदास नाथ यों, माफ करो तुम देव ॥ महारानीको भेजूं महलमें करे तुम्हारी सेव ॥ धन० ॥५१॥ त्रिया चरित वश होके राजा, हाथ जोड़ सब बोला ॥ त्रिया चरित को देव न जाणे, भेद ग्रन्थने खोला ॥धन० ॥५२॥ कपट छोड़ रानी जब जागी, दासी बात बनाई ॥ भूपको भरमाई महल गई, रानी हर्ष भराई ॥ धन० ॥ ५३॥ धन्य पंडिता तव चतुराई अच्छी बात बनाई ॥ आज महल ले आवो शेठ को, जोग बना सुखदाई ॥ धन० ॥ ५४ ॥ मूर्ति

लेकर गई बाहरको पहरेदार भरमाई ॥ पौषध-
शाला शेठ सुदर्शन, मूर्ति फेंक ले आई ॥ धन० ॥
५५ ॥ पौषध मौन शेठ नहिं बोले बैठा ध्यान
लगाई । अभियाकर शृंगार शेठके, खड़ी सामने
आई ॥ धन० ॥ ५६ ॥ हाथ जोड़ अमृतसम मीठा
बोले मुखसे बोल ॥ मै रानी तुमपुर जनमानी,
सरखे सरखी जोड़ ॥ धन० ॥५७॥ कल्पवृक्ष सम
काया थारी, मैं अमृतकी बेली ॥ मौन खोल
निरखो मुझ नयना, ध्यान ढोंग दो मेली खोल
५८ ॥ करूं जतन तुम जाव जीव लग, प्राण बरो
बर मान ॥ तन धन यौवन तुम पर अर्पन, अबसे
लो यह जान ॥ धन० ॥ ५९ ॥ व्यर्थ जन्म मुझ
गया आज लग खबर न तुमरी पाई ॥ आज सु-
दिन यह हुआ शेठजी धाय पंडिता लाई ॥धन०॥
॥ ६० ॥ बोले नहिं जब शेठ रानीने, लिया नेत्र
चढ़ाई ॥ नयन बानको मारे खेंचके, पांव घुघर
घमकाई ॥ ॥धन० ॥६१॥ पहना शील सनाह शेठ

ने धीरज मनमें लाई ॥ ज्ञान खडगसे छेदे बानको, रानी गई मुरझाई ॥ धन० ॥ ६२ ॥ वर्षा ऋतुसम बनी भामिनी, अम्बर बदल बनाई ॥ हुंकारको ध्वनि गाज सम, तन दामन दमकाई ॥ धन० ॥ ॥ ६३ ॥ अमोघ धारा बचन वर्षाती, चाह भूमि भिजाई ॥ मग शैल सम शेठ सुदर्शन, भेद न न सके कोई ॥ धन० ॥ ६४ ॥ करुणा स्वरसे रोवे कामिनी, पूरो हमारी आश ॥ शरणागत मैं आई तुम्हारे, मानो मम अरदास ॥ धन० ॥६५॥ अवसर देख शेठ तब बोला, सुनो सुनो बड़ मात ॥ पंच मातमें तुम अग्रेसर, तज दो खोटी बात ॥ धन० ॥ ६६ ॥ तजदे यह तोफान सुदर्शन, मैं नहि तेरी मात । भूर्खी कपिला ते भरमाई, मुझे छला तू चाहत ॥ धन० ॥ ६७ ॥ मेरू डगे धरती धूजे सया, सूर्य करे अन्धकार ॥ तो पण शील छोडूं नहीं माता, सच्चा है निरधार ।धन० ६८। सुनकर वचन नयन कर राता, वाघिन जेम विफ-

राया ।। माने नहीं तुम मेरे वचन को, यमपुर देउ पहुंचाय ।। धन० ।। ६९ ।। बात हाथ है सुन रे बनिया, अब भी कर तू विचार ।। रूठो काल कतरनो हूँ मैं, तू ठो अमृत धार ।। धन० ।। ७० ।। महा बातसे मेरू न कंपे, अभिधासेती शेठ ।। ज्ञान वैराग्य आतमबल वलिया, मै यह सबमें जेठ ।। धन० ।।७१।। त्यागा तव शृंगार नारने,विकल करो निज काय ।। शोर करी सामन्तको तेड़े, जुल्म महलके मांय ।। धन० ।। ७२ ।। पुरजन सह नरनाथ बागमें, मुझे अकेली जान ।। महा लम्पट मुझ तनपर धाया, मैं रखा धर्म अभिमान ।।धन० ।।७३।। पुर मंडन यह शेठ सोभागी, घर अपछर सम नार ।। आवे आंक न लागे कदापि, शेठ छोड़े किम कार ।। धन० ।। ७४ ।। शोच करे सरदार रानी तब, बोली कठिन करार ।। रे रजपूत रंक होय क्यों, करते ढीलमढाल ।। धन०।।७५।। सुभट शेठ को पकड़ राय पै, लाये खास हजूर ।। देख शेठको

देह राय मन, हो गया चकनाचूर ।।धन० ।।७६।।
कंचन ऊपर कीट लगे किम, सूर्य करे अन्धकार ।।
चन्द्र आग वर्षावे तथापि, शेठ चले न लिगार ।।
धन० ।।७७।। पास बुला यों नरपति पूछे, कहो
किम बिगड़ी बात । अगर सांच मैं बात कहूँ तो,
होवे मातकी घात । धन० ।।७८।। पुण्य पाप है
किया जो मैने, वे हैं मेरे साथ।। मौन रहे नहीं
बोले शेठजी, नरपतिसे कुछ बात ।। धन० ।। ७९।।
बहुत पूछनेपर नहीं बोले, तब नृप जानो सांचो।।
आये महल निज नार देखने, वो सूता खूंटो
खांचो।। धन० ।। ८० ।। बांह पकड़ नृप बैठी कीनी
ते बोली रीस भराय ।। धिक है तुमरे राज कोप
जहां, लम्पट वणिक बसाय ।। धन० ।। ८१।। देखो
यह मम गात वणिकने, कैसे नाखे हाथ ।। शील
रख्यो मै नाथ और तो, बिगड़ी सारी बात ।धन०।
८२ ।। मैं जीवूं या शेठ जियेगा, निश्चय लेवो
जान ।।सुन नारीके वचन रायके, मनमें आई तान ।

धन० ॥ ८३ ॥ कोप करि कहे राय शेठको, देवो शूलि चढ़ाय ॥ धिक् २ नारी जाल कोय कांई, नृप को दिया फंसाय ॥ धन० ॥ ८४ ॥ सुभट शेठको पकड़ शूलिका, पहनाया शृङ्गार ॥ नगर चोवटे ऊभो करके, बोले यों ललकार ॥ धन० ॥ ८५ ॥ यों सुदर्शन शेठ नगरको, धर्मी नाम धराय ॥ पर तिरियाके पापसे सयो, शूली चढ़वा जाय ॥ धन० ८६ ॥ पड़ी नगर जब खबर लोग मिल, आये राय दरबार । राख राख महाराज शेठको, विनवे बार-म्बार ॥ धन० ॥ ८७ ॥ दाता रा सिर सहेरो सरे, पुरजन जीवन सार ॥ सुदर्शन जो चढ़े शूल तो, जीना हमें धिक्कार ॥ धन० ॥ ८८ ॥ व्योम फूल सम बात वनी यह, सेठ न मूके शील ॥ नारीवश महाराज आज मत, डालो धर्मको पील ॥ धन० ॥ ८९ ॥ झूठा मुक्का बेन जगतमें, यह सचा लो जान विध २ से मैं पूछा शेठको उखलत नहीं जवान ॥ धन० ॥ ९० ॥ चार ज्ञान चउदे पूरब धर मोह

उदय गिर जाय ॥ शेठ विचारो कौन गिनत- में यों लो चित्त समझाय ॥ धन० ॥ ६१ ॥ तुमही पूछो सेठ कहे कुछ, उस पर करें विचार । नहीं बोले तो शूली देनेका, सच्चा है निरधार ॥ धन० ॥६२॥ महा भाग तुम मुखड़े बोलो, जो है सच्ची बात ॥ बिन बोल्या से सेठ सुदर्शन, होत धर्मकी घात ॥ धन० ॥ ६३ ॥ सत्य धर्मका मर्म जानके, रह्ना मौनको धार ॥ हार खाय जन मनो- रमा की, कहा सभी निरधार ॥ धन०॥६४॥ न मुर- झाई मुर्च्छा आई, पड़ी धरणी कुमलाई ॥ पांचों पुत्र तब मा-मा करते, पड़े गोदमें आई ॥धन०॥६५॥ चेत लई चौंते जब मनमें, हुई न होवे बात ॥ शील चुके नहीं पति हमारो, नियम धर्म विख्यात ॥ धन०॥६६॥ नही निकली घर बाहर शेठानी, धीरज मनमें धार ॥ दियो बोध पांचों पुत्रन को, एक धर्म आधार ॥ धन० ॥ ६७ ॥ सत्य नमरता सुनो पुत्र तुम, झूठ न मुझे सुहाय ॥ आज शेठ

सूलीसे उगरे, तो मैं निरखूं जाय ॥ धन० ॥९८॥ धर्म रूप पतिकी पत्नी मैं, उस पर चढ़ा कलंक ॥ सूर्य ग्रसा है आज राहुने, जगमें व्याप्या पक ॥ धन० ॥९९॥ धर्मध्यान दो दान लालजी, पाप राहु टल जाय ॥ पिता तुम्हारे सुदर्शनजी, रवीरूप प्रगटाय ॥ धन० ॥१०० ॥ माता पुत्र मिल ध्यान लगाया, प्रभु तेरो आधार ॥ बन बचे आज ये पिता हमारे, होवे जय जयकार ॥ धन० ॥ १०१॥ कोई प्रशंसे कोई निन्दे, शेठ शूलीपर जाय ॥ लाखों नर रहे देख तमाशा, शेठ न मन घबराय ॥धन०॥ ॥ १०२ ॥ सागारी अनशन ब्रत लीनो पाप अठा- रह त्याग ॥ जीव खमाये शान्ति भावसे, द्वेष न किसमें राग ॥ धन०॥१०३॥ महा योगेश्वर धरे ध्यान त्यों, जिन मुद्राको धार ॥ ध्यान धरे नवकार मन्त्रका, और न कोई विचार ॥ धन० ॥ १०४ ॥ इसी मन्त्रके ध्यान शेठने, तजे पूर्व भव प्राण ॥ डिगे देव सिंहासन उससे, महिमा मन्त्र की जान

॥धन० ॥ १०५॥ शील सत्य अरु दया साधना, लगी मन्त्रके साथ ॥ हिए हुलसते देव गगनमें, आये जोड़े हाथ ॥ धन० ॥ १०६ ॥ सुभट शेठको धरे शूलीपर, हाहाकारका नाद ॥ शूली स्थान पै हुका सिंहासन, बजे दुन्दुभी नाद ॥धन० ॥ १०७॥ छत्र धरे और चामर विजे, वर्षे कुसुमा धार ॥ ध्वजा उड़त है वीज्या जयन्ती, सुर बोले जयकार ॥ धन० ॥ १०८ ॥ मनमें सोचे शेठ सुदर्शन, शीलवन्त शिरताज ॥ धिक् धिक् है अभिया रानी को, निपट गमाई लाज ॥ धन० ॥ १०९ ॥ जग जन मुखते करते कीर्ति, गई रायके पास ॥ दधि-वाहन नृप आया दौड़के, धर मनमें हुल्लास ॥ धन० ॥ ११० ॥ खमो खमो अपराध हमारा, बार बार महा भाग ॥ धर्म मर्म नहीं जाना तुम्हारा, नारी चाले लाग ॥ धन० ॥१११ ॥ सुनी बात जब मनोरमाने, पुलकित अंगन माय ॥ पांच पुत्र संग पति दर्शनको, शीघ्र चाल कर आय ॥धन०।११२॥

राय प्रजा मिल पतिव्रताको, सिंहासन बैठाय
दम्पति जोड़ा देख देव नर, मनमें अति हर्षाय ॥
॥ धन० ॥ ११३ ॥ जय जय हो सुदर्शन शेठको,
जय मनोरमा मात ॥ धर्म तीर्थको जुड़ी जातरा,
पुरजन बहु हर्षात ॥ धन० ॥ ११४ ॥ शाह घरे
सब आये बधाये, मोती चौक पुराय ॥ देव गये
निज स्थान रायजो बोले मंगल वाय ।धन०।११५॥
धर्म मंडना पाप खंडना, तुम चरणे सुपशाय ॥
हुई न होवे इस जग माँहि, सब जन साख पुराय
॥ धन० ॥ ११६ ॥ नहीं चीज जगमें कोइ ऐसी,
चरन चढ़ाऊं लाइ ॥ तथापि मुझ पै मेहर करीने,
मांगो तुम हुलसाइ ॥ धन० ॥ ११७ ॥ राय तुम्हारे
रहते राजमें, मिला धर्मका सहाय ॥ और कामना
मुझे न कुछ भी, माता साता पाय ।।धन०।।११८॥
सुनी शेठक बैन सभी जन, अचरज अधिको पाय ।
शत्रुको समभाव दिखाया, महिमा वर्णीन जाय ॥
धन० ॥ ११९ ॥ एक सभासद कहता सुनिये, शेठ

गुणोंकी खान ।। नम्र भाव और दया भावसे सबका रखता मान ।। धन० ।। १२० ।। जो अपनेको लघु समझता, वो ही सबमें महान ।। गुरुता की अकडाइ रखता, वो सबमें नादान ।। धन० । १२१।। स्वारथ रत हो करें नम्रता, यही कुटिल को बान ।। बिना स्वार्थही करे नम्रता, सज्जन जन गुणवान ।। धन० ।। १२२ ।। यदपि रानी महा अभानी, कीना महा अकाज ।। तथापि शेठ तुम्हारे खातिर, अभय देऊंगा आज ।।धन०।।१२३।। सुनी बात अभिया हुई सभिया, पापका यह परिणाम ।। गले फांस ले तजे प्राणको, गमाया अपना नाम ।।धन०।।१२४।। धाय प्राण ले भगी महल से, पटना पहुंची जाय ।। वेश्या घरमें नीच भावसे, रहके उदर भराय ।। धन०।।१२५।। अवसर देख शेठ मन दृढ़ कर, लीनो संयम भार ।। उग्र विहार विचरतां आया, पटना शहर मजार ।। धन० ।। १२६ ।। देख मुनिको धाय-पंडिता, मन में लाई रोष ।। हीरनी वेश्या करी

समीक्षा वहकाई भर जोष ।। धन० ।। १२७ ।। कलाकुशल जबहो तुम जानु, इससे बिलसो भोग। ऐसा नर नहीं इस दुनिया में, रूप कला गुन योग ।। धन० ।। १२८ ।। बनी कपट श्राविका वेश्या, मुनि भिक्षा को आया ।। अन्दर ले के तीन दिवस तक, नाना विधि ललचाया ।। धनन ।। १२९ ध्यान ध्रुव जब रह्या मुनीश्वर, वेश्या तज अभिमान ।। बन्दर कर मुनीजीको छोड़े, बनमें टाया ध्यान ।। धन० ।। १३० ।। अभियाव्यंतरी आय मुनिको, बहुत किया उपसर्ग ।। प्रतिकूल अनुकूल रीतिसे, अहो कर्मका वर्ग ।। धन० ।। १३१ ।। मुनि रंगमें रंगी गणीका, पाई सम्यक् ज्ञान ।। शुद्ध हृदयसे कृतपापों का पश्चाताप महान धन० ।। १३२ ।। धाय पंडितासे कहती वेश्या, मुनि गुण अपरम्पार ।। दम्भ मोह अब हटा है मेरा, पाई तत्वका सार ।। धन० ।। ।। १३३ ।। अब ऐसा शृंगार सजूंगी, तज आभूषण भार ।। सोना चांदी हीरा मोतीका, लूंगी नहीं

आधार ।। धन० ।।१३४ । कज्जल टीकी पान तजूंगी मेंहदी प्रेम हटाय ।। सत्य प्रेमके रंगमें रगंकर, दिल मुनीजी में लगाय ।। धन० ।।१३५ ।। जग-तारक जिस पथसे गये है, लूंगी धुली उठाय ।। तन पे मलके पावन बनके, सज्ज करूंगी काय ।। धन० । १३६ ।। मुनि विरहमें आंसु बहाऊं, येही मुक्ताहार ।। ऐसी सजीली बनके रंगीली, पाऊं भव जल पार ।। धन० ।। १३७ ।। सम्यक सहन किया मुनिजीने, धरतां शुकल ध्यान ।। क्षपकश्रेणी मोह नाश कर पाया केवल ज्ञान ।। धन० । १३८ आये देवता महोत्सव करने, करते जय जयकार ।। देवे देश ना प्रभु सुदर्शन, भवी जीव हितकार ।। धन० ।। १३९ ।। सुलट गई अभियाव्यंतरी भी, पाई सम्यक ज्ञान ।। छुरी छेदने गई पारसको, कनक रूप हुई जान ।। धन० ।। १४० ।। हाथ जोड़ वन्दना कर बोले, धन्य धर्म अवतार ।। खमो-खमो अपराध हमारा, मैं दुर्भागन नार ।। धन० ।।१४१।।

नीचोंमें अति नीच कर्ममें, कीना पातिक पूर ।। दिया दूख मैंने महामुनिको, कर कर कर्म करूर ।। धन० ।।१४२।। मंगल गावे देवी देवता, मुनि गुन अपरंपार ।। महा पातकी सुधरी व्यन्तरी, पाई समकित सार ।। धन० ।। १४३ ।। ग्राम नगर पुर पाटन विचरत, किया धर्म उद्धार ।। भव जीव उद्धार मुनिजी, पहुंचे मोक्ष मुजार ।।धन०।।१४४।।

१९८० संवत्सरे घाटकोपरे चातुर्मास्ये

पूज्य श्री जवाहिराचार्येण निर्मितमिदं चरित्रं

।। समाप्तम् ।।

चौवीसी लावणी ।

अरिहन्त सिद्ध आचार्य्य उपाध्याय, साधु समरणा, तीर्थंकर रतनारी माला सुमरण नित्य करणा ।। समरिये माला मेरी जान समरिये ।। ज्यों कटे कर्मका जाला, ए जीवतणा रखवाला, ध्यान तीर्थंकरका धरना रे ।।ध्यान०।। पांच पद चौवीस जिणन्दका, नित्य लीजे सरणा ।।१।। ए आंकड़ी ।।

श्रीऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, अति आ-नन्द करना। सुमति पद्म सुपार्श्व चन्द्रप्रभ, दास रहूं चरणा। चरण नित्य बन्दू मेरी जान चरण नित्य बन्दू।। ज्यों कटे कर्मका फन्दा, तुम तजो जगतका धन्दा, दीठा होय नयन अमी तो ठरनारे।।दीठा०।। पाँच पद०।।२।। सुविधि शीतल श्रेयाँस वासुपूज्य हृदय माहे धरना।। विमल अनन्त धर्मनाथ शान्ति जी दास रहूँ चरणा।। जिनन्द मोहि तारो, मेरी जान जिनन्द मोहि तारो।। संसार लगे मोहिखारो वैराग्य लगो मोहि प्यारो, मैं सदा दास चरणारो, नाथ जी अब कृपा करणारे।।नाथ०।। पांच पद० ।।३।। कुन्थु और मल्लि मुनिसुव्रतजो, प्रभु तारण तरणा।। नमि नेम पार्श्व महावीरजी, पाप परा हरणा।। तरे भव्य प्राणी मेरी जान तरे भव प्राणी। संसार समुद्र जाणो, सुणो सूत्र सिद्धान्तकी वाणी, पाप कर्मसे अब तो डरणारे।।पाप०।। पांच पद०। ।।४।। इग्याराजो गणधर विहरमान वान्द्याशु मिटे